श्री वीतरागाय नमः

श्री आराधनासार कथाकोष प्रारम्भः

मंगलाचरण ॥ सवैया तेईसा

श्री अरिहंत जिनेश्वर जी, इस ग्रंथ की आदि सु मंगल दाई
लोक अलोक प्रकाशक देव, समोश्रृत आदिक ऋधि लहाई ।
ज्ञान सुभान उद्योत कियो, भवि वारिज वृंद दिए विकसाई ।
ऐसे प्रभु जग तारण हार, नमूं कर जोरके हूजे सहाई ॥ १ ॥

श्री सारदा स्तुति । छप्पय छंद

प्रभु आननते खिरी प्रथम गणधर ने धारी । कीने तत्व प्रकाश भविक जन आनंद कारी ॥ ज्ञान उदधि के पार भए जेतेजग मांही । ते तुमरे परसाद और कोऊ हूजो नाहीं ॥ ऐसी माता सरस्वती, दुरनय सकस विनाशनी । मैं नमन करूं कर जोड़ कर, जिन हिरदे की बासनी ॥ २ ॥

श्री गुरु स्तुति । सवैया इकतीसा ।

तपके करैया मुनि नाथजे नगन काय, ज्ञान के समुद्र बुध आकर अपार हैं । सम्यक दरश ज्ञान चारित उद्योतवान, ताकर पवित्र भए जग मांही सार हैं ॥ बाइस परीषह जोर तासके सहनहार, ध्यान में सुमेरुसम करम निवार हैं । ऐसे गुरु पाय नमुं बार बार सीस नाय, हुजिये सहाय आप दयाके भंडार हैं ॥ ३ ॥

दोहा

आप्त शास्त्र गुरु तीन यह, सुख कारन दुख हर्न ।
तातें इनही को करूं, प्रथम मंगलाचर्न ॥ ४ ॥
ग्रंथ सार अराधना, कथाकोष सुख दाय ।

ताको भाषा करतहूं, तुच्छ बुद्धि को पाय ॥ ५ ॥
देव धर्म गुरु तीन यह, दें मन वांछित दान ।
ग्रंथ कथा शोभित करूं, मंदिर कलश समान ॥ ६ ॥

चौपाई

मूल संघ में भए महान । गछ सरस्वती तिन को जान ॥
गण बलातकोर रमणीस । कुंद कुंद आचारज ईस ॥ ७ ॥
तिन के वंश विषय वे भए । प्रभाचंद्र आचारज कहै ॥
इंद्र चंद्र रवि नितप्रति आय । तिनके चरणकमल नितधाय ॥८॥
ऐसे प्रभाचद्र गुण लीन । तिन भाषी यह कथा प्रवीन ॥
तिसही के अनुसारगुणराण । श्री मलभूषण के शिष जान ॥ ९ ॥
ब्रम्ह नेमदत्त नाम मुनिंद । श्लोकन में कियो प्रबंद ॥
जैसे सूरज करत प्रकाश । तब सब बिचरत सहितहुलास ॥ १० ॥
श्री जिन सूत्र तनेअनुसार । आराधन को कथन अपार ॥
भाषो भविजन के हितहेत । अथवा मोक्षु महाफल देत ॥ ११ ॥
पूरब आचारजबड़ भाग । कहते आए धर अनुराग ॥
सो अराधना इह बरणई । ताकी महिमा सुनिये सही ॥ १२ ॥
सम्यक दर्शन ज्ञानचरित्र । तप मिल चारों महा पवित्र ॥
एही आराधन गुणराश । जगत भ्रमण को करताबिनाश ॥१३॥
इनको कीजे नित्य उद्योत । उद्यम निरबाहन जश पोत ॥
साधन और समापत कर्न । इनके हेतु सुनो दुख हर्न ॥ १४ ॥

दोहा

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, इनको करत उद्योत ।
सोई उज्जवणां कहो, निश्चय कर यह होय ॥१५॥
निश्चय कर आराधना, कर सो अंगीकार ।
आलश वर्जित होयके, सो सुभ्क बर्णन धार ॥१६॥

इन आराधन के विषय, कारन विघन मिलाय।
बाधा सहकार थिर रहै, निर्व्वहणं सुकहाय ॥१७॥

पद्धड़ी छन्द

तत्वारथ शास्त्र पढ़ै महान। वर्जन सुराग सम्यक्त वान।
तामें चितकी थिरता गहंत। सोई साधन भाषो महंत ॥१८॥
जब लग जीवै जगके मझार। चारों आराधन रतन सार॥
निर्विघ्न सुपालै शुद्ध योग। परग्मण नाम यह है मनोग ॥१९॥
ऐसे यह पंच प्रकार भेद। जिन पालो तिन जगकोउछेद॥
भाषत आए श्रीगुरु दयाल। ताही क्रमकर बरणो रशाल ॥२०॥

अथ सम्यक उद्योत में श्रीपात्रकेशरी की

कथा प्रारम्भः नं० १

दोहा

पात्र केशरी जी भए, विप्र महा बुधिधार।
दर्शन को उद्योत जिन, कीनो जगत मझार ॥२१॥
तिनकी कथा सुहावनी, सम्यक दर्शन हेत।
पहिले ही बर्णन करूं, भव दधि तारन सेत ॥२२॥

चौपाई

यहही भरत क्षेत्र शुभ जान। तामधि देश अनेक महान॥
तेन मधि सम्पतिको भंडार। मागध नामा देश निहार ॥२३॥
श्रीजिनवर के पंच कल्याण। अतिशय कर शोभित तिहथान॥
भव जीवनके सुख को योग। अहच्छत नामा नगर मनोग ।२४।
तस नगरी को है भूपाल। अवनिपाल नामा अरशाल॥
राज कलामें निपुण उदार। देत दान सो विविध प्रकार ॥२५॥
बिप्र पांचसै नित प्राति आय। तिनसे गोष्टि करै नर राय॥

कैसे हैं वह विप्र सुजान । वेद तनो बहु करैं बखान ॥ २६ ॥
अरु कुल गर्भ धरैं अधिकाय । पंडित ताको मद बहु भाय ॥
प्रात समय अरु संध्या काल । हरष धारकर विप्र रसाल ॥२७॥
जगत पूज्य श्रीजिनवर धाम । ता नगरी में है अभिराम ॥
श्री पारश परमेश्वर तनी। प्रतिमा तहँ राजत छवि घनी ॥२८॥
तहां विप्र यह नितप्रीति जाय । ताहि देख फिर निजग्रहआय ॥
अपने अपने कर्म संभ्कार । सबही तिष्टत आनन्द धार ॥ २९ ॥
इक दिन विप्रन को समुदाय । सन्ध्या बन्दन को हरषाय ॥
आये श्रीपारश के धाम । मनमें कौतुक धरैं ललाम ॥ ३० ॥
तहां प्रभु के दर्शन हेत । आए हूते मुनि जग सेत ॥
चारित भूषण नाम सुजान । जिनवर आगे स्तुति ठान ॥३१॥
देवागम स्तोत्र मनोग । पढ़ो सुमुनिवर ने धर जोग ॥
तिनको पढ़ते लख तिथवार । सब विप्रन मैं है सिरदार ॥३२॥
ऐसो पात्रकेशरी सोय । पूछत चित में हरषित होय ॥
हो स्वामिन इह पाठ अपार । तुम जानत हो अर्थ विचार ॥३३॥
तब मुनिवर बोले गुण खान । मैं नहिं जानूं अर्थ बखान ॥
फिर वह विप्र महा बड़भाग । कहत भयो सोधर अनुराग ॥३४॥
हो मुनि नायक किरपा धार । फेर पढ़ो याको इकबार ॥
तब वे श्रीगुरु दीन दयाल। सत पुरुषनको करत निहाल ॥३५॥
शुद्ध पाट को करो उचार । पात्र केशरी हिरदे धार ॥
इक संधी इक विप्र महंत । चितमैं अर्थ बिचार करंत ॥ ३६ ॥
करत करत ताही छिन सोय । दर्शन मोह क्षयोपशम होय ॥
तातें यह विचार मन ठयो । श्रीजिनवर ने जो बरनयो ॥३७॥
जीवाजीव आदि जे तत्व । तेही निश्चय हैं जग सत्व ॥
और प्रकार कदापि न होय । ऐसी सरधा आई सोय ॥ ३८ ॥

दोहा

ऐसे करत विचार बहु, पात्रकेशरी नाम।
बुद्धिवान बहु चतुर सो, आयो अपने धाम ॥३९॥
रात्रि विषय चिंता भई, अर्थ विषय चित ठान।
जिनवर सासन में कही, तत्वादिक परमान ॥४०॥
जो लच्चण अनुमान को, सो ऐसी विधि होय ॥
ऐसी संशय मनभयो, तिष्ठत तामें सोय ॥ ४१ ॥

कुसुमलता छन्द

तबही निज आसन कंपनते, पद्मावत देवी तहँ आय।
आनंद सहित बचन इम भाषै, सुनो विप्र तुम चित्त लगाय ॥
तू बुधि आकर है निश्चय कर, प्रातकाल जिन मंदिर धाय।
प्रभु की सूरत के देखनते, तेरो संशय सब मिटजाय ॥४२॥

दोहा

ऐसा कह देवी तबै, जिन मंदिर में आय ॥
पारस प्रभु के फण विषै, लिखत भई यह भाय ॥४३॥

श्लोक

अन्यथानुप-पन्नत्वं यत्र यत्र त्रयेणकिं।
नान्यथानुप पन्नत्वं यत्र यत्र त्रयेणकिं ॥४४॥

दोहा

यह लच्चण अनुमान को, संशय मेटन हार ॥
श्लोक एक में लिख गई, अपने धाम मझार ॥४५॥

पद्धड़ी छन्द

देवी दर्शन करके महान। बहु भयो विप्र के हर्ष आन ॥
प्रभु के मतमें तब चित लगाय। सरधान करो अति हर्ष पाय ४६
एही मत जगते करत पार। एही सुख दाता जग मझार ॥

ऐसे इन रैन व्यतीत कीन। फिर प्रातकाल उठयो प्रवीन ॥४७॥
श्रीपारस धाम गयो तुरंत। फरा मंडप देखो हरषवंत ॥
ताते अनुमान तनो विचार। देखतही संशय सब प्रहार ॥४८॥
जैसे जब भानु उद्योत होय। तमको तब लेस रहैं न कोय।
ऐसे इस हिरदे वीच आन। उपजो सम्यक्त महा निधान ॥५०॥
तब यह द्विज उत्तम धर्म लीन। रोमांचित तन अतिही प्रवीन।
मन मांहि एम कीनो विचार। निर्दोष देव अरिहंतसार ॥५०॥
संसार जलध ते तार देत। इनहीको नमिये मोक्ष हेत ॥
इन कथित धर्म सोई पवित्र। दोउ लोक विषै सुख दे विचित्र ॥५१॥

दोहा

बारहि बार विचार इम, तत्वन में चित लाय ॥
हर्ष सहित परसन्न मुख, तिष्ठो बहु सुख थाय ॥५२॥

चौपाई

और विप्र आए इस पाश। कहत भए इम बचन प्रकाश ॥
हो द्विज उत्तम तुम बुद्धिवान। तज मीमांसक मत किम जान ॥
जैन धर्म में दीखत लीन। को कारण तुम कहो प्रवीन ॥
इम बच बेद गरभ युत सुने। पात्रकेशरी उत्तर भने ॥५४॥
हे विप्रो तुम सुनो पुरान। सो सबही मिथ्या कर जान ॥
जैन धर्म उत्तम यह सार। मिथ्या डूबे जगत मझार ॥ ४५ ॥
इसही कारण ते तुम वीर। गहो धर्म जिनवर को धीर ॥
और कुमारग तजो तुरंत। जो देवै है कष्ट अनंत ॥ ५६ ॥
फेर गए राजा के पास पात्रकेशरी धर हुल्लास ॥
जितने विप्र सुमद युत वहां। तिनते बाद कियो तिन तहां ॥५७॥
अनेकांत मतके अनुसार। सबही जीते छनक मझार ॥
भगवत धर्म जो सुख की रास। तास अरथ को कियो प्रकाश ५८

सम्यक रत्न जगत में सार। ताके गुण हैं बहु विस्तार ॥
अरु जो मिथ्यामत बहुभाय। तिसको नाश कियो हरषाय ॥५६॥

दोहा

अब निपाल नरनाथ जो, पंडित आदि महान।
पात्रकेशरी के निकट, करत भए सरधान ॥६०॥
मिथ्यामत सब ही तजो, जिनमत में चित लाय।
शुध सम्यक हिरदे धरो, सुरग सुकति सुख दाय ॥६२॥

सोरठा

जिनवर धर्म महान, बहु जीवन हिरदे गह्यो।
ऐसे स्तुति ठान, पात्रकेशरी विप्र की ॥ ६३ ॥

चौपाई

औ दुज उत्तम तुम जगसार। जैन धर्म में निपुण उदार ॥
तुमही सब तत्वन को भेद। जानत हो सब कर्म उछेद ॥ ६३ ॥
तुम ही जिनपद कंज महान। तिन को सेवत भ्रमर समान ॥
इस प्रकार स्तुति बच ठए। फेर भक्ततें पूछत भए ॥ ६४ ॥
ऐसे पात्र केशरी सोय। राजादिक कर पूजित होय ॥
दर्शन को उद्योत कराय। ताकर महिमा जग में पाय ॥ ६५ ॥
सो कैसो सम्यक परधान। अति पवित्र सुर शिव सुख दान ॥
और भव्य जेहैं जगमांहि। ते सम्यक उद्योत करांहि ॥ ६६ ॥
तिनके निर्मल जसबहुभाय। जगत मांहि फैलै अधिकाय ॥
सुरग सुकत की प्रापति होय। यामें संशय नाही कोय ॥ ६७ ॥

सवैया इकतीसा

ग्रंथ के करन हार श्रावक कवि मांहि सार, ब्रम्हनेमिदत्त नाम ज्ञान सुख दाई है। इंद कुंद क्षीरसम कीरत उजास जाकी, कुंद कुंद बंश मांहि कीरति बढ़ाई है॥ नाम मल्लभूषण आचारज

गुरुमहान, ताके श्रुतसागर जो भए गुरु भाई हैं। तिनके आदेशते पवित्र सिंह नंदनाथ, मुनिके निकट कथा जोड़के बनाई है।६८।

सोरठा

तिसही के अनुसार, अर्थ लेय ताको अबै।
कीने छन्द उचार, बखतावर अरु रतन ने ॥ ६९ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै सम्यक्त उद्योत में पात्रकेशरी की कथा समाप्तः ॥

श्री अकलंक देवकी कथा

नं० २ मंगलाचरण काव्य

नमूं देव अरिहंत सर्व जीवन सुखदायक। भव दधि तारन पोत प्रगट तिनके हैं नायक ॥ ज्ञान उद्योत जिन कियो कथा तिनकी रस मंडन। बरनूं श्री अकलंक भए जग परमत खंडन ॥ १ ॥

चौपाई

एही भरत क्षेत्र सुखदाय। तामें नगर बसै बहु भाय ॥
तिन नगरन में सेठ बखान। मान्यखेट इक नगर महान ॥२॥
ताको नरपति है शुभ तुंग। जाकी कीरति प्रगट उतंग ॥
तिस मंत्री पुरुषोत्तम नाम। पदमावति नारी तिस धाम ॥३॥
तिनके जुत सुत प्रगटे आय। सब जन प्यारे गुण अधिकाय ॥
श्री अकंलक प्रथम बरनयो। दूजो निःकलंक सुत थयो ॥ ४ ॥
एक दिना नन्दीश्वर पर्व। उत्सव जिन ग्रह कीनो सर्व ॥
तहँ मुनिवर रवि गुप्त उदार। आप विराजे भव हितकार ॥५॥
हर्ष सहित मंत्री तहँ आय। भक्ति धार बहु नमन कराय ॥
अष्ट दिनन को धारो वृत्त। ब्रह्मचर्य नामा सुपवित्त ॥ ६ ॥
फिर कौतुहल चित में धार। मुनिवर निकट सुएम उचार।
तुम भी पुत्र शील वृत गहो। तब उन औरें कर सुख लहो ॥७॥

कितने दिन बीते सुख लीन । फिर मंत्री उद्यम यह कीन ॥
सुत विवाह करनो चितधार । आरम्भ कीनो बिविध प्रकार ॥८॥
इम लखकर दोनों सुत एह । बोले इम बच सुन्दर देह ॥
अहो तात इह आरम्भ सबै । किस कारन तुम कीनो अबै ॥९॥
ऐसे बच सुन बोले तात । तुम विवाह करनो अब दात ॥
फिर दोनो भाषे गुणवान । इस विवाहकर क्या बुधवान ॥१०॥
तुमने तो श्रीगुरु ढिग कही । ब्रह्मचर्य धारो सुत सही ॥
तब हम धारो शील महान । तुम संदेह न चित में आन ॥११॥

दोहा

ऐसे बच सुन सुतन के, बोले तब इन तात ।
क्रीड़ा करके शील की, भाषीथी में बात ॥ १२ ॥
फिर दोनो यह चतुर अति, बोले मधुरी बान ।
धर्म काजमें तातजी, क्रीड़ा कैसी जान ॥ १३ ॥

चौपाई

तब मंत्री बोलो इम बान । अहो पुत्र तुमहो बुधिवान ।
मैं जो बृत दिलवायो सार । अष्ट दिननके नेम बिचार ॥ १४ ॥
फिर दोनो बोले इम चई । हमसे तुममरजाद नकही ।
तुमने अरु श्रीगुरुने जोय । बृत दीनो हम पाले सोय ॥ १५ ॥
इस भवमें बिवाहको नेम । शील बृत्त पालें धरप्रेम ।
ऐसो कह ग्रह कारज त्याग । बौद्ध शास्त्र पढ़ियो बड़भाग ॥ १६ ॥
मान्याखेट नगरमें सोय । बौद्ध तनो पंडित नहि कोय ।
तब विद्या जाननको संत । मूरखसिखवे चले तुरंत ॥ १७ ॥
चलत चलत यह पहुंचे तहां । बौद्ध मतनके मठहैं जहां ।
बंधक गुरु तहँ है परधान । धर्माचारज नाम कहान ॥ १८ ॥
ताढिग तिष्टे यह जुग जाय । बौद्ध मार्ग जानन चित चाय ।

धर्माचारज मन इमठान । इनको तवै विजाती जान ॥ १९ ॥
उतरन हेत दियो सुख खान । ऊंची भूम विषै अस्थान ।
इन दोनो को नित प्रतिसार । शास्त्र पढ़ावे बारम्बार ॥ २० ॥
यहतो जैनधर्म चितआन । मूरख बनकर पढ़ें अजान ।
गुरु इनको जाने बुधहीन । अंतरंग यह महा प्रवीन ॥ २१ ॥

दोहा

इक संधी अकलंकजी, पढ़कर भए प्रवीन ।
द्वै संधी निःकलंकजी, भए सुविद्या लीन ॥ २२ ॥

अडिल्ल

धर्माचारज एकदिना पढ़तो सही । सप्तभंग बानी जैसी जिनवर-कही ताको अर्थ विचारत मन संशय भयो । गूढ़ शब्दको अर्थ न चितमें तिन लियो ॥ २३ ॥ तिह थानक प्रस्ताव राख तबही गयो । तत्र समय अकलंक अर्थ सब लिख दियो ॥ बौद्ध गुरू तब आय सु पुस्तक देखियो । अर्थ शुद्ध तिस मांहि लिखो सो पेखियो ॥ २४ ॥

दोहा

बौध गुरू चित चिंतवै, निश्चयकर यों होय ।
जैन उदधिको चंद्रसम, इन शिष्यनमें कोय ॥ २५ ॥
हम मत बिधंवसी जुनर, बौध भेष इस ठान ।
मायाकरके पढ़तहै, हतनो ताहि ललाम ॥ २६ ॥

चौपाई

धर्माचारज मन इम ठान । सोधे सब शिष्यन के थान ।
तिनमें जैन शिष्य नाहि पाय । फिर मनमें इम कियो उपाय ॥ २७ ॥
श्री जिनेंद्रके विम्ब मंगाय । निश्चय हेत धरो तिहठाय ।
सब शिष्यन को आज्ञादई । याहि उलंघो तुम अवसही ॥ २८ ॥

तब अकलंक देव गुण राश । अपनी चतुराई परकाश ।
भले सूत्रके जानन हार । ऐसे मनमें करत विचार ॥ २९ ॥
डोरो एक सूतको लियो । प्रतिमाके मस्तक धर दियो ।
तास उलंघन कीनो जहां । इनको भेद न जानो तहां ॥ ३० ॥
धर्माचारज चिंता लही । फिर उपाय इम कीनो सही ।
कांशी के भाजन मंगवाय । शूनन मध्य धरे अधिकाय ॥ ३१ ॥
अर इक इक चाकर बुधिवान । एक एक शिष्यनके थान ।
राखे जैनी जानन हेत । रैन समय वह रहे सुचेत ॥ ३२ ॥
धर्माचारज शून मंगाय । अर्ध रात्रि पटकी दुखदाय ॥
ज्यों नभमें बिजुलको सोर । त्योंही शब्द भयो अतिजोर ॥ ३३ ॥
तब सब शिष्य भए भयवान । बौद्ध गुरू को कीनोध्यान ॥
अर यह दोनों वीर उदार । नमोकार मुखते उच्चार ॥ ३४ ॥
जे चाकरथे इन ढिगरात । तिननें पकड़ लिए दोउ भ्रात ।
धर्माचारजके ढिग लाय । ऐसे बैन कहे उमगाय ॥ ३५ ॥
अहो देव यह जैनी दोय । दगाबाज अति लंपट सोय ।
जो अब आज्ञा हम को होय । सोई करैं ढील नहि कोय ॥ ३६ ॥

दोहा

ऐसेसुनकर दुष्ट गुरु, कहत भयो समझाय ।
महलतने खन सातवें, इनको दो बैठाय ॥ ३७ ॥
बीते आधी रात जब, तब इनको दोमार ।
ऐसी सुन चर लेगयो, तिसही थान मझार ॥ ३८ ॥

चाल छन्द

तिस थानक तिष्ठे जाई । मन संशय बहुत कराई ॥
निकलंक देव लघु भाई । तब ऐसे वचनकहाई ॥ ३९ ॥
मो भ्रातातुम सुनलीजे । मो बचन विषै चितदीजे ॥

हम दोनो गुण उपजायो। सो कोई काम न आयो ॥ ४० ॥
दर्शन उद्योत प्रवीना। हम अवनीपै नहि कीना।
अब वृथा मरण सो होई। यामें संशय नहि कोई ॥ ४१ ॥
ऐसे बच सुन तिहबारा। बोले अकलंक उदारा
भो बुद्धिमान सुन भ्राता। मत सोच करो दुखदाता ॥ ४२ ॥
अब कोई जतन बिचारैं। तातें यह दुख निरवारैं ॥
यह छत्र धरो इस ठाई। तामें तिष्टे दोउ भाई ॥ ४३ ॥
पृथ्वी थल पै गिरजावैं। फिर और थान उठ धावैं ॥
ऐसे बिचार चित ठानो। वाहीं विधि कियो पयानो ॥ ४४ ॥

दोहा

छत्र बैठ दोउ भ्रात तब, गिरे जु अवनि मझार।
तिस थानक को छोड़कर, चलत भए तिहबार ॥ ४५ ॥
तबही मारन हेत नर, अति पापिष्ट सुआय।
ते थानक देखे नहीं, तब ढूंडे बहु भाय ॥ ४६ ॥
नगर कूप बन बापिका, हेरो सकल बजार।
कहीं न पाये भ्रात जुग, तब यह करो बिचार ॥ ४७ ॥
वे पापिष्ट अयान अति, ह्वै बाजी असवार।
दशों दिशा हेरत चले, इन पीछे ततकार ॥ ४८ ॥

सोरठा

जैसे दया सुबेल, दाहन को जिमि क्रोधनल ॥
तैसे करले सेल, ते पापी पीछे लगे ॥ ४९ ॥

पद्धड़ी छन्द

तब निःकलंक उर धार एम। बच भाषे भ्राता ते सो जेम।
पीछेते चर आवत सुधाय। तिन घोटककी रज हम लखाय ॥ ५० ॥
यह पापी हमरे हतन हेत। आवतहैं जलदी जिम परेत ॥

तातें तुम पंडित चतुर सार। इक संधी बुद्ध धरो अपार ॥५१॥
अरु सम्यक दर्शन को उद्योत। तुमही ते इस जगमें सुहोत ॥
तातें यह कमलन जुत तड़ाग। तामें छिपजावो आप भाग ॥५२॥
अरु मैं जावत हूं मग मझार। मो मारेंगे निश्चय अवार ॥
ऐसे बच सुन अकलंक देव। हिरदे दुख धारो बहुत भेव ॥५३॥
पीछे सरवर में आप जाय। शिर कमल पत्र नीचे छिपाय ॥
मानोजिनवर की सरन लीन। चित सम्यकदर्श धरो प्रवीन ।५४।
तब निःकलंक भागो सुबीर। इक धोवै कपड़े रजक नीर ॥
इनको भागत देखो तुरंत। पीछे ते रज उठती लखंत ॥५५॥
तब धोबी चित मांही डरात। पूछी इन सूं क्या है सुभ्रात ॥
तब निःकलंक इम बच सुनाय। यह शत्रु सैन पहुंची सुआय ॥५६॥
जिसको मगमें देखे अयान। तिसही जनके यह हनत प्रान ॥
तातें मैं शीघ्र चलो अबार। तब धोबी भागो इन सुलार ॥५७॥

दोहा

तब यह पापी आन कर, हनत भए इन प्रान ॥
दोनों के सिर काटले, गए सो अपने थान॥ ५८ ॥
जे नर हैं इस लोक में, पाप विषै अति दत्त ॥
क्या क्या अघ नहिं करत हैं, सबही करैं प्रत्यच्छ ।५९।

चौपाई

कैसे हैं पापी मत हीन। जैन धर्म कर रहित मलीन ॥
मिथ्या विष कर सहित कुचील। लोभी हिरदे धरैं न शील ॥६०॥
जिनवर धर्म सदा सुखकार। तिष्ठत जिनके चित नलगार ॥
तिनके दया कहां ते होय, लेश मात्र जानो नहि कोय ॥६१॥
ता पीछे अकलंक सुदेव। तज सरवर चाले स्वयमेव ॥
दृढ़ चित धारैं तत्व मझार। जो जिनवर भाषो हितकार ॥६२॥

चलत चलत केते दिन भए। देश कलिंग मांहि तब गए ॥
तहां रतन संचयपुर नाम। नगर बसत है अति अभिराम ॥६३॥
हिम शीतल तहँ नाम नरिंद। सब परजा को आनंद कंद ॥
मदन सुंदरी ताके नार। रूप शील गुण धेरे अपार ॥ ६४ ॥
जिनपद कमल जगत में सार। भौरा सम सेवैं हितकार ॥
निरमायो जिनवर को धाम। उसही नगर विषे अभिराम ॥६५॥

दोहा

फागुण की अष्टान्हिका, ताको आयो पर्व।
प्रारम्भो उत्साह अति, जिन मन्दिर में सर्व ॥ ६६ ॥
कीजे श्री जिनचन्द्र की, रथ यात्रा सुखकार ॥
संपत युत अति हर्ष कर, रानी चित में धार ॥६७॥
रथ यात्रा उद्यम लिखो, संघश्री तिस नाम।
बोधमती पापिष्ट अति, विद्यामद युत काम ॥६८॥
सो राजा पै आयकर, कहत भयो इम बैन।
रथ यात्रा कीजे नहीं, यह है बहु दुख दैन ॥६९॥

काव्य छन्द

ऐसा कहकर बौद्ध तबै चित मांहि बिचारी। बाद पत्र इक लिखो तासमें येम उचारी॥करो बाद कोई जैनमती हम सेती अबही। ऐसे कह सुनि निकट पत्र भेजो उन तबही॥ ७०॥ तब नरपति बच चये सुनो रानी सुखकारी। जिनमतकी सामर्थ दिखावो हमको प्यारी ॥७१॥ तो रथयात्रा करो अन्यथा होवे नाही। ऐसे बच सुनहो उदास गई जिनग्रह माही ॥ ७१ ॥ नमन कियो तहँ जाय वहुर मुनिवर ढिग आई। कहत भई इम वैन सुनो गुरु चित लगाई ॥७२॥ हमरे जिनमत मांहि कोई नरहै इस लायक। बौद्धन देय हटाय बाद करके शुभ दायक ।७३।

दोहा

बौद्ध गुरू को जीतकर, मेरी बांछा सार ।
पूरे रथयात्रा करै, इसही नगर मझार ॥ ७३ ॥
इस लायक नर कौन है, सो कहिये भगवान ।
तब मुनिवर कहते भए, सुन पुत्री गुणवान ॥७४॥

चौपाई

मान्याखेट नगर शुभ जान । तामें पंडित है बुधवान ॥
इसको जीतन समरथ होय । यामे संशय नाही कोय ॥७५॥
मदन सुन्दरी बच सुन तेह । कहत भई सुनये गुरु येह ॥
कोप सहित जो सर्प कराल । डसन हेत आयो तत्काल ॥७६॥
दूर देश में गारुड़ होय । तो वह नर जीवे किम सोय ॥
ऐसा कह प्रभु पूजन करी । जिन ग्रह में परतिज्ञा धरी ।७७।
संघश्री पापी है सोय । उसको मत बिध्वंसे कोय ॥
पूरबवत रथ यात्रा करूं । जिन प्रभावना बहु बिस्तरूं ॥७८॥
तो मैं भोजन करूं ललाम । नातर प्राण तजूं इसठाम ॥
ऐसी बिध परतिज्ञा धार । कायोत्सर्ग खडी तिहबार ॥७९॥
श्रीजिन प्रतिमा आगे सार । नमोकार शुभ मंत्र उचार ॥
मेरु चूलका वत अति धीर । निश्चल ऊभी भई गंभीर ॥ ८० ॥
पीछे अर्ध रात्रि जब गई । याके पुन्य प्रभावे सही ॥
देवी चक्रेस्वरी उदार । तिस आसन कम्पो तिहवार ॥८१॥
अवध ज्ञान ते जान तुरन्त । तबही आई हर्षित वंत ॥
कहत भई ऐसे बच ताम । मदन सुन्दरी सुन अभिराम ॥८२॥
तेरो मन जिन चरन मझार । ताते किंचित भय नाहि धार ॥
होत प्रभात समय इस थान । आवैगा अकलंक महान ॥ ८३ ॥
संघश्री मद मर्दन करै । जैनधर्म बहु विधि विस्तरै ।

रथ प्रभावना कर हैसार। तेरी बांछा पूरनहार ॥ ८४ ॥
आननादिब्य धरै वहवीर। जिनमत मांही साहस धीर।
एसा कह देवी ततकार। जात भई सो जिन आगार ॥ ८५ ॥
देवीके बच सुन तिह बार। रानी आनंद धरो अपार।
फिर जिनवरकी स्तुति करी। बहु प्रकार मुखते उच्चरी ॥ ८६ ॥
भयो प्रभात समय सुखदाय। तब प्रभूको अभिषेक कराय।
पूजनकीनी चित्त लगाय। अष्ट प्रकार द्रव्य शुभलाय ॥ ८७ ॥
जे चर कारजमें परवीन। चारोंदिश भेजे गुणलीन
कहत भई ऐसे समझाय। जावो बेग नदील कराय ॥ ८८ ॥
जहँ देखो अकलंक महान। लावो बेग सही बुधवान ॥
ऐसे सुन चाले तत्काल। ढूंडन हेत सबै गुणमाल ॥ ८९ ॥
पूरब दिश जो गए प्रवीन। तरु अशोकनीचै तिनचीन ॥
कइयक शिष्यन को समुदाय। तिष्टतैं ताढिग हरषाय ॥ ९० ॥
सर्व शास्त्र के जाननहार। प्रोदित देखे बाग मझार ॥
एक शिष्य से पूंछ तुरंत। रानी से आकहो ब्रतंत ॥९१॥
सुनतेही रानी तिहबार। बड़ी बिभूति लई निजलार ॥
सब परजन युत चढ़ झंपान। प्रीत सहित पहुंची तहँआन ।९२।
वात्सल्य गुण धर अधिकाय। बन्दन कीनी सीस नवाय ॥
स्तुति कीनी विविध प्रकार। श्रीअकलंक देवकी सार ॥९३॥

दोहा

जैसे रवि उद्योत में, खिलै कमलनी सोय।
अथवा गुण आतम लखै, त्यों रानी सुख जोय ।९४।
चंदन अगर कपूर शुभ, अरु बहु विध के चीर।
धर्मराग रानी गहो, पूजे अकलंक धीर ॥ ९५ ॥

पद्धड़ी

आतम पवित्र अकलंक देव । पंडित बुध आकर कहत ऐव ॥
तुमरे अरु सब संघ के मंझार। बरतत है कुशल अनंतकार ।९६।
ऐसे सुन रानी हो उदास । आसूं जुत नैन किये प्रकाश ॥
हो स्वामी सुनिये धर्म लीन । ऐसेतो कुशल सबहै प्रवीन ॥९७॥
पण सबही संग अपमान थाय । यह तिष्टत हैं बहु दुःखपाय ॥
संघश्री नामा बौद्ध थाय । ताको सब भेद कहो सुनाय ॥९८॥
रानी बच सुन अकलंक देव । बहु क्रोध सहित बोले सुयेव ॥
क्या संघश्री है दीन रंक । मद कर, उद्धत जैसे पतंग ॥ ९९ ॥
मोसूं समरथ नहि बाद बीच । वह बौद्धन को गुरुहै सुनीच ॥
ऐसे कह बहु संतोष कीन । बुध धारक वे पंडित प्रवीन ॥१००॥
तबही लिखबाद सुपत्र संत । संघश्री पै भेजो तुरंत ॥
अरु आप चित्त उच्छाह ठान । जिन भवन गए रंजाय मान ॥१॥

दोहा

बाद पत्रको देखकर, बौद्ध गुरू तिहवार ॥
और पराक्रम बहु सुनो, वाद करो तत्कार ॥ २ ॥
अपनी शक्ति प्रकाशयो, अकलंक देव उदार ॥
नाना विधि उत्तर दिये, जैन बचन अनुसार ॥३॥

चौपाई

संघश्री तब चित्त विचार । मैं इन से नहि जीतन हार ॥
जेते बौद्धन के समुदाय । सब देशन ते लिए बुलाय ॥ ४ ॥
पहिले सिद्ध करी थी जोय । तारा नामा देवी सोय ॥
ताके आह्वानन विधि ठान । तहां बुलाई बहु करमान ॥५॥
तासों कहत भयो इम बैन । सुन देवी तू है सुख दैन ॥
या नरते इस बाद मझार । मैं तो जीत सकूं नलगार ॥६॥

तातै सुंदर तुम इस धाम । बाद ठान जीतो सु ललाम ॥
ऐसे सुनकर देवी सोय । कहत भई ऐसेही होय ॥ ७ ॥
राज सभाके बीच सुजाय । आड़ो पट तुम खड़ो कराय ।
माटी को इक घट मंगवाय । ता मांही मो दे बैठाय ॥ ८ ॥
पीछै बाद तनो बिस्तार । कीजो तू इस सभा मंझार ।
ऐसे बच सुन बौध मलीन । वाही भांति कपट तिन कीन ॥ ९ ॥
इम कहकर तिष्ठो तहँ सोय । मेरो मुख मत देखो कोय ।
बहु प्रकार पूजाकर भाय । देवी कुंभ मांहि पधराय ॥ १० ॥
जबही बाद करन यह लगो । अक्षर शब्द अर्थमें पगो ।
तबही श्री अकलंक सुआय । तिसको खंडन कियो पलाय ॥ ११ ॥
अनेकांत मतके अनुसार । बौद्ध पक्ष खंडो तिहबार ।
अपने मतकी जगमग जोत । कीनी भव बर्जित उद्योत ॥ १२ ॥

दोहा

या प्रकार षटमासलों, भयो बाद बिख्यात ।
कोई तहँ हारो नही, यह अचरज की बात ॥ १३ ॥

सवैया इकतीसा

तब अकलंक देव रैनके समय मझार, करत बिचार ऐसे चित्त मांही आई है । याही मोह बौधदीन शब्द में नही प्रवीन, एते दिन बाद करो कारन न पाई है ॥ ऐसे मन संशय धार छिन एक तिष्टे एह, एते तहँ आई देवी चक्रवती माई है । कहो तु उदारचित तेरी बुद्ध है पवित्र, सप्ततत्व जानवे को तूही सुखदाई है।

दोहा

अहो बाद तोसो करन, समरथ नाही देव ।
यहतो बंधक दीन है, पै है यहां कछु भेव ॥ १५ ॥
बाद कियो षटमासलों, तोसो बुद्धि निधान ।

तारादेवी ने सही, यह निश्चय कर जान ॥ १६ ॥

चौपाई

देवी चक्रेश्वरी महान । ऐसे बच भाषे हित ठान ।
अहो पुत्र तू है बुध लीन । विद्यावर पूरन परवीन ॥ १७ ॥
होत प्रभात समय सुखदाय । पहले प्रश्न कीजियो जाय ।
मान भंग ताको तत्कार । होवैगो नृप सभा मंझार ॥ १८ ॥
तवही तारा देवी जोय । निश्चयकर भागेगी सोय ।
जैसे भानु उद्योत मंझार । भागे तिमर असंख्य अपार ॥ १९ ॥
तेरी जीत होयगी सही । ऐसे कह देवी तब गई ।
देवी दर्शनते सुख पाय । अरु वह बचन सुने हितदाय ॥ २० ॥
खिले कमल सम आनन जान । होत भयो तिहवार महान ।
प्रातकाल उठयो हरषाय । दिव्य मूर्ति जिन मंदिर जाय ॥ २१ ॥
दर्शन कीनो आनंद लीन । बहुप्रकार वंदन सो कीन ।
फिर नरपति की सभामझार । कहत भयो ऐसे तिहवार ॥ २२ ॥
ऐते दिन मैंने इस ठाम । वाद कियो बहु बिध अभिराम ।
क्रीड़ा मात्र जानियो सोय । तथा प्रभावन कारन जोय ॥ २३ ॥
आज जीतकर भोजन करूं । यह निश्चय परतिज्ञा धरूं ।
ऐसे कहकर लगो तुरंत । वादहेत बच कहे महंत ॥ २४ ॥
पहिले दिना प्रश्न जोकरो । सोकिस विध हमको उच्चरो ।
इस प्रकार इनपूछनकरी । तबदेवी मन चिंता धरी ॥ २५ ॥
इनके बच बहु बज्र समान । हृदय विषै लागे दुखदान ।
कहने कोअसमर्थ हि होय । मान भंग है भागी सोय ॥ २६ ॥
जैसे रवि उद्योत मंझार । भागै रैन रहै नलगार ।
तबही अकलंक देव महंत । क्रोध धार उट्ठे गुणवंत ॥ २७ ॥
अंतरपट कर भेद सुसंत । लातमार घट फोड़ तुरंत ।

बौद्ध मूर्ति को हततिहवार। मान भंग कीनो तत्कार ॥ २८ ॥
भव्य जीव जैनी जन जेह। तिनके आगे सहित सनेह।
मदनसुंदरी नरपति नार। कीनो आनंद सहित अपार ॥ २९ ॥
फेर गर्जना सहित सुबैन। भाषत भए महा सुख दैन ॥
धर्म रहित संघश्री दीन। बौद्ध मती यह महा मलीन ॥३०॥
पहलेही दिन करके बाद। हरतो याको सब उनमाद ॥
पर श्री जिनवर चंद्र मनोग। तिनके मत उद्योतन जोग ॥३१॥
बहु प्रभावना जगमें होय। ज्ञान उद्योत लखै सब कोय ॥
याते में देवी के संग। बाद कियो षटमास अभंग ॥
ऐसे कह यक काव्य महान। सबही आगे पढ़ो सुजान ॥

काव्य

नाहंकार वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं।
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यतिजने कारुण्य बुध्या मया ॥
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनम्।
बौद्धौघान् सकलान् विजत्यसघटः पादेनविष्फालितः ३३

अर्थ कवित्त ॥ छन्द

अहंकार वशि नाहि बाद मैंने यह कीनो। अथवा केवल दोष-चित्तमें नाहि धरीनो ॥ समझो मनमें एम जीव भोले जगमांही। बौद्ध धर्म में लीन होय तो नाश लहांही ॥ ३४ ॥ ताते दया सु-ज्ञान कियो में बाद प्रचारी। हिम शीतल नरनाथ तासकी सभा मझारी ॥ आए थे बहु बौद्ध तिनोंकी मति हरलीनी। कीनो जैन उद्योत और घट लात सुदीनी ॥ ३५ ॥ ऐसे बैन महान कहे अकलंक सुस्वामी। नृपने दिए निकास बौद्ध जो थे बहुनासी॥ दशों दिशा को छाड़ तबै वे गए पलाई। ज्यों रविके उद्योत होत पग चोत नशाई ॥ ३६ ॥ ऐसे श्री अरिहंत देवको ज्ञान

प्रभावन। देखो अपनी दृष्टि राय आदिक जे पावन ॥ भक्ति चित्त निज आन तजो मिथ्यामत भारी। जैनधर्म में राग धार भए सम्यक धारी ॥ ३७॥ नाना बिधके रतन हेम बहु बिध ले आए। पंडित श्री अकलंक तने तब चर्न चढ़ाए ॥ बहु स्तुति उच्चरी धन्य तुम जन्म लियो है। जैन धर्म परकाश बौद्ध मत नाश कियो है ॥ ३८ ॥

दोहा

मत अरिहंत जिनेश को, जिन उद्योतहि कीन।
पूज्य पुरुष या जगतमें, क्यों नहि होंय प्रवीन ॥३९॥

पद्धड़ी

फिर मदन सुन्दरी जो प्रवीन। रथयात्रा को उद्यम सुकीन॥
नाना प्रकार रचना समेत। रथ ऊपर लहकत है सुकेत ॥४०॥
रेशम फुंदे दई दीप्यमान। अरु छुद्र घंटका शोर ठान॥
जहँ चमर सु लटकत हैं अपार। बहु छत्र फिरैं रथके मझार ॥४१॥
अरु रतनदाम मोती सुमाल। लटकत हैं तहँ झालर रसाल।
ऐसो रथ सजयो अति विचित्र। सिंहासन तामध है पवित्र ॥४२॥
तामध श्रीजिनवर चंद्रराय। अस्थापन कीने हरष पाय॥
तब भव्यनके समुदाय जेह। मुख बोलत जैजैकार तेह ॥४३॥
तहँ पुष्पन की बरषा अपार। रथ ऊपर करत सुबार बार॥
झालर मृदंग कंसाल ताल। भंभा फेरी पटहा रिशाल ॥४४॥
बाजत बहुबिध सुर ताल लीन। पंडितजन जिनगुण गानकीन॥
बंदीजन चारण आदि जेह। जिनवृद्ध वखानत आनतेह ॥४५॥
अरु गीत नृत्य करती अपार। नारी चाली रथकी सुलार॥
मानों यह पुन्य तनो सुमेर। चजतो सो है सवजन सुहेर ॥४६॥
जै भव्यन के समुदाय आय। रानी बहु विध आदर कराय॥

षट भूषण नाना भांति जेह । तंबोल दिए बहुधार नेह ॥४७॥
रथको देखो बहु हरषवंत । मानों चलतो सुर तरु दिपंत ॥
जाकीशोभा बरनी न जाय । जन देखन सम्यक लच्छ पाय ॥४८॥
नाना विध सम्पत जास लार । भवजीव मनोहर पूर्ण हार ॥
मानो जसर्हाका पुंज थाय । ऐसो रथ चालो समदाय ॥४९॥
सो आचारज भाषे दयाल । सोई रथ हम ध्यावैं त्रिकाल ॥
अर भव्य जीव जे हैं उदार । तेभी भावो जगके मझार ॥५०॥

सोरठा

ऐसे संभावन कियो, जिनमत को उद्योत ।
सो सबको प्रापत करो, सम्यक लक्ष्मी जोत ॥५१॥
यां बिध अकलंक देवने, ज्ञान प्रभावन कीन ॥
और भव्यजे जग विषैं, नितप्रति करो प्रवीन ॥५२॥

गीता छन्द

इस ग्रन्थ के करता कवीश्वर ब्रह्म नेमीदत कही ।
श्री प्रभाचंद्र सुनिन्द्र मुझको सुःख बहु बिध दोसही ॥
कैसे हुते मुनिराज जगमें ज्ञान के अंबुध भले ।
गुण रतन उद्यम हृदय मांही कर्म शत्रुन को दले ॥ ५३ ॥
अरिहंत वरनो ज्ञान उत्तम तास रहस सुपाइयो ।
इनदीप सम परकाश कीनो जगत को दिखलाइयो ॥
अरु देव इंद्र नरिंद्र करके बंदनीक महान हैं ।
ऐसे जिनेन्द्र सुचंद्र जगमें करत सब कल्यान हैं ॥५४॥

सोरठ

अर्थ यथारथ पाय, अरु शुभ कारन को लखो ।
तब यह छन्द रचाय, बखतावर अरु रतन ने ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै ज्ञान उद्योत कृत श्री अकलंक देव जीकी कथा सम्पूरणम् ॥

अथ श्री सनतकुमार चक्रवर्ति की कथा

प्रारम्भः ॥ नं० ३

मंगलाचरण छप्पय

स्वर्ग मोक्ष सुख देन पंच परमेष्टी जानो। तिनकी भक्ति सुधार नमन बहु बिधमें ठानो ॥ चारित को उद्योत कियो चक्री गुण धारी। सनतकुमार महान भए चौथे हितकारी ॥ तिनकी कथा बखानहूं, सुनो भव्य चित लाइये। तासुनत महा दृढ़ता बढ़ै, बहुबिध आनंद पाइये ॥ १ ॥

कथारम्भ चौपाई

एही भरत क्षेत्र सोभाय। तामें बीतशोकपुर थाय ॥
ताको स्वामी बहु गुण पाय। अनंतवीर्य तिस नाम सुथाय ॥२॥
पटदेवी सीता तसु गेह। नृपको तासों अधिक सनेह।
तिनके पुन्य उदयते सार। उपजो पुत्र जुसनत कुमार ॥ ३ ॥
चौथो चक्रवर्ति बरबीर। सम्यक्वंत शिरोमणि धीर।
षट खंड साधे भुज बलधार। नवनिध चौदह रतन भंडार ॥ ४ ॥
अरु चौरासी लाख करिंद। नव्वे सहस बतीस नरिंद।
सहस चौरासी रथ शुभजान। कोड अठारह घोटक मान ॥ ५ ॥
सुवरणके गहनन करजोय। दिस मनोहर बहुविध सोय ॥
कोट चौरासी अति बलवंत। शस्त्र साहित प्यादे शोभंत ॥ ६ ॥
धानन्न के समूह करभेरे। कोड़ छानवै ग्राम सुखरे।
सहस छानवे बनितागेह। तिनते राखत अधिक सनेह ॥ ७ ॥
इत्यादिक संपाति भंडार। चक्र वार्तिपद धरै उदार।
देव खगेश्वर नितप्राति आय। सेव करैं तिसकी हरपाय ॥ ८ ॥
धरै रूप लावन्य अपार। महाभाग बुध आकर सार।

श्री जिनचंद्र तने सो दास । धर्म कर्म धारे गुण रास ॥ ९ ॥

दोहा

यह विध बहुशोभा धरै, तिष्टत जिन आगार ।
प्रथम इंद्र जिन सभामें, इह विध वचन उचार ॥१०॥
रूप अरु गुण बरणान कियो, पुरुषन को अधिकान ।
तव इकदेव विनय सहित, प्रश्न-कियो तिह थान ॥११॥
जैसो वरणान तुम कियो, अहो नाथ गुणगेह ।
भरत क्षेत्र में नर कोई, है अक नाही तेह ॥ १२ ॥

अडिल्ल

तवै इंद्र महाराज वचन इम उच्चैर । चक्री सनतकुमार रूप इह विध धरै ॥ तैसो रूप महान सुरनको भी नही । औरनकी कहा बात जो शोभा उन लही ॥१३॥ ऐसे सुनके बैन तबै सुर युगमिले मणिमाली अरु रतनचूल जबही चले ॥ १४ ॥ रूप देखने काज न्हौन थानक गयो । छिपकर देखो और महा आनंद लयो ।१४। वस्त्राभूषण रहित नगन तन धारहै । तौ पण तीन जगतको मोहन हार है ॥ जवही अमरन चितमें विस्मय आनियो । सिरहलाय कर इंद्र वचन सत जानियो ॥१५॥

दोहा

हरष धार द्वारे गए, अपनो रूप प्रकास ।
द्वारपाल सो इम कहो जावो चक्री पास ॥ १६ ॥
ऐसे वचन वखानियो, तुम देखन को एव ।
स्वर्ग लोक ते आन कर, तिष्टत द्वारे देव ॥ १७ ॥

पद्धडी

तव द्वारपाल सुन वच प्रवीन । पृथ्वी पति के ढिग गमनकीन ॥ जाकर सवही भाषो व्रतंत । सुन नरपति हूवे हरषवंत ॥१८॥

तनको बहुविध शृंगार कीन। पट भूषण बहु पहरे नवीन ॥
बहु शोभावत तिष्टो महंत। युग त्रिदश बुलाय लिये तुरंत ॥१९॥
तब सभा विषै युगदेव आय। इन रूप देख इम बच कहाय।
है कष्ट बड़ो इस जग मझार। छिन भंगुरमानुष रूप धार ॥२०॥
जैसे हम देखो न्हौन थान। तन लेप सहित दैदीप्य मान ॥
सो अब दीखत नाही लगार। तातें यह सब जगहै असार ॥२१॥
नृप हुते सभाके बीच जेह। तिन कहो सुनो बच देव येह।
जैसो मंजन थानक मझार। नृप रूप हुतो तैसो अवार ॥२२॥
ऐसे बच सुन निरजर प्रवीन। जल भरो कुंभ मंगवाय लीन ॥
सबको दिखाय घट पूर्ण बार। फिर बाहर जन दीने निकार ॥२३॥
तब चक्रवर्ति देखत दयाल। तृणांत इक बूंद दई निकाल ॥
सबही जन फिर लीने बुलाय। जल भरो कुंभ उनको दिखाय २४
युग सुर तिनसे पूछन सुकीन। इसमें जल पूरण है किहीन ॥
जैसे पहिले हमने निहार। उतनोही है कम नहि लगार ॥२५॥

दोहा

तबै देव कहते भये, सुन चक्री बुधिवान
रूप तिहारो इम घटो, जिम जल बूंद न जान ॥२६॥
ऐसो कहकर देव युग, गए सुनिज आगार।
चमत्कार चक्री लखो, मनमें करै विचार ॥ २७ ॥

छन्द जोगीरासा

पुत्र मित्र नारी परियन जन चपलावत नशिजावै। इह शरीर अ-पवित्र घिनावन नितप्रति ताप बढ़ावै ॥ विनशजाय क्षण मांही दीखत पंडित नेह न लावैं। पंचेंद्री के भोग चोर तिनसे यह जीव ठगावैं ॥२८॥ इन भोगन कर ठगे जीव बहु है पिशाच सम नाचैं। अमृत सम जिन बैन मनोहर मिथ्याकर नहि राचैं ॥ यह

जड़ बुद्धी ज्ञान बिना सट निजरस मे नहि पागै । जैसे ज्वर वाले को मिश्री दूध जहर सम लागै ॥२६॥

दोहा

चक्रवर्ति इम चिंतवै, अबही मोह जंजाल ।
तजकर आतम हित करूं, लूं दीक्षा दरहाल ॥३०॥
तत्पर हो वैराग में, जिन पूजन बहु कीन ।
करुणा भाव जुधार कर, दान बहुत जब दीन ॥३१॥

चौपाई

देव कुमार नाम सुत जास । ताको राज दियो सुखरास ॥
बुद्धि रूप धनको आवास । आप गयो श्री मुनिवर पास ॥३२॥
नाम त्रिगुप्त दिगम्बर धीर । तिनको नमन कियो बरबीर ॥
हितकारी जो जगत मझार । बड़ी भक्ति ते दीक्षा धार ॥३३॥
नग्न उग्र तप करत महान । पाले पंच महाव्रत जान ॥
ऐसो चक्रवर्ति जोगिंद । करै तपस्या अति गुण वृंद ॥३४॥
प्रकृति विरुद्ध अहार पसाय । सब शरीर में रोग लहाय ॥
खुजली आदिक बहु दुखदाय । तौ पण चिंता कछु नकराय ।३५।
तनसे निस्प्रेही मुनिराय । उत्तम तपको बहुत तपाय ॥
तिस अवसर में प्रथम सुरिंद । सभा विषै तिष्टे गुणव्रिंद ॥३६॥
धर्म रागते करो वखान । पंच प्रकार चरित्र महान ॥
पालैं जे धन जगत मझार । हरष सहित ऐसे उच्चार ॥३७॥
मदन केतु इक देव महान । मघवाते पूछो तिहथान ॥
जो प्रभु तुम चारित्र वखान । सो हम निश्चय उरमें आन ।३८।
पर इस भरतक्षेत्र इस काल । सम्यक दृष्टी नर गुण माल ।
चारित्र धारी हैं इक नही । सो तुम नाथ कहो अब सही ॥ ३६ ॥
तबै पाकसासन उच्चार । चक्रवर्ति जो सनत कुमार ।

तृणवत् जान राज तजदीन। सो निस्प्रेही चारित्र लीन ॥ ४० ॥
सुनाशीर ऐसे उच्चरी। सब अमरन ने शरधा करी।
मदनकेत अचरज चितलाय। देखनको आयो उमगाय ॥ ४१ ॥
बनमें देख मुनि गुण माल। सब जीवनके हैं रिछपाल।
रोग अनेक रहे बपुछाय। पर सुमेर सम ध्यान लगाय ॥ ४२॥
सुर अरु असुरन मैंनितचर्ण। चारित धारी मुनि दुखहर्ण।
प्रथ्वी तल पवित्र कर सोय। ठाड़े आतमको अवलोय ॥ ४३ ॥

दोहा

ध्यान लीन ऐसे लखे, श्रीगुरु दीनदयाल।
वैद्य रूप सुर धारकर, बोले बचन रशाल ॥ ४४ ॥
मैं सब वैद्यन को पती, खोवूं व्याधि तुरंत।
दिव्यरूप अबही करूं, इहबिध शब्द कहंत ॥ ४५ ॥

सवैया

ऐसे बच बार बार कहत पुकार सार, आगे पीछे मुनिके समीप यह जायके। तब गुरु दीननके नाथ बैन इमकहे, कारनहै कौन फिरै बनमें तू आयके ॥ जब सुरकहै मोह वैद्यनको पतिजान, जेते रोग सबदेहुं छिनमें भगायके। कंचन समान छवि तन की बनाऊंबेग, देवो जोहुकम मोहि आप हरषाय के ॥ ४६ ॥

दोहा

इम बोले तब शिवधनी, जोतू वैद्य निधान।
जन्म मर्ण की व्याधिको, करो दूर बुधिवान ॥ ४७ ॥
वैद्यरूप सुर इम कहो, सुन मुनिवर जगदीश।
दूर करन इम व्याधिको, में समरथ नाहि इश ॥ ४८ ॥

सोरठा

जन्म मरण जो व्याध, तास हरण समरथ प्रभु।
तुमही हो जग साध, और वैद्य कोई नहीं ॥ ४९ ॥

पद्धड़ी

तब मुनिवर कहत सुनाय एम। तन व्याध हरण कारन सुकेम।
यहहै शरीर अपवित्र जोय। निर्गुण दुर्जन समजान सोय। ५०।
हम व्याध हरन इच्छा जुधार। नासामलते टारैं अवार।
तब वैद्य तनी औषधि अपार। तिसतें क्या काज हियेबिचार। ५१।
ऐसा कह नासामैल लीन। भुज रोग सबै नासो प्रवीन।
सुबरन सम बांह तबै दिपंत। माया तजप्रगटो सुर तुरंत। ५२।
फिर नमन ठान अरुइम उचार। स्वामी चरित्र तुमरो उदार।
अचरजकारी निरदोष सार। अरु तनमें निस्प्रेही अपार॥ ५३॥
ऐसो निज सभा विषै सुरेश। बरनो जैसा देखो बिसेश।
तातैं तुमअवनीमें महान। धन तुमरो जनम दया निधान॥ ५४॥
सब जनको तुम सुखदैनहार। इम स्तुति कीनी बार बार।
चित भक्ति धारकर नमस्कार। वह देव गयो अपनेअगार॥ ५५॥

दोहा

सनत कुमार मुनीश तब, करतसो निज कल्यान।
चारित्र पंच प्रकारको, करोउद्योत महान॥ ५६॥
शुक्ल ध्यान करकर्मअरि चार, घातिया नाश।
इंद्र चंद्र पूजत चरण, केवल ज्ञान प्रकाश॥ ५७॥

चौपाई

तबै केवली सनत कुमार। धर्म रूप बरषावत बार।
भव जीवन को दे उपदेश। रहे कर्म सब नाश असेश॥ ५८॥
तबही पहुंचे मोक्ष सुथान। नंत गुणों की आकरजान।
तिष्ठे सिद्ध थान गुण लीन। आवागमन रहित परवीन॥ ५९॥
सम्यक्तादि अष्ट गुणसार। ताकर शोभित ज्ञान भँडार।
पूजन बंदन किए महंत। निज लक्ष्मी सो दो भगवंत॥ ६०॥

सनस कुमार मुनी जगपोत । चारित्रको कीनो उद्योत ।
तैसे और भव्य जन जेह । बहु बिध करपरकाशोतेह ॥ ६१ ॥

छप्पय ॥ छंद

गच्छ भारती मांहि मूल संघी सुखदाई । श्री भट्टारक नाम मल्ल भूषण बरदाई ॥ तिनके शिष्य महान सिंध नंदी मुनिजानो । गुण रतनन की खान बुद्धि तिनकी बरमानो ॥ सो मुक्तको संसार ते, तारन हार दयाल हैं । भव जीवनको शुभगति करैं, ऐसे गुरु गुण माल हैं ॥ ६२ ॥

सोरठा

ब्रह्मनेमिदत जान, कथा तीसरी बर्णई ।
तापर छन्द बखान, की बखतावर रतन ने ॥६३॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष बिषै सनतकुमार श्री चक्री की चारित्र उद्योत कथा समाप्तः

अथ श्री समंतभद्र स्वामी की दर्शन

उद्योत कथा प्रारम्भः ॥ नं० ४

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा

तीन जगतके सुजीव पूजैं चरनारविंद, ऐसे अरिहंत जिन ताको शीश नायकै । सम्यकदरश सार तासको उद्योत कीनो, श्रीमत समंतभद्र शूर चित्त लायकै ॥ तिनकी कथा महान सोई मैं करूं बखान, सुनो भव्य जीव तीनो जोग को लगायकै । जासके सुनत ही ते सम्यकदरश होत, जाय तत्काल भाग दुरनय पलायकै ॥१॥

चौपाई

भरतक्षेत्र आरज खँड जान । ताकी दक्षण दिशा महान ॥
काशीपुर शुभ नगर बसात । तामें पंडित मुन विख्यात ॥२॥
आतम ज्ञानी बहु बुधवान । तर्क छन्द व्याकरण निधान ॥

अलंकार आदिक जु पुरान । तिनको जाने रहस पुमान ॥३॥
चारित मणि को सागर सार । स्वामी समंतभद्र हितकार ॥
तिष्ठत है तहँ ध्यान लगाय । कर्म असाता उदय पसाय ॥४॥
भस्म व्याधि उपजी तन आय । तीव्र कष्ट दाई अधिकाय ॥
तिसी व्याधि कर पीडित मुनी । तसकाय चित चिंता ठनी ॥५॥
इस प्रथ्वी तल पे तप करो । दर्शन उद्योतहि विस्तरो ॥
अब यह भस्म व्याधि दुखदाय । उपजी हमरे तनमें आय ॥६॥
इसके नाश करन तत्काल । कोई बिध कीजे दरहाल ॥
घृत मिश्रित पकवान मनोग । तासों नाश होय यह रोग ॥७॥
यहां अहार प्राप्ति नाहि होय । तातें भेख धरूं अब कोय ॥
कोई थान कोइ भेष बनाय । इस को उपसम कीजे जाय ॥८॥
ऐसो मनमें धार बिचार । तबही काशीपुर को छार ॥
उत्तर दिश को चले तुरन्त । पौडोंड नगरी पहुचंत ॥ ९ ॥
बौद्धमतन के मट तिह थान । तहां जो दान बटै अधिकान ॥
देख जबै मन हरष सुधार । बौद्ध रूप कीनो तत्कार ॥ १०॥
तहां भी अल्प अहार पसाय । क्षुधा रोग नाहि उपसमथाय ॥
तहँ ते निकस चले बुधवान । वहुत नगरमें कियो पयान ॥११॥

दोहा

केतक दिन में पहुंचयो, दशपुर नगर सुजाय ।
क्षुधा लीन अति दुखित है, देखे मठ अधिकाय ॥१२॥
भगवत भेषी तहँ रहैं, है तिनको समुदाय ।
जैसे बायस बन बिषै, दीखत है अधिकाय ॥१३॥

चौपाई

उनके सेवक दान जु देत । सदा काल अति हर्ष समेत ॥
ऐसे लख मत बौद्ध सुढाल । भगवा भेष धरो तत्काल ॥१४॥

तहां भस्म व्याधी नाहि गई। तन में साता नेक न भई॥
वहँ से निकस चले दरहाल। दशों दिशा में फिरे दयाल॥१५॥
भ्रमते पहुंचे काशी देश। तामें नगर बनारस बेश।
तहँ परवेश कियो हरषाय। जानी यहां मम क्षुधा पलाय॥१६॥
वे समंतभद्र बरवीर। हिरदे सम्यक धरो गंभीर॥
भस्म व्याधि संगोग पसाय। बाह्य भेष अनेक बनाय॥१७॥
जैसे कम्प मांहि है जाल। तैसे बाहजयेह गुण माल॥
नगर बनारस में अधिकाय। जोगी जनके हैं समुदाय॥१८॥
तब इन भगवा पटको छार। जोगी रूप कियो तत्कार॥
शिव कोटी राजा कर जहां। करवाए शिव मंदिर तहां॥१९॥
भेद अठारह धान मनोग। मिश्री युत तहँ चढ़े सुभोग।
तहां देख मनकियो बिचार। यहँ मम व्याधि होय निरवार॥२०॥

दोहा

करत बिचार सु इमतहां, सेवक नृपके आय।
नैवेद्यके पिंड बहु, शिवको दियो चढ़ाय॥ २१॥
फिर उठाय बाहर नख्यो, देखो पिंड गिरात।
तब जोगी ऐसेकहो, सुनो सबै तुम बात॥ २२॥

अडिल्ल

अहो राज्य में समरथ कोई है नहीं। षटरस कर संयुक्त महा उत्तम सही। आव्हानन कर शिवको देय खुवायही। जाकर पुन्य भंडार भरैं अधिकायही॥ २३॥ ऐसे इनके बैन सुने सेवक जबै। कहत भए क्या तुममे समरथहै अबै॥ समंतभद्र इम बैन कहे हरषायके। है समरथ मुझमांहि कहो नृपजायके। २४।

दोहा

सुनते ही सेवक तबैं, नृपपे गये सुभाज।

शिव थानक जोगीश इक, तिष्ठतहै महाराज ॥ २५ ॥
तुमभेजो नैवेद्य सो, बाहर गेरत देख ।
कहत भयो बच एमतब, जोगी सुंदर भेख ॥ २६ ॥
मैं भोजन इस देव को, करवाऊं तत्कार ।
आह्वानन विधिठानके, इह विध वचन उचार ॥ २७ ॥

अडिल्ल

इम सुन शिवकोटी तब नरेश । मन माही हरष धरो विशेश ।
नाना प्रकार पकवान सार । घृत दधि के कुंभ लिए सुलार २८
पूरी पापड़ रस इख जेह । सत कलेश भरे लायो सुतेह ॥
जोगी के ढिग आयो तुरन्त । बोलो नृप वच तब हर्षवन्त ।२९।
अब देव तनो भोजन कराय । सुन जोगी बोलो हर्ष पाय॥
मैं करवाऊं भोजन अपार । इम कह सामग्री ली उदार ॥३०॥
मंदिर भीतर परवैश कीन । सेवक जन बाहर काढ़दीन ॥
अरपाट जुगल तबही भिड़ाय । वह सब सामग्री आप खाय३१
फिर खोल किवाड़ कहो पुकार । भोजन बाहर सबलो निकार ॥
तब नरपति चित आश्चर्य धार । नितप्रति भेजे पकवान सार ३२
शिव मन्दिर में बहु धार प्रीत । षटमास भए ऐसे ब्यतीत ॥
तब भस्म व्याधि उपशांति थाय । भोजन बाकी नितप्रति बचाय ३३

दोहा

जो अहार मरजाद थी, तितने पै वह ठाय ।
भोजन बचतो देख के, सेवक बोले आय ॥३४॥
हो जोगी यह क्यौं बचै, नित भोजन अभिराम ।
समंतभद्र तब इम कहो, अब तुम सुनो ललाम ॥ ३५ ॥
नृपकी भक्ति सुबहु लखी, तृप्तो देव महान ।
ताते भोजन अल्प अब, लेन लगे सुखमान ॥३६॥

चौपाई

इम बच सुन सेवक जन जेह । नृपसों जाय कहो सब तेह ॥
तब इस चरित निहारन काज । नृपने कीनो एम इलाज ॥३७॥
सूके पुष्पन में नर कोय । मोरी मध्य छिपायो सोय ॥
किह बिध भोजन देव कराय। सो चरित्र तुम देखत जाय ॥३८॥
उन देखो सो कहो तुरन्त । नरपति आगे सब बिरतन्त ॥
जोगी भोजन आप सुखाय । शिवपर पग धर सैन कराय ।३९।
शिवकोटी सुन बैन सुएव । हिरदे कोप धरो बहु भेव ॥
जोगी से बच कहे सुनाय । तू धूरत झूटो अधिकाय ॥४०॥
तूही भोजन नितप्रति करै । देव नाम बिरथा उच्चरै ॥
अर नाहि नमन करै किस काज । भेद बतावो हमको आज ।४१॥
कहे समंतभद्र बच एव । राग द्वेष जुत है यह देव ॥
हमरी नमस्कार परवीन । यह सहने समरथ नाहि दीन ॥ ४२॥
अहो महीपति सुन मुझ बैन । दोष अठारह जिनके हैन ॥
केवल जुत अरिहंत सुएव । मेरी नमन सहैं ते देव ॥४३॥
ताते इस कुदेवको जदा । नमस्कार करहूं नाहि कदा ।
जोमें नाऊं इसको भाल । तेरो देव फटै तत्काल ॥ ४४ ॥
इनके बच सुनके नरनाथ । कहत भयो तू नाय सुमाथ ।
खंड खंड होवैं तो होय । हम देखैं तुम समरथ जोय ॥ ४५ ॥

दोहा

तब जोगी ऐसे कही, तुम सुनये नरनाथ ।
निज सामर्थ दिखायहूं, होत समय परभात ॥ ४६ ॥
तब नरनायक बोलियो, ऐसीही जो होय ।
इसकह इनको लेगयो, मंदिर पीछे सोय ॥ ४७ ॥

काव्य

तब पृथ्वी पति जतन कियो बहु विधि तिह ठाई ।
आसि जिनके करमांहि सुभट चौकी बैठाई ॥
गज समूह चहुं ओर खड़े घूंमैं मतवारे ।
इम रत्नाकर नृपति गयो निज धाम मझारे ॥ ४८ ॥
समंतभद्र महाराज रात को एम विचारी ।
मैंने जलदी मांहि बचन नृपसे उच्चारी ॥
सो होवै अक नाहि यही संशय मन माही ।
ऐसो चिंता करी प्रभूको ध्यान कराही ॥ ४९ ॥
जिन शासन रिछपाल अम्बका देवी तबही ।
निज आसन कम्पाय आय इनके ढिग जबही ॥
कहत भई जोगींद्र सुनो तुम बैन हमारे ।
जिन चरणाम्बुज भ्रमर समा सब जग को प्यारे ॥ ५० ॥
तुम सम दृष्टी जीव करोमत चिंता कोई ।
जोतुम नृपसे कही होय सो निश्चय सोई ।
चौबिस जिन महाराज तनी अस्तुति उच्चारो ।
रचो स्वयंभू पाठ कोट सुख को दातारो ॥ ५१ ॥

दोहा

यह स्तुति उच्चारके, तू न्यावैगो भाल ।
सहस खंड उस देवके, होवैंगे तत्काल ॥ ५२ ॥
वह देवी जिन भक्ति जुत , ऐसेकह शुभ बैन ।
जात भई निज गेहको, भवि जनको सुख दैन ॥ ५३ ॥

चौपाई

तब देवी के दर्शन पाय । बिगसत आनन अंग न माय ।
चौविस जिनको पाठमनोग । रचत भयो शुभकरत्रयजोग । ५४ ॥

सुखसे तिष्टे बुद्धि निधान । इतने प्रगटो भानु सु आन ।
सारी नगरी के जन जेह । नृप जुत आए सब शिवगेह । ५५ ॥
कौतूहल जुत देखन हार । बेग उघारो शिवको द्वार ।
समंतभद्र को बाह्यबुलाय । देखो नृपने बिकसित काय ॥ ५६ ॥
सूरज सम तेजश्वी जान । आनंद चित्त धरैं अधिकान ।
ऐसो लख शिव कोटी राय । मन विचार यह भांति कराय ॥ ५७ ॥
दिव्य मूर्ति दीखे जोगिंद । पालैगो निज बच गुण बृंद ।
इम बिचार बोलो भूपाल । अहो देव को नावो भाल ॥ ५८ ॥
हम देखैं तुम शक्ति प्रवीन । तब श्री समंतभद्र यह कीन ।
बहु बिध भक्ति हिये मेंआन । चौबीसी जिन स्तुति ठान ॥ ५९ ॥
देव बचन कर आरम्भ कीन । पढ़ो पाठ अति आनंदलीन ।
अष्टम तिर्थेश्वर जिनचंद । तिन स्तुति कीनी जोगिंद ॥ ६० ॥
जितने मुखते करै उचार । तितने शिव दीरघ आकार ।
खंड खंड तिस काया भई । सब जनके देखत फट गई ॥ ६१ ॥
तबही प्रतिमा अधिकरिसाल । चतुर्मुखी निकसी तत्काल ।
चंद्र प्रभुकी अति छबिवान । देखत जन जैजै बचठान ॥ ६२ ॥
कौलाहल लख नृप तिहबार । अतिशय देखो नैन निहार ॥
कहत भए सुनिये जोगीश । कौन पुरुषतुमहो जगदीश ॥६३॥
दीरघ समरथ धारी आप । ऐसे नृपने बचन अलाप ॥
तबही समंतभद्र सब कहो । दो काव्यन में सब बरनयो ॥६४॥

संस्कृत ॥ काव्य

काञ्च्यां नग्नाटकोऽहं मलमलिततनुर्लाम्बुशे पाण्डुपिण्डः ।
पुण्ड्रोण्ड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मृष्टभोजी परिव्राट् ॥
वाराणस्यामभूवन् शशधरधवलः पाण्डुरागस्तपस्वी ।
राजन्यस्यास्तिशक्तिः स वदतु पुरतो जैननिर्ग्रंथवादी ॥ १ ॥

पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताड़िता ।
पश्चान्मालवसिंधुठक्कविषये कांचीपुरे वैदिशे ॥
प्राप्तोऽहं करहाटकं बहुभटैर्विद्योत्कटैः संकटं ।
वादार्थी विचराम्यहं नरपते शार्दूलविक्रीडितं ॥ २ ॥

चौपाई

यह वृतांत सब कह परवीन । तजो पिनाकी लिंग मलीन ॥
मोर पिच्छिका सहित तुरन्त । भए निर्ग्रंथ जतीश्वर संत ॥६५॥

दोहा

खोटे मतधारीन ते, मत एकांती जोय ।
अनेकांत परभावते, जीतैं छिनमें सोय ॥ ६६ ॥

पद्धड़ी

जो सुरग मुकत दायक रशाल । ऐसे श्रीजिनकोमत विशाल ॥
ताको उद्योतन बहु कराय । उत्तम सम्यक दर्शन पसाय ॥६७॥
धीर वीर गुणवंत सार । अब काल अनागत होनहार ॥
त . तीर्थंकर पद दयाल । पावैंगे निश्चय सुगुण माल ॥ ६८ ॥
शिव पिंडी को इन खंड कीन । यह कवि सत्तम जगमें प्रवीन ॥
सब वादी गण दीने नशाय । श्रीसमंतभद्र निर्ग्रंथ काय ॥ ६९ ॥
श्री जिनवर कर भाषो सुज्ञान । ताको उद्योतन बहुत ठान ॥
ऐसो भारी अचरज लखाय । नृप आदिक बहुजन हर्ष पाय ॥७०॥
श्री भगवतचंद्र तनो सुधर्म । तामें दृढ़ होय तजो सुभर्म ॥
अरु शिवकोटी राजा उदार । क्षय उपशम चारित्र मोहकार ७१
सब राज त्याग दिक्षा महान । लीनी तबही सुखकी निधान ॥
धर बहु विवेक हिरदे मझार । शिवकोटी मुनि वैराग धार ॥७२॥
गुरु भक्ति करी इनने अपार । तातें हिय ज्ञान बढ़ो उदार ॥
जो लोहाचारज कृत पुरान । चारों आराधन को बखान ॥७३॥

चौरासी सहस श्लोक थाय । ताकी इनने टीका रचाय ॥
चौंतीस सूत्र तामें उचार । संख्या ताकी ढाई हजार ॥७४॥
अब काल अलप अरु तुच्छ काय । तातें संक्षेप कियो बनाय ॥
सोई आराधन जग मझार । सबही जनको आनन्दकार ॥७५॥

गीता छन्द

श्री मूलसंघ विषै भए देदीप्यमान सु जानये ।
सम्यक्त दर्शन ज्ञान चारित्र तास बाराधि मानिये ॥
विद्या सुनन्द गुरू हमारे काम जगको हर बली ।
श्री मल्लभूषण जी भट्टारक सकल दुरनय जिन दली ॥७६॥

दोहा

जैन शास्त्र षटमत विषै, है परवीन दिनेश ।
सो शिव लक्ष्मी दो मुझै, किरपाधार बिशेश ॥७७॥
ब्रह्मनेमिदत देव वच, बरनो यही पुरान ।
ताकी भाषा को करी, बखत रतन हितठान ॥७८॥

इति श्रीआराधनासार कथा कोष विषै श्रीसमंतभद्र स्वामिन् दर्शन ज्ञान उद्योत कथा सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीसंजयंत मुनिकी कथा प्रारंभः

मगलाचरण सवैया ॥ तेतीसा ॥ नं० ५

श्रीअरिहंत जिनेश्वरजी तिनके चरनारसुबिंद जजेरे । है सुपवित्र महा सुख दाय हरै दुख ताप सबै जन केरे ॥ ताह नमूं सिरनाय अबे तुम हूजे दयाल प्रभू अब मेरी । श्रीपतको उद्योतनकीन कहूं जिनकी सुकथा अब टेरी ॥ १ ॥

दोहा

संजयंत नामा मुनी, प्रगट जगत में सार ।
ताकी कथा सुहावनी, बरनूं बुध अनुसार ॥ २ ॥

चौपाई

सब दीपन मध जम्बूदीप । जो सब जगमें दिपै महीप ॥
मेरु सुदर्शन तामध जान । देश विदेह सुपश्चिम थान ॥ ३ ॥
गंध मालनी देश बिख्यात । वीतशोक नगरी अबदात ॥
तिसको वैजयंत नर नाथ । भव्यश्री रानी तिस साथ ॥४॥
तिनके संजयंत सुजयंत । जुग्म पुत्र उपजे गुणवंत ॥
एक दिना चपला बिकराल । अम्बरतें जुपड़ी तत्काल ॥ ५ ॥
ताकर पट्ट बंध जुकरिंद । भस्म होत देखो सुनरिंद ॥
तब मनमें बैराग उपाय । दोनों सुत लीनो बुलवाय ॥ ६ ॥
राज संपदा को बहु भार । तिनको देन लगो तत्कार ॥
तब दोनों सुत बोले बैन । सुनो तात हम बिनती अैन ॥७॥
आप चतुर हो अरु शुभ राज । होते क्यों छोड़ो महाराज ॥
हमतो ग्रहण करैं नहि कदा । पंडितजन कर बर्जित सदा ॥८॥
ऐसे वच सुन नृप बुधलीन । पोते को बुलवाय प्रवीन ॥
संजयंत को पुत्र महान । बिजयवंत तिस नाम सुठान ॥९॥
ताको राज संपदा दई । युगम पुत्र जुत दिक्षा लई ॥
नाना बिध तप तपैं मुनीश । बैजयंत नामा जगदीश ॥ १० ॥
शुक्ल ध्यान में अग्नि प्रज्वाल । चार कर्म नाशै तत्काल ॥
जबही केवल लक्ष्मी पाय । पूजन को आए सुरराय ॥११॥

दोहा

तिन अमरन में नाग पति, आयो छबी निहार ।
तिस विभूति सुजयंत मुनि, लखकर कियो निदान १२
इस तप के परभाव तें, दूजे जन्म मझार ।
मेरे ऐसी संपदा, हूजो सुख दातार ॥ १३ ॥

इम निदान धर मरन कर, भंट असुरन के राय ।
नागपती धरनेंद्र जो, उपजे पुन्य वसाय ॥ १४ ॥

छन्द

अब संजयंत मुनिराई । तप उग्र करैं अधिकाई ॥
इक पक्ष तने उपवासी । तनक्षीण अधिक सुखरासी ॥१५॥
बाईस परीषह जेहैं । सब सहैं मुनीश्वर तेहैं ॥
कानन में धारो ध्याना । तिष्टे थिर मेर समाना ॥ १६ ॥
इक दिन रबि सन्मुख कीना । पद्मासन ध्यान प्रवीना ॥
आतम से लव जिन लाई । तिष्टे थे श्री मुनिराई ॥ १७ ॥
खग विद्युदंष्ट्र अयानो । अम्बर में करै पयानो ॥
मुनि ऊपर गमन करंतो । थंभयो बिमान सुतरन्तो ॥ १८ ॥
यह देख खेट तिहबारा । मनमांही करत बिचारा ॥
है क्या कारन यह भायो । मुनि लखते क्रोध उपायो ॥१९॥
परभव की बात बिचारी । उपसर्ग करो अतिभारी ॥
मुनि आतम मांहि पगे हैं । वहु कष्ट थकी नचिके हैं ॥२०॥

दोहा

जैसे पवन प्रचंड से, हलै न मेरु महान ।
त्यों मुनि इस उपसर्ग ते, चिके न दया निधान ॥२१॥
विद्या के परभाव ते, विद्युदंष्ट्र अयान ।
संजयंत को ले चलो, क्रोध हिये में आन ॥२२॥

चाल ॥ अहो जगत गुरु की

भरत क्षेत्र में लाय पूरब दिशा भली है । सिंधुवती को आदि नदी जहँ पांच मिली है ॥ तहँ मुनिवर को क्षेप देश के जन बुलवाए । यह पापी अति दुष्ट वैन इस भाति सुनाए ॥२३॥

अहो सबै सुन लेहु यहै रात्तस अधिकाई। तुम भत्तरा के हेत यहां आयो दुखदाई ॥ याको हनो तुरंत यही में बैन सुनायो। तिस बच सुन तत्कार सबैजन क्रोध उपायो ॥ २४ ॥

काष्ट खंड पाषान और तहँ त्रास अपारा। देत भएतेमूढ़ तहां मुनिवर को मारा ॥ तौभी दीन दयाल क्रोध रंचक नाहि आनो। शत्रु मित्र सम जान चित्त आतममें ठानो ॥ २५ ॥

चारों कर्म प्रचंड घातकर केवल पायो। तबही हने अघाति वास शिवथान करायो ॥ ताही छिनके मांहि सुरासुर पूजन धाए। लघु भ्राता धरनिंद्र भक्ति कर तेभी आए ॥ २६ ॥

दोहा

मुनिवर काय बंधी लखी, क्रोध कियो फणधार।
सब पापी मम भ्रातको, मारो बहु परकार ॥ ३७ ॥
इम बिचार धरानिंद्र कर, नागफांस कर धार।
सर्व जननको पकड़कर, दृढ़बांधे तत्कार ॥ २८ ॥

चौपाई

तब सब जन इम करी पुकार। अहो नाग पति सुनो उदार।
हमरो दोष रंच नहि मान। कियो सुविद्युद्दंष्ट्र अयान ॥ २९ ॥
ऐसे दीन बचन सुन जबै। छोड़ दिए सबही जन तबै।
अरु वह पापी विद्युदंष्ट। ताको बांध दियो बहु कष्ट ॥ ३० ॥
वारधिमें डोबन तिहवार। लागो फणपत्ति क्रोध सुधार।
तबै दिवाकर निरजर आय। कहत भयो इनको समझाय ॥ ३१ ॥
दीन जीव इह भोफणराज। तिहके मारन तें क्या काज।
इसका उनका वैर महान। चार जन्मते है दुखदान ॥ ३२ ॥
ताकर इन उपसर्ग कराय। कोप करो मत तुमफणराय।

ऐसे बच सुनकर नागेंद । कहो करूं कैसे परबंद ।
तबै दिवाकर देव महान । कहत भयो तुमसुनोसुजान ।
पूरब भवको इन सम्बंद । बैर तनो भाषो गुण ब्रंद ॥ ३४ ॥

पद्धड़ी

जम्बु सुद्वीप मधमें विख्यात । शुभ भरत क्षेत्र तामें सुहात ।
तिस मांहि सिंहपुर नगरजान । तहँ सिंहसैन नरपतिमहान ॥ ३५ ॥
नारी सु रामदत्ता प्रवीन । श्रीभूत परोहत कपटलीन ।
सुखसों तिष्टै निज नगर माहि । इकपद्मखंडपुर और थाहि ॥ ३६ ॥
ताको बासी इक बनकजेह । गुण उज्जल सेठसुमित्र तेह ।
तिस नारि सुमित्रा चित उदार । बारधदत नामा पुत्र सार ॥ ३७ ॥
सत सौच विषय तत्पर सुजान । बाणिजके हेत कियोपयान ।
सो सिंह पुरी आयो तुरंत । ले पांच रतन उत्तम महंत ॥ ३८ ॥
श्रीभूत परोहित पास जाय । ताको सौंपे बहु हर्षपाय ।
फिर उदध दत्त इम बच बखान । यह लेवैंगे निज रतआन ॥ ३९ ॥
इम कहजो गयोसागर मझार । बहु द्रव्य कमायो करब्योहार ।
प्रोहन भर निजघरको चलंत । सोपाप उदय फटयो तुरंत ॥ ४० ॥
यह करम जोग कर तटलहाय । सिंहपुरमें आयो दुखत काय ।
श्रीभूत पास निज रतजेह । मांगे पांचों सौंपे जो तेह ॥ ४१ ॥
तब श्रीयभूत इम बच बखान । सब जनके आगे हर्षठान ।
में तुमसे जो पाहिले कहाय । यहभयो बावलोधन गंवाय ॥ ४२ ॥
काहू जनको तोहमत अवार । लेसी इसही जु सभा मझार ॥
अब भए ठीक मम बचन येह । ऐसें निरमोलिक रतनजेह ॥ ४३ ॥
अवनीपर कोने कित लहाय । काहू नरपै कबहू लखाय ।
ऐसे सबजनते कुटिल बैन । भाषे प्रत्यक्ष परतीत दैन ॥ ४४ ॥

दोहा

इम कहकर याको तबै, दियो निकार तुरंत ।
लोभी जन या लोकमें, क्या नहि काज करंत ॥ ४५ ॥
जब यह सेठ समुद्रदत, नगरी मझ पुकार ।
पांच रतन श्रीभूत मम, देवै नाहि लगार ॥ ४६ ॥

चौपाई

ऐसे नित प्राति करै पुकार । महल निकट तहँ रैन मझार ।
इस प्रकार बीते षट मास । राजा न्याव करै नाहि तास ॥ ४७ ॥
ऐके दिन रानी इम कही । नृप इस न्याव करोक्योंनही ।
बोले राजा गहलो एह । तब रानी इम उत्तर देह ॥ ४८ ॥
यह नितप्राति इक बचन सुनाय । याको किम गहलोठहराय ।
सुन प्यारी नरपति इमकही । याको न्याव करो तुमसही ॥ ४९ ॥
रानी रामदता सुखदाय । समुद दत्तको निकट बुलाय ।
वासों पूछो भेद तुरंत । उन सब साच कहो बिरतंत ॥ ५० ॥
फिर यहरानी चतुर सुजान । श्रीयभूत ते जूवा ठान ।
पांच रतन लेनेको सही । ताघर दासी भेजत भई ॥ ५१ ॥
विप्र नार तबही नट गई । रानी जीत अंगूठीलई ।
सहनागी यहदई पठाय । तोपगा रतन दिएनाहे ताहि ॥ ५२ ॥
फेर जनेऊ जीत सो लियो । दासीके करमें तादियो ।
सो पहुंची लेकर तत्कार । श्रेयभूतके ग्रेह मझार ॥ ५३ ॥
ताकी नारीको दिखलाय । तब उन चितमें अति भयपाय ।
पांचो रतन सोंप उनदिए । दासी करतें रानी लिए ॥ ५४ ॥
[illegible] रानी राजा के पास । रतन दिखाए जुत परकास ।
[illegible] निज रतन मांहि मिलाय । सेठ तनुज को तबै दिखाय ॥ ५५ ॥

सोरठा

अपने रतन प्रवीन, तू चुनले इन मांहि ते ।
तब उन काढ़ सुलीन, अपने ही पांचों रतन ॥५६॥
जे नर हैं सतवन्त, ते नहि छोड़ैं सांचको ।
भूलैं नही महंत, बहुत काल बीते कोऊ ॥ ५७ ॥

काव्य

तब नरिंद्र मनमांहि क्रोध कीनो अतिभारी । लीने निकट बुलाय हुते जेते अधिकारी ॥ इस पापी श्रीभूत चोरको दंड क्या दीजे तब मंत्रिन इम कहे बैन हमरे सुनलीजे ॥ ५८ ॥ तीन दंड जग मांहि इसी लायक हैं नामी । यातो गोवर खाय नही सरवस दे स्वामी । अथवा बत्तिस मुष्ट मल्लकी तनमें खावे । यह ही इसके योज्ञ करो जो तुम मन आवै ॥५९॥

दोहा

तब पापी श्रीभूतको, लीनो नृपति बुलाय ।
तीन दंड क्रमंत दियो, मरो तबै दुख पाय ॥६०॥
आरत ध्यान प्रभावते, उपजो सर्प कराल ।
नृपत तने भंडार में, मानो दूजो काल ॥६१॥

चौपाई

बुद्धिमान जो सागरदत्त । वनमें पहुंचो हर्षित चित्त ॥
नाम सुधर्माचारज पास । धर्म स्वरूप सुनो गुणरास ॥६२॥
दिक्षा ग्रहण करी तत्काल । नाना विध तप करत त्रकाल ॥
पूरण थिर कर उपजो जाय । सिंघसेन जो है नरराय ॥६३॥
रानी रामदत्त गुणखान । तिनके पुत्र भए धीमान ॥
निरमल कीरत धारी जान । सब जगमें विख्यात महान ॥६४॥
एक दिना हरसेन नरिंद्र । निज भंडार गए गुणवृंद ॥

श्रीयभूत चर अहि तिहथान । उपजा था दीरघ तन आन ॥६५॥
डसत भयो नरपति को सोय । तबही मरन प्रापति होय ॥
नाम सल्यकी बनमें जान । उपजो हस्ती अतिबलवान ॥६६॥
इस अंतर नृप मरण निहार । मंत्री नाम सुघोख अवार ॥
क्रोध धार कर अहि तत्कार । बुलवाए सब तिसही बार ॥६७॥

दोहा

तब मंत्री कहतो भयो, सुनो नाग सब एह ।
अगन कुंड परवेश कर, जावो अपने गेह ॥ ६८॥
तबही सब परवेश कर, गए सुनिज निज धाम ।
श्रीयभूत चर दुष्ट यह, आवत भयो सुताम ॥ ६६ ॥
तब सुघोखना सर्पसूं, कहै सुबैन सुनाय
क्या तो बिषको चूसले, नातर तू जरजाय ॥७०॥
तबै सर्प कहतो भयो, में अगंध कुल मांहि ।
उपजोहूं ताते जहर, चूसूंगो अब नाहि ॥७१॥

सोरठा

इम वच कह विषधार, अगन कुंडे में तब जरो ।
चन सल्य की मझार, कुरकट अहि होतो भयो ॥७२॥
जो पापी जगमांहि, क्रूर भाव ना तजत हैं ।
ते खोटी गाति जांहि, यामें संशय को नही ॥७३॥

अडिल्ल

रामदता नृप नार शोक पतिको कियो। जाय कनकश्री व्रतका पै चारित लियो ॥ सिंहचंद्र नृप पुत्र मरन लख तातको । है विरक्त चिन राज दियो लघु भ्रातको ॥७४॥ पूरन चंदको थाप आप वन में गयो । सुव्रत नाम मुनीश्वर पे चारित लियो ॥ तप नाना परकार किये मन लायके । मन परजय शुभ ज्ञान सो उपजो आयके ॥ ७५ ॥

चौपाई

एक दिना तप कर तन छीन । रामदत्ता आयो बुधलीन ॥
देख सिंहचंद्र मुनिराय । चार ज्ञान धारी सुख दाय ॥ ७६ ॥
भक्ति ठान थुत इन मुनि करी । आर्या जी ऐसे उच्चरी ॥
हे स्वामिन धन कूख हमार । जामैं लीनो तुम अवतार ।७७।
तुम लघु भ्राता पूरन चंद्र । धर्म ग्रहण कब करे मुनिंद्र ॥
ऐसे बच सुन दीन दयाल । कहत भए निर्मल गुणमाल ॥७८॥
देख मात संसार चरित्र । ताको बरणन सुनो बिचित्र ॥
सिंहसैन हमरो जो तात । सर्प थकी जो मरो विख्यात ॥७९॥
उपजो वह बन सल्य मँझार । हस्ती की परयाय सुधार ॥
अहो मात मुझको अवलोय । आयो मारन सन्मुख जोय ।८०।
तबमें ऐसो बचन बखान । होकरिंद्र मोको पहचान ॥
तुम थे सिंहसैन नर राय । में सुत तुम प्यारो अधिकाय ॥८१॥
सिंहचंद्र नामा मुझ जान । अब गजेंद्र हो मारन आन ॥
क्या वह बात भूलवो गयो । ऐसो बच मैंने तब कहो ॥ ८२ ॥

दोहा

ऐसे सुन करके तबै, अहो मात गजराज ।
जाती सुमरन होय के, अश्रुपात ढलकाय ॥८३॥
मुझ चरणन ढिग तिष्टयो, तब मैं धर्म सुनाय ।
ताह श्रवण करके तबै, सम्यकदर्श लहाय ॥८४॥

पद्धड़ी

तब वंह करिंद्र अणुव्रत्तवंत । प्राशुक अहार जल लेत संत ॥
तब छीण भयो सोखी कषाय । तटनी तट करदम में फँसाय ॥५॥
तिस अवसर में श्रीभूत जीव । जो कुरकट नाग भयो अतीव ॥
तिस आय डसो गजराज भाल । सो जपत मरो नवकार माल ।८६।

सन्यास मरन करके तुरन्त । सहस्रार सुरग उपजो महंत ॥
श्रीधर नामा सुर दीप्तकाय । नाना प्रकार संपत लहाय॥ ८७ ॥
इस धर्म थकी क्या क्या नहोय । याते अधिकी नहि वस्तु कोय ॥
अरु वह कुरकट मरके अयान । पायो चौथे तिन नर्क थान ।८८।
हेमात वही गजराज काय । भीलों के पति ने देख आय ॥
तिसके दोउ दांत लिए उपार । अरु मस्तक के मोती निकार ।८९।
लेकर धन मित्र जुसार्थ बाह । ताको दीने अति हर्ष पाय ॥
सो बनक पती लेकर प्रवीन । नृप पूरनचंद को सौंपदीन ॥९०॥
नृप दांत तने पाये वनाय । सो पलंग माहि दीने लगाय ॥
अरु मोतिन को कीनो सुहार । पहिरो रानी हिरदे मँझार ॥९१॥
हे मात इसी बिध तुम निहार । संसार तनोगत मन मँझार ॥
अब तुम पूरनचंद पास जाय । जिन धर्म ग्रहन ताको कराय ९२
तब ब्रतका मुनिको नमन ठान । फिर नृप मंदिर पहुंची महान ॥
तब पूरनचंद निज मात जान । उतरो पलंग ते हर्षवान ॥९३॥
बहु बिनय ठान हिरदे मंझार । भूपति तिष्टो करनमस्कार ।
तब आर्याजी सबही उचार । इन पिता तनो बिरतंतसार ॥ ९४ ॥
अरकहत भई सुन पुत्रजोग । यह पाये तैं कीने मनोग ।
निज तात तने यह रदनजान । अर मोती वाकेसीसथान ॥ ९५ ॥
ताको शुभ हार सुतैं कराय । निज रानी को दीनोपहराय ।
इम सुनके पूरनचंद संत । बहु शोक अगन करके तपंत ।
जिम दावानल कर गिरतपाय । तैसे नरिंद्र बहु तपतकाय ।
अति मोह नकी पाये मंगाय । ताको दृढ़ आलिंगन कराय ॥ ९७॥

दोहा

हाय हाय मम तातजी, ऐसे करत पुकार ।
अंतेपुरके जन सबै, रुदन कियो तिहवार ॥ ९८ ॥

चंदन अच्छत पुष्पले, पूजा करी अपार।
दांततथा मोतीनकी, चितमें मोह सुधार ॥ ९९ ॥
संसकार ताको कियो, अगन माहि पधराय।
मोही जन या जगतमें, क्या क्या नाहि कराय ॥ १०० ॥

सोरठा

पूरन चंद्र प्रवीन, श्रावक धर्म सुपालयो।
नाक बास तिन लीन, महा सुक्र दशमों सुरग ॥ १ ॥
आर्याजी बृत पाल, उसही स्वर्ग बिषै गई।
भयो देव गुणमाल, नाना बिध सुख भोगवै ॥ २ ॥

चौपाई

चार ज्ञान धारी मुनिराय। सिंहचंद्र नामा सुखदाय।
शुद्ध चरित्र तने परभाय। भए अहमिंद्र सुग्रीवकजाय ॥ ३ ॥
या अंतर अब सुनोसुजान। येही जम्बूद्वीप महान।
ताकी दच्छिण भरत निहार। तामध बिजयारध गिरसार ॥ ४ ॥
श्री सूर्यप्रभ पुर तहँ थाय। सुरावर्त तामें नरराय ॥
नाम जसोधर रानी जास। धरै रूप लावन्य प्रकास ॥५॥
पूजा दान ब्रत्त अधिकाय। भलो शील पालै सुखदाय।
ताके सिंहसैन चर आय। रस्मबेग सुर नाम लहाय ॥६॥
इक दिन सुरावर्त भूपाल। चित बैराग भयो तत्काल ॥
रस्म बेग सुत बुद्धि निधान। ताहि राज दे मुनि बृतठान ॥७॥
अब यह रस्म बेग बडभाग। हिरदे में धरके अनुराग ॥
सिद्ध कूट चैत्यालय जाय। भक्ति सहित बहु नमन कराय ॥८॥
तहँ मुनिवर जगके रिछपाल। हरीचंद्र नामा गुणमाल ॥
तिन ढिग धर्म सुनो नरनाथ। भगवत भाषित जग विख्यात ॥९॥
तबही तजकर राज समाज। रस्मबेग कीनो निजकाज ॥

एक दिना यह गहन मझार। महा गुफा में ध्यान सुधार ॥१०॥
क्षीण शरीर खड़े तप लीन। निज आतमको अनुभव कीन ॥
अब यह पापी कुरकट थाय। चौथे नर्क थकी निकसाय ॥११॥
याही बनमें अजगर भयो। अति दीरघ तन ताने लयो ॥
करत फुँकार सुबारम्बार। तनको भस्म करै तत्कार ॥१२॥
मुनि सन्मुख आयो मुखफार। भक्षण हेत बदन बिकरार ॥
अहिको आवत देख मुनिंद। ध्यान धार तिष्टे गुण बृंद ॥१३॥
उस पापी ने मुनि भख लीन। तब जोगिंद्र काय तजदीन ॥
उपजे अष्टम स्वर्ग मझार। प्रभु आदित्य नाम शुभधार ॥१४॥
श्रीजिन चरण कमल को भ्रंग। बढ़ी रिद्ध सुख लहो अभंग ॥
अरु वह अजगर तज निजकाय। उपजो चौथे नर्क सुजाय ॥१५॥

सोरठा

कैसो नरक स्थान, छेदन भेदन है जहां।
सूलारोपन ठान, ऐसेदुख भोगत भयो ॥ १६ ॥
दीरघ काल प्रमान, नाना बिध दुखको सहो।
कीनो पाप महान, ताको फल पायो यही ॥१७॥

चौपाई

तब चक्रायुधजी महाराज। बज्रायुध को दीनो राज ॥
आप जाय निज दिक्षा लेह। बहु बिध तप कीनो गुण गेह ॥१८॥
अब जो वज्रायुध बड़भाग। परजा पालै जुत अनुराग ॥
बहुत काल तिन कीनो राज। कारण लख चितवो निजकाज ।२०।
अपने तात मुनिंद्र उदार। तिन ढिग लीनो संजम भार ॥
अब वह अजगर जीव मलीन। नरक थकी निकसो दुखलीन ॥२१॥
भयो भयानक भील सुआय। पाप थकी क्या क्या नहि पाय ॥
वज्रायुध मुनि दीन दयाल। परवत नाम प्रयंग मझार ॥२२॥

कायोत्सर्ग ध्यान धर धीर। तिष्ठ थे साहस जुत बीर ॥
तहँ वह पापी भील सुआय। बान थकी भेदी मुनिकाय ॥२३॥
सो गुरु पुन्य तने परभाय। सरवारथ सिद्धि उपजे जाय ॥
तेतिस सागर आयु लहाय। एक हस्त की उज्जल काय ॥२४॥

दोहा

अब यह पापी भील मर, नर्क सातवें जाय।
छेदन भेदन आदि बहू, नाना वेदन पाय ॥२५॥
इस अंतर अहिमिंद्र सो, करके पूरी आय।
भए जगत विख्यात यह, संजयंत मुनिराय ॥२६॥

सोरठा

पूरनचंद सुराय, कितने ही भव शुभ लहे।
बेजयंत मुनिराय, कर निदान फणापति भए ॥२७॥

पद्धड़ी

अब तज कर सप्तम नर्क थान। वह भील जीव पापी अयान ॥
नाना कुयोनिमें भ्रमर ठान। उपजो ऐरावत क्षेत्र आन ॥२८॥
तहँ भूत रमन नामा उद्यान। जहँ बेगमती सरिता बखान ॥
तहँ अंग नाम तापसि रहाय। संबरनी ताकी नार थाय ॥२९॥
तिनके ही सुत उपजो अयान। हरि सिंह नाम ताको बखान ॥
श्रीभूत परोहित जीव जान। पञ्चाग्न तपस्या सो करान ॥३०॥
वह मरकर कर्म थकी लहाय। खग विद्युदंष्ट भयो सुआय ॥
सो पूरब बैर थकी अवार। मुनिको उपसर्ग कियो अपार ॥३१॥
मुनि सम भावन सह धीर काय। जिम मेर सदा निश्चल रहाय ॥
बाईस परीषह जीत लीन। परगट तपको उद्योत कीन ॥३२॥
सो कर्म नाश लह मोक्ष थान। गुण अष्ट तहां पाये महान ॥
बच कहे दिवाकर देव सार। सुन भो धरनेंद्र महा उदार ३३

संसार तनी गति इम निहार । चित से दीजे अब क्रोधटार ॥
अब नागपास ते दो छुटाय । यह दीन बिचारो रंक थाय ॥३४॥
इम नागराज बच सुन तुरन्त । यों कहत भया सुन सुर महंत ॥
मैने याको छोड़ो अबार । पण यह दुरातमा पाप धार ॥ ३५ ॥
इस के मद नाशन हेत तेह । मैने सराप दीनो जु एह ॥
इसके कुल में विद्या जु कोय । काहू जनको नहि सिद्धहोय ३६

दोहा

होवे तो या विध थकी, करै सबै मनलाय ।
संजयंत मुनि राय की, प्रतिमा लेय बनाय ॥३७॥
ताको ध्यान सुलित करैं, पूजैं गंध जुलाय ।
नारी तब विद्या लहैं, पुरुषन को नहिं थाय ॥ ३८ ॥
ऐसी कह धरनेंद्र तब, खग छोड़ो तत्कार ।
फेर सुधी निज थानको, जात भयो तिहबार ॥३९॥

कवित्त

ऐसे संजयत मुनि ईश्वर, कठिन तपस्या को जिनधार ।
तप रूपी लक्ष्मी को वर कर, फिर पायो शिव सुख भंडार ॥
सो भगवान हरो मम कालुष, सम निज दीजे सर्म अपार ।
तप उद्योत किया जगमें इन, तैसे और करो हितधार ॥४०॥

गीता छन्द

श्री कुंद कुंद सो बसे नभसें मल्ल भूषण इंदु ही ।
सो गुरु हमारे जानिये इम ब्रह्मनेमीदत कही ॥
संसार सागर में पुरोहन ज्ञान वारध है यही ।
श्री जिन पदाम्बुज सेवने को भ्रमर सम जानो सही ॥ ४१ ॥
चारित रतन भंडार है मुनि भव्यगण सेवैं सदा ।
सोश्रेष्ट मंगल देउ हमको स्वर्ग शिव लक्ष्मी मुदा ॥

यह तप उद्योतन कथा पूरन करी छंद बनायके।
कहै बखत रत्न सुनो सबै जन चित्तको हरषायके ॥ ४२ ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष बिषै वृजयत मुनि तपोद्योतन कथा सम्पूर्णम्

अथ अंजन चोर के निशंकित गुण की

कथा प्रारम्भः ॥ नं० ६

मंगलाचरण ॥ दोहा

सुख दाता सर्वज्ञ के, चरण कमल सिर नाय।
कथा निशंकित सुगुण की, बरनूं चित्त लगाय ॥१॥
अंजन चोर विख्यात जग, तिन कीनो उद्योत।
तप कर कर्म खिपायके, भये सुपूरन जोत ॥ २ ॥

चौपाई

मगध देश इस भरत मँझार। राजग्रही नगरी तहँ सार ॥
तामध वनकपती अभिराम। जिनदत्त नाम महा गुणधाम ॥३॥
जिन पदाब्ज सेवनको अंग। पालै श्रावक वृत्त अभंग ॥
पूजा दान करै बड़भाग। सुनै शास्त्र चितधर अनुराग ॥ ४ ॥
इक दिन सेठ महा बुधिवान। चौदश के दिन प्रौषध ठान ॥
रात्री विषय मसान मँझार। मन बच काय बैराग सुधार ॥५॥
कायोत्सर्ग ध्यान तिन दीन। निज आतमको अनुभव कीन ॥
इस अंतर जिन भक्त सुलीन। अमित प्रभु सुर एक प्रवीन ॥६॥
दूजा मिथ्या दर्शन वान। विद्युत प्रभ सुर नाम सुजान ॥
तिन दोनो की चरचा भई। निज निज धर्म टेक तिन गही ॥७॥
धर्म परीक्षा लेने काज। अवनी पै आए सुर राज ॥
एक तापसी थो जमदग्न। ताको तपते कीनी भंग्न ॥ ८ ॥

पीछे जुग सुर चित उमगाय । जिनदत्त ध्यान लखो अधिकाय ॥
कायोत्सर्ग धरै बुधवान । भूम मसान विषै चित ठान ॥ ९ ॥
अमित प्रभु सुर हर्षित होय । विद्युतप्रभते बोलो सोय ॥
उत्तम चारित धारन हार । श्री मुनिवर हैं तोहि निहार ॥१०॥
पण इक श्रावक सेठ महान । याको देखा निश्चल ध्यान ॥
तुम में समरथ जो अधिकाय । देखैं इनको ध्यान चिगाय ॥११॥
तब विद्युत प्रभ सुन वच एव । रैन अँधेरी में बहु भेव ॥
नाना विध उपसर्ग अयान । करत भयो भयकारी जान ॥ १२ ॥
तो पण सम्यक दृष्टी धीर । ध्यान थकी न चलो बरबीर ॥
होत प्रभात समय युग देव । नमस्कार कीनी बहु भेव ॥१३॥
माया दूर करी तत्कार । अस्तुति कीनीं बहु परकार ॥
तुम सम दृष्टी जगत मँझार । भव्य शिरोमणि थिरमनधार १४

दोहा

नभ गामी विद्या तबै, दीनी सुर हरषाय ।
चित्त प्रसन्न करली तब, अहो सेठ सुखदाय ॥१५॥
अरु जो काहू पुरुषको, यह विद्या तुम दोय ।
नमोकार विध ठानके, ताको सिद्ध सो होय ॥१६॥

चौपाई

इम कहकर सुर निज घरजाय । अब यह सेठ महा सुखपाय ॥
सम्यक् वंत महा गुणवान । विद्या के परभावहि जान ॥ १७ ॥
स्वर्ग मोक्ष दाता जिन गेह । सदा सास्वते बंदन तेह ॥
भक्ति ठान शुभ द्रव्य मगाय । पूजे मेर कुलाचल जाय ॥१८॥
इक दिन सोमदत्त भूपाल । हो खुशाल पूछो तत्काल ॥
अहो सेठजी दया निधान । जैन धर्म में लीन महान ॥ १९ ॥
हो स्वामी तुम उठ परभात । ले सामिग्री नित कहँ जात ॥

भले बचन जिनदत्त उचार । बिद्या लाभ हुई मो सार ॥२०॥
ता प्रभावकर गमन अकाश । सुबरन रतन मई परकाश ॥
ऐसे जिनवर धाम पवित्त । तहँ पूजन मैं जाऊं नित्त ॥ २१ ॥
सोमदत्त बिनती तब करी । हो स्वामिन बिद्या गुण भरी ॥
मोको दीजे चित्त दयाल । तो मैं चालूं तुम संग काल ॥ २२ ॥
भली गंध पुष्पादिक लेय । पूजो श्रीजिन प्रतिमा तेह ॥
तुमरे पुन्य तने परभाव । भक्ति बंदना करुं सो जाय॥ २३ ॥

दोहा

तबै सेठ कहते भए, विद्या की बिधि जेह ।
सो सुन कर माली चतुर, निज उर धारी तेह ॥२४॥

सवैया इकतीसा

चौदश की रैन कारी भूम जो मसान माही, महा भयकारी बट बृत्त तले जायकै । अगन की ज्वाला सम शस्त्र जो प्रचंड महा ताके नीचे गाड़ दीजे चित्त हरषाय के ॥ एक शाखा बिचे सत लड़ी को प्रमाण जामें, ऐसे इक छींको तहँ दीजो लटकायके । षट उपबास धार ऊरध सो मुख कीनो, पुष्प आदि द्रव्य लेय पूजत सो धायके ॥ २५ ॥

दोहा

छींके में बैठत भयो, नमोकार उच्चार ।
एक एक लड़ छेदये, यह बिध किया बिचार ॥२६॥
नीचे शस्त्र निहार के, भय लागे तत्कार ।
सोमदत्त मन चिन्तवे, मन कायरता धार ॥२७॥

काव्य

जो कदाचि यह सेठ बचन मिथ्या होजावैं ।
तो मम प्राण बिनाश होंय इक पल नलगावैं ॥

इस संशय मन आन चढ़ै उतरै बहु बारी ।
चित उद्वेग मझार मूढ़ निश्चय नहि धारी ॥ २८ ॥
जै जिनवर जगदीश सुरग शिवके दातारं ।
तिनके बचन महान मूढ़ निश्चय नहि धारं ॥
तिनके अवनी मांहि सिद्ध कहो कैसे होई ।
भटकैं जगत मझार दुःख बहु पावें सोई ॥ २९ ॥

(चौपाई)

इस अंतर इक गणिका जान । अंजन सुंदरि नाम बखान ॥
तिसको प्रीतम अंजन चोर । तासों बच इम भाषे जोर ॥३०॥
तिसही रात्रिको कहो सुनाय । अहो प्राण बल्लभ सुख दाय ॥
प्रजा पाल राजा की नार । कनक प्रभा ताके गल हार ॥३१॥
अति सुंदर तिस कांत अनंत । सो मुझको लादेय तुरंत ॥
जो अवार लावै नहि हार । तो मेरा तू नहि भरतार ॥३२॥
इम सुन तस्कर वेश्या भक्त । हार विषय चितकर आशक्त ॥
लेन गयो निज काय छिपाय । नृप मंदिर में बुद्धि पसाय ।३३।
लेय हार निस तिमिर मझार । आवै था गणिका के द्वार ॥
तिसकी द्युतिकी क्रांति अपार । देख तबै दौरो कुतवार ॥३४॥
तब इन हार दियो छिटकाय । भाग मसान भूमिमें आय ॥
सोमदत्त को कायर जान । तासों पूछो आदर ठान ॥ ३५ ॥

दोहा

कहो वीर क्या करत हो, काज बहुत दुखदाय ।
तब बोले विद्या तनी, कथा कही समझाय ॥ ३६ ॥
सुनके अंजन चोर तब, मंत्र लेय नवकार ।
उनहीं सिकने गम्य कर, तिनमें दृढ़ता धार ॥३७॥

छप्पैय

सेठ वचन जे कहे सत्त निश्चय कर सोई। यो मन संशय भान चढ़ो छींके पर सोई ॥ सलक लड़ी इकबार छेद तत्कार सुदीनी। जितने भ्रम नहि पड़े तिते विद्या गुण भीनी ॥ सो विच मांहि थांबल भई, हाथ जोड़ विनती करैं। हो देव हमें आज्ञा करो, जासे तुम कारज सरैं ॥ ३८ ॥

पद्धड़ी

तब हर्ष सहित अंजन बखान। गिर मेर विषै जिन धाम जान।
तहँ पूजा सेठ करै उदार। लेचल ताढिग मोको अवार ॥ ३९ ।
सुनतेही विद्या हर्षवंत। जासेठ पास थापो तुरंत ।
जिन धर्म थकी क्या २ न होय। यासम जगमें दूजा नकोय ॥ ४० ॥
अंजन निरभय चित भक्ति आन। जिनदत्त सेठको नमन ठान।
अरु कहत भयो तुमरे पसाय। नभ गामी विद्या में लहाय ॥ ४१ ॥
हो धीर वीर करुणा निधान। जासों होवै मोहि सिद्धथान।
सोही मंतर दीजे दयाल। तुम परउपगारी सुगुण माल ॥ ४२ ॥
तब सेठ चित्त हरपो प्रवीन। अंजनको अपने संगलीन।
गुणाकर मंडितमुनिवरन नाम। कर कष्ट काय जीतो सुकाम। ४३।
तिनके ढिग पहुंचे हर्षयुक्त। मुनि चरण नमो बहु भक्तियुक्त।
जिनदत्त तबै रंजाय मान। अंजनको जिन दित्ता महान। ४४।
गुरुके ढिग दिलवाई तुरंत। तब इन व्रतलीने हरपवंत।
श्री अंजन मुनि बहुतपतकाय। तिसदित्ताकोपालनकराय ॥ ३५ ॥
क्रमते अष्टापद गिरसु आय। तहँ कर्म नाश केवल लहाय।
सुर असुरनकर पूजित महान। होकरपायो फिर मोक्षथान ॥ ॥ ॥
यह निःशंकित गुणके प्रभाव। अंजन निरंजनपदलहाय।
अरुभीजो पंडित बुद्धिवान। ते इस गुणको पालो महान। ४७।

यह कथा छटी पूरन बिशाल । बरनी कवि नेमदित रिशाल ।
ताको अनुसार करी बखान । बखतावर रतन सुहरप ठान ॥ ४८ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषै अजन चोरने निःशंकित गुण पाला ताकी कथा सम्पूर्णम्—

अथ निःकांक्षितगुणअनंतमतीने पाला

ताकी कथा प्रारम्भः नं. ७ ॥

मंगलाचरण * अड़िल्ल

सुखकारी अरिहंत नमूं सिर नायके । निःकांक्षित गुण पालो जिन हरषायके ॥ ताकी कथा रिशाल सुनो शुचिकर हियो । अनंतमती बाईने उद्योतन कियो ॥ १ ॥

चौपाई

अंग देश चम्पापुर जान । बसुबरधन राजा तिह थान ।
लक्षमी मती नार तिसगेह । नृपसों ताको अधिकसनेह ॥ २ ॥
तिसही नगरी में धनवान । प्रयेदत्त श्रेष्टी धीमान ।
पंच-प्रकार गुरु बचन मझार । सम्यक जुत सरधा चितधार ॥ ३ ॥
अंगवती तिसगेह सुनार । धरम करममें चतुर अपार ।
तिन दोनोंके तनुजा भई । अनंत मती तिन संज्ञादई ॥ ४ ॥
मुखकी आभा जृम्भ सुपंक । तिस देखे लागे रतरंक ।
शोभा आदिक गुणते जान । तिनही रतननकीहै खान ॥ ५ ॥
इक दिन प्रयेदत्त सुखकार । नंदीस्वरके पर्व मंझार ।
धर्म कीर्ति नामा मुनिराय । तिनको नमन कियो हरषाय ॥ ६ ॥
अष्ट दिननको नेम सुकियो । उत्तम ब्रम्हचर्य व्रत लियो ।
क्रीड़ा मात्र नचित उमगाय । पुत्री कोभी व्रत दिलवाय ॥ ७ ॥
गोयह बात सत्य करजान । सतपुरुषनकी है यह बान ।

जो विनोद ठाने चितमांहि। सोभी शुभपथ रूप कराय ॥ ८ ॥
इक दिन प्रयेदत्त सो शाह। आरोप्यो पुत्रीको ब्याह ।
तनुजा लख बोली सुनतात। यह तुम क्या आरम्भीबात ॥ ९ ॥
पहिले ब्रम्हचर्य व्रतसार। ग्रहण करायो तुम हितकार।
ताते इमविवाह कर आज। हमको कौन रहो अब काज ॥ १० ॥

दोहा

तब बोले इम सेठजी, सुन पुत्री चितलाय।
क्रीड़ा करकेमें तहां, तुम्है बरत दिलवाय ॥ ११ ॥
सुख दाई यह धर्म व्रत, अहो तात बुधिवान।
तामें क्रीड़ाहै नहीं, यह निश्चय चितआन ॥ १२ ॥

काव्य

तबै सेठ इमकहै सुनो पुत्री कुल मंडन ।
दिलवायो व्रत शील अष्ट दिन को दुख खंडन ॥
तब पुत्री इम कहै सुनो मम बचनतात अब।
श्रीगुरु तुम नहि कहीकछू मरजाद तहां जब ॥ १३ ॥
ताते तात दयाल शीलव्रत निश्चै पालूं ।
इस भव ब्याह नकरो सबै अघपंक पखालूं ॥
ऐसे कह तब जैनशास्त्रमें बुद्धि लगाई ।
तिष्ठत अपनेगेह शीलमें दृढ़ अधिकाई ॥ १४ ॥

चौपाई

इक दिन समय बसंत निहार। क्रीड़ा हेत गई सबनार।
निज उद्यानमें डारहि डोर। अनंतमती झूलै तिहठौर ॥ १५ ॥
जोबन मंडित रूप अपार। पट भूषण बहु तनमें धार।
इस अवसर रूपाचल जान। ताकी दक्षिण श्रेणि महान ॥ १६ ॥
तामें किन्नरपुर सुखदाय। कुंडल मंडित ताको राय ।
नार सुकेशी ताके संग। नभमें गमन करै सुअभंग ॥ १७ ॥

देख अनंतमती का रूप। विच्छित चित्त भयो खगभूप।
तब मनमें इम करो विचार। या विनजीवन वृथा निहार ॥ १८ ॥
वेग गयो तब निज आगार। तहां नार छोड़ी तत्कार।
आप उलट तिह थानक आय। झूलत वाई लई उठाय ॥१९॥
चलो गगन में हर्षित काय। सन्मुख निज नारी दरसाय।
तिसके भयते खग तत्काल। लघु परनी विद्या दे नाल ॥ २० ॥
महा भयानक अटवी बीच। डारत भया तबै वह नीच ॥
अनंत मती चितमें दुख लीन। ब्रह्मचर्य जिन गही प्रवीन ।२१।

सवैया इकतीसा

हाय तात हाय तात ऐसे बिलाप करै, नैननते अश्रुपात डारे दुख पायके। तहांभीम नामभील राज एक आय कर, लेगयो तबैही निजपल्ली में उठायके॥ कहे तिन ऐसे बैन मम तू पियारी नार, पटरानीपद तोह देऊं मन लायके। और बहु संपत-भंडार सब तोहेलिये मोको बेग इंछो निज चित्त हरषायके ॥२२॥

दोहा

अनंत मती इंछो नहीं, भील महा चंडाल।
तब वह पापी रात्रि में, कियो उपद्रव भार ॥२३॥

चौपाई

जबरीतें भोगूं यह नार। ऐसी चिंता मनमें धार ॥
ताही समय शील परभाव। वन देवी आई तिह ठाव ॥२४॥
ताड़न करी भील की काय। तब पापी डरपो अधिकाय ॥
कर विचार मनमें तिह घरी। यह नारी नहि है कोई सुरी ।२५।
वारिज नैनी रूप अपार। बहु प्रकार समरथ यह धार ॥
इम चिंतवन कर कन्या लेय। पुष्पक नाम वणिक को देय ॥२६॥
सो वह समरथ वाह मलीन। कन्या रूप अधिक तिन चीन ॥

कामातुर पापी तब भयो । निंद्य बचन मुखते वह चयो ॥ २७ ॥
नाना भूषण बसन मनोग । है सुंदर यह तुमही जोग ॥
सो लीजे सब इसही बार । मोकूं कीजे अंगीकार ॥ २८ ॥
तेरो दास रहूं मैं सदा । हो अलीक भाषूं नहि कदा ॥
कैसो है यह सारथ वाह । दुष्ट बुद्धि ताकी अधिकाय ॥ २६ ॥
तब यह दृढ़ ब्रत धारन हार । अनंत मती इम बैन उचार ॥
प्रये दत्त जो मेरो तात । तैसोही तू है अब दात ॥ ३० ॥
ऐसे पाप मई तू बैन । भाषै मत कबहूं दुख दैन ॥
ऐसे सुनकर सारथ बाह । नगर अयोध्या में तब आह ॥३१॥
तहां काम सैना बिख्यात । गणिका के तिन बेची हात ॥
प्रानी कर्म उदय अनुसार । सुख दुख सब भोगे अधिकार ॥३२॥

दोहा

वह वेश्या अतिही चतुर, किये प्रपंच अपार ।
शील मेरु ता सती को, भेद नसकी लगार ॥३३॥

चौपाई

तब गणिका संग कन्या लई । सिंहराज नरपति को दई ॥
सो भी इसको रूप निहार । मनमें धारो काम बिचार ॥३४॥
जबरीते तब रैन मंझार । भोगन की इच्छा मन धार ॥
तब इस शील तने परभाय । नगरी तनि देवी तहँ आय ॥३५॥
मनमें क्रोध धारकर सुरी । नृपको भय दीने तिह घरी ॥
डर मानो पायो बहु त्रास । कन्या को तब दई निकास ॥३६॥
तब यह शील ब्रत दृढ़ धार । सुमरन करो मंत्र नवकार ॥
काहू थानक बैठी जाय । याके पुन्य तने परभाय ॥ ३७ ॥
पदमश्री आर्या इस देख । याको उत्तम जान विशेख ॥
इसते सब पूछो विरतन्त । अपने ढिग राखो गुणवन्त ॥३८॥

कैसी है व्रतका शुभ चित्त। निरमल आतम धरै पवित्त ॥
सत्पुरुषन के जे आचार। सो परही के अर्थ निहार ॥ ३९ ॥
या अंतर प्रयेदत्त सुजान। अनंत मती को पिता महान ॥
याके शोक अगन कर जीव। व्याकुल मन दिन रैन सदीव ।४०।
यहां सेठ बुद्धि धर सेत। कन्या शोक निवारण हेत ॥
केते इक सज्जन ले लार। जिन तीरथ को कियो विहार ॥४१॥
तीरथ यात्रा कर बहु भाय। पहुंचे नगर अयुध्या आय ॥
तहँ इक जिनदत्त सेठ विख्यात। सो इनकी नारी को भ्रात ॥४२॥
संध्या समय तास ग्रह गए। गुण उज्जल तहँ उतरत भए ॥
जिनदतने पाहुन गत करी। खेम कुशल पूछी तिह घरी ॥४३॥

दोहा

दुखदाई बिरतांत सब, अपनो कहो सुनाय।
प्रयेदत्त की सुन गिरा, जिनदत बहु दुख पाय ॥४४॥
फिर जिनदत धरमातमा, प्रात काल उठ न्हाय।
जिन दर्शन जातो भयो, दर्शन कर हरषाय ॥४५॥

काव्य

जिनदतकी तब नार करी भोजन की त्यारी। आर्जो पदम श्रीय पास कन्या सुखकारी ॥ चौका देने हेत तासको लियो बुलाई। तब कन्या गुणवंत तहां जबही चलि आई ॥ ४६ ॥
चौका दीनो सार बहुरि अम्रत सम भोजन। करके गई तुरंत तवें निज थालक शुभ मन ॥ तिस पीछे जिन बिंब महा जगमें हितकारी। देव इंद्र नागेंद्र नमैं तिन चरन मँझारी ॥ ४७ ॥
ऐसे श्री जिन चंद्र तनी पूजन विस्तारी। कर आयो निजधाम फेर सज्जन हितकारी ॥ तिस चौके को प्रयेदत्त तब सेठ देखकर। पुत्री कीनी याद नैन लीने आंसू भर ॥ ४८ ॥

दोहा

हो उदास बोले तबै, जिन चौका यह दीन ।
तिसकी शीघ्र बुलाइये, इसही ठौर प्रवीन ॥ ४६ ॥
केते इक सज्जन तबै, गए अर्थ का पास ।
तहँ ते कन्या लायके, प्रेयदत्त दी तास ॥ ५० ॥

चाल मेघकुमार देशी

शोकरूप जलकर भरेजी, दोनोंनैन बिशाल। अपनी पुत्री देख कर जी, सेठ मिलो तत्काल ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥५१॥
मिष्ट बचन बहु भाषियो जी, हो पुत्री सुखकार। किस पापीने तुम्ह हरीजी, झूलत बाग मझार ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥ ५२ ॥
कैसी है तू शुभ मतीजी, शील शिली कर सोय। पाप प्रछालन सब कियेजी, दृढ़ बृत धारक होय ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥५३॥
हरन हार दुर्जन महाजी, पाप पंक करलीन। दया नतिस हिरदे बिषयजी, जाने मुझ दुखदीन ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥५४॥
फिर पूछो इम तातनेजी, सुन पुत्री सुकुमार। यहां तुमको को लाईयोजी, कर मुझ सुन्य अगार ॥ सयाने हिरदे शोक अपार ॥५५॥

सोरठा

अनंतमती तिहबार, सब ब्रतांत कहती भई ।
सुनकर दुखित अपार, प्रयेदत्त होतो भयो ॥५६॥

पद्धड़ी

ताही छिन जिनदत्त हर्षवंत । दोनोको मिलनेको तुरंत ॥
सब नगरीमें कीनो उछाय । बहु दान दियो आनंद पाय ॥ ५७ ॥
फिर प्रेयदत्त बचयों बखान । सुन पुत्री निज घर कर पयान ॥
ब तनुजाने बच इम सुनाय । संसार तनी गतिमैं लखाय ॥ ५८ ॥
तात आप संयम सुभार । दिलवायो तातें मेंअवार ॥

तब पिता कही सुन चितलगाय। तुम कोमललता समानकाय ५९
जिन दिच्छा दुःसह जग मझार। याते निज घरमें वरत पार॥
कितने दिन पीछे पुन्य जोग। मन वांछित फिर कीजोमनोग ६०
बहु कोमल वचन कहे सुतात। तो पण याके नाहि चित्त आत
तबही मनमें वैराग भाय। पदमश्री ब्रतका पास जाय॥ ६१॥
सुख देनहार दिच्छा महंत। बहु भक्ति सहित धारी तुरंत॥
अरु पच्च मास उपवास आदि। दुद्धर तपकीने तज प्रमाद ६२
सन्यास तनी विध करि प्रवीन। नवकार मंत्र सुमरन सुकीन
हो धर्म लीन तज दीन काय। सहस्रार सुरग सवही लहाय॥ ६३॥
वह देव भया अति दीप्त अंग। पट भूषण मुकट धरे उतंग॥
श्री जिनवर चद्र तनो सुदास। नाना विध संपतको अवास॥ ६४॥
यह सुकृत फल परत्यच्च पाय। शुभ पुन्य थकी क्या २ नथाय॥
देखो इह नंतमती सुजान। क्रीड़ा कर शील गहो महान॥ ६५॥
फिर निरमल पालो जग मझार। उपसर्ग सहे नाना प्रकार॥
सब शील थकी भाषे तुरंत। सुख दायकहै यहही महंत॥ ६६।

दोहा

श्री जिन चंद्र पदाब्ज को, भ्रंगी सम सेवंत।
निःकांच्छित गुण पालके, नाना सुःख लहंत॥ ६७।
भोगनको स्थानजो, स्वर्ग बारमो ताम।
दीरघ ऋधि धारी भयो, देव तहां अभि राम॥ ६८

सोरठा

सो वह देव महान, सब सतपुरुषनको अबै।
दीजो मंगल दान, अतिशय करके जग विषै॥ ६९

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषै निःकांच्छित गुण अनत मतीने ताकी कथा समाप्तम्
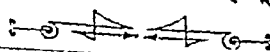
अथ श्री उद्यापन नृपने निर्बिचिकित्सा अंग पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं. ८

मंगला चरण * छप्पय

तीन जगत मेंहैं पवित्र अरिहंत देववर। और भारती माय तासको नमस्कार कर॥ गुरु चरननको ध्यानधार हिरदेके माही। निर्बिचिकित्सा अंग जगतमें जिन प्रगटाही ॥
उद्यापन नरपतितनी, कथा सुताहि बखानियें।
अब सुनो भव्य चितलायके, जाते पातिग हानिये ॥ १ ॥

चौपाई

भरतक्षेत्रमें कच्छ सुदेस। तामें रोरब नगर बिशेस ॥
उद्यापन प्रभु नाम नरिंद। सम्यक दृष्टी है गुणबृंद ॥ २ ॥
जिन चरणाम्बुजमें धर राग। नित प्रति पुजत सो बड़भाग।
दाता भुक्ता धरै बिचार। परजा पालै बहु हित धार ॥ ३ ॥
तानरपति केहै पटरान। नाम परभावति चतुर सुजान ॥
नृप बहु पंडित बुद्धिनिधान। धारै सम्यक दरश महान ॥ ४ ॥
पूरन कला मयंक समान। पूजा दान सोई जल जान।
ताकर मनको मैल निहार। उज्जलकीनो चित अधिकार ॥ ५ ॥

दोहा

निःकंटक निजराजको, भोगै नृप बलवान।
धर्म बिषै तत्पर महा, तिष्टै पुन्य निधान ॥

चौपाई

या अंतर सौधर्म सुरेश। धर्मराग उर धार बिशेश ॥
सब अमरन आगै हित आन। सभा बिषै इम करो बखान ॥ ७ ॥
दोष रहित अरिहंत सुदेव। ताही की निज कीजे सेव।
उत्तम क्षमा आदि में जान। ऐसो धर्म कहो भगवान ॥८॥

रहित परीग्रह गुर निरग्रन्थ । तेही दिखलावें शिव पन्थ ॥
जिनवर कथित तत्व अभिराम । तिनकी सरधा सो रुचि नाम ।६।

सवैया । कतीना

सोई रुचि स्वर्ग मोच्छ दैनहार जान लेहु, काहे कर होय ताहि चित्त माही भाई है ॥ धर्म अनुराग कर तीरथ गमन कीजे, उत्सव ठान जिन मंदिर बनाई है ॥
बिंब जिन चंद्रके धराय परतिष्टा करै, वात्सल्य गुण जाके नित प्रति पाईये । इत्यादिक कारनते होत रुचि सोई मान, सम्यक दरश आन मिथ्या को नशाइये ॥ १० ॥

दोहा

हो देवो या जगत मैं, उत्तम सम्यक जान ।
ताहीके परभाव ते, लहिये सुर शिव थान ॥११॥
इत्यादिक बरणान कियो, सम्यक तनो सुरेश ।
निर बिचिकित्सा अंगकी, महिमा करी विशेश ॥१२॥

सोरठा

नृष उद्यापन जान, ताकी स्तुति बहु करी ।
वासम और नमान, निरबिचिकित्सा अंगमें ॥ १३ ॥

पद्धड़ी

इक बासव सुर तिसही सुवार । सुनकर मुनिवरको भेष धार ॥
वहु कोढ़ गलित निज काय कीन । व्रण घाव बहै दीखै मलीन १४
सो लेन परीच्छा हेत आय । मध्यान समै नृप गेह जाय ॥
उद्यापन नृप मुनिको लखाय । माखिन कर बेष्टित दुखित काय १५
तवही नृप उठकर हर्ष धार । तिष्टो तिष्टो इम बच्च उचार ॥
वहु भक्ति धार थापे मुनिंद । फिर पद प्रच्छालन कर नरिंद १६
प्राशुक अहार संयुक्त लेह । मुनिवरको देत भयो सुतेह ॥

कीनो अहार दीनो जु भूप । फिर बमन करी दुरगंध रूप॥१७॥

दोहा

तब नृप अपनी नार युत, मुनि सन्मुख ठहराय ।
अर तहँते सज्जन जना, ते भागे दुख पाय ॥ १८ ॥
मुनि शरीर को पूंछतो, भूप खड़ो कर जोर ।
तितने नृप की नार पै, बमन करी अति घोर ॥१६॥

पायता

तब राजा शोक करीनो । मैं पापी यह क्या कीनो ।
जो प्रकृति विरुद्ध अहारा । मुनिको दीनो इह बारा ॥ २० ॥
इस प्रथवी तलके मांही । शुभ पुन्य बिना कछु नांही ।
यह पात्रदान अति भारी । किम बन आवै सुख कारी ॥ २१ ॥
चिंतामणि रतन अनूपा । अर कल्प वृक्ष सुख रूपा ।
मन बांच्छित फलके दाई । तुछ पुन्नी केम लहाई ॥ २२ ॥
इम पात्रदान बिध जोहै । कम पुन्नी को किम होहै ।
ऐसे निज निंदा ठानी । फिर लेकर उज्जल पानी ॥ २३ ॥
मुनि काय धोवने काजा । ऊभे उद्यापन राजा ।
तब सुरमन मांहि बिचारी । यह भक्तिवान अधिकारी ॥ २४ ॥

दोहा

निज मायाको दूरकर, सुर हरषो तिहवार ।
बहु प्रकार स्तुति करी, मुखते येम उचार ॥ २५ ॥

सेघ कुनार

हो नरिंद्र सुन लीजियेजी, तुमहो सम्यकवान । निर बिचिकित्सा गुण धरोजी, दान बिषै अधिकान ॥ सयाने तुमसम अवरनकोय ॥ श्री जिनवरने बरनयोजी, तत्व स्वरूप महान । ता जाननको तुम सहीजी, पंडित चतुर सुजान । सयाने तुमसम अवर नकोय ॥२७॥

हे समदृष्टि शिरोमणीजी, तुम बिन और नकोय। हस्त रूपकमलन थकीजी, पूंछी बमन सुधोय। सयाने तुम सम अवरनकोय २८।
ऐसे कहकर सुर तबैजी, पूज करी बहु भाय। निज आनन द्विर तांत कहजी, नामि फिर निज थल जाय॥ सयाने तुम सम० ॥२९॥

दोहा

देखो सत्पुरुषन तनो, पुन्य महात्तम जोय।
सुरपति जस बरणन करैं, यहँ बरने किम सोय ॥ ३० ॥

चौपाई

इस अंतर उद्यापन राय। पूजा दान ब्रत्त अधिकाय।
करते तिष्टैं निज आगार। धरम बिषै तत्पर आधार ॥ ३१ ॥
कितो काल सोइह विधिगयो। इक दिन कछु कारनलखलियो।
मन बच काय बैराग उपाय। राज पुत्रको दे हरषाय ॥ ३२ ॥
स्वर्ग मोक्षदाई जिन ईश। बर्द्धमान स्वामी जगदीश।
तिनके चरण कमलढिगजाय। दीक्षा लीनी भक्तिउपाय ॥ ३३ ॥
कैसीहै जिन दीक्षा सोय। देव इंद्रकर पूजित सोय।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्र। जगत मांहि यह महा पवित्र॥ ३४ ॥
ताहि पाल करके धीमान। ध्यान हुतासनमें अरिहान।
सुर असुरनकर पूज महान। उद्यापन लहि केवलज्ञान ॥ ३५ ॥
भव्यनको उपदेश कराय। फेर अघाती कर्म नशाय।
अविनाशी शिव थान मझार। तिष्टे आवागमन निवार ॥ ३६ ॥
वहुर प्रभावति नृपकी नार। आर्या ब्रत धर तपकर सार।
दुखदाइ तिय लिंग नशाय। ब्रह्म सुरगमें सुर उपजाय ॥ ३७ ॥

दोहा

पूरन कथा सुयह कही, ब्रह्मनेमिदत जान।
नृप उद्यापन केवली, ताकी स्तुति ठान ॥ ३८ ॥

चौपाई

तुमरी भक्ति विषे जिम चंद । मैं वरनो मनधर आनंद ।
ऐसेही तुम गुण दधि राश । केवल रूप भए परकाश ॥ ३९ ॥

दोहा

देव इंद्र सम तुन चरण,सील निवावत आय ।
सुख दाता या जगतमें, तुमहीहो जिनराय ॥ ४० ॥
गुण समूह सोई रतन, ताके हैं भंडार ।
ज्ञान उदधि इंद्री जिता, इत्यादिक गुण धार ॥ ४१ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषे निर्विचिकित्सा अंग राजा उद्यायनने पाला ताकी कथा सम्पूर्णम् ॥
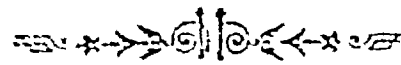
अथ अमूढ़ दृष्टि अंग रानी रेवतीने

पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं. ॥ ६ ॥

मंगलाचरण ॥ गीता

त्रैलोकके हितकार जिनवर सर्व इंद्री तिन जई ।
जिनकी सुभक्ति हिये विषे धर नमस्कार करूं सही ॥
अमूढ़ दृष्टि जो रेवती तिय पालयो चित लायके ।
ताकी कथा वरनन करूं मैं सुनो भवि हरषायके ॥ १ ॥

चाल अहोजगतगुरु

देही भरत सु क्षेत्र, विजयारध सुख कारी । मेघकूट पुर नाम, दक्षण दिशा मझारी ॥ चंद्र प्रभू बुधिवान खग, नृप तहँ सुख दाई । भोगै दीरघ राज पूरव पुन्य बशाई ॥ २ ॥
ऐके दिन महाराज, आप निज पुत्र बुलायो । शशि शेखरको राज, देय चितमें हरषायो ॥ श्री जिन तीरथ काज, गमन कीनो

हित कारी । जात्रा करत महान, भ्रमत आय बुधधारी ॥ ३ ॥
क्रमते पुन्य प्रभाव, सुदच्छण मथुरा आए । गुप्ताचारज नाम, तहँ ऋषि तिष्टे पाए ॥ नमन कियो सिर नाय, तबै मुनि धरम सुनायो । परउपकार महान, यही जग सार बतायो ॥ ४ ॥

दोहा

इम सुनकर मुनि मुखयकी, चुल्लक ब्रत करलीन ।
इक विद्या नभ गामिनी, रखकर सब तजदीन ॥ ५ ॥
तीरथ जात्रा हेतको, तथा सु परउपकार ।
याकारण इक राखियो, औरन काज लगार ॥ ६ ॥

चौपाई

इक दिन जात्रामें चित धार । उत्तर मथुरा गमन विचार ।
गुरुके निकट गयो हरषाय । पूछत भयो सीसको नाय ॥ ७ ॥
अहो देव करुनाके राश । मोको आज्ञा करो प्रकाश ।
काहूते कछु कहनो होय । कृपा धारकर कहिये सोय ॥ ८ ॥
अब आनंद सहित मुनिराय । कहत भए खगकों समझाय ।
गुणकर शोभितअति गुणवान । सुब्रत नाम ऋषीश्वरजान ॥ ९ ॥
मम ओरीते बचन सुनाय । नमस्कार कहियो तुमजाय ।
सम्यक जुत तहँ नृपकीनार । नाम रेवती है सुखकार ॥ १० ॥

दोहा

ताको हमरी ओरते, धरम बृद्धि अधिकाय ।
कहियो इम तुम जायके, हो श्रावक हितलाय ॥ ११ ॥

चौपाई

अरु तृपृष्टि नामा मुनिराय । तहँ तिष्टैं थे जन सुखदाय ।
तेभी कहत भए वच एम । गुप्ताचारज भाषे जेम ॥ १२ ॥
फिर शशि प्रभचुल्लक तिहवार । अपने मनमें करतविचार ।

भव्य सैन मुनिवर तिहथान। ग्यारह अँगके पाठी जान ॥ १३ ॥
तिनको गुरु बचकहै नकोय। तातें ह्यां कारन कछु होय।
ऐसे क्षुल्लक मनमें धार। तहँते गमनकियो तत्कार ॥ १४ ॥
सुब्रत नाम मुनीश्वर पास। अपने गुरुके बचन प्रकाश।
वातस्ल्य जुत बंदन कही। नमस्कारकर साता लही ॥ १५ ॥

दोहा

जो भविजन धरमातमा, धरम विषै चितधार।
करैं वात्सल सबनते, तिन हू जन्म सुसार ॥ १६ ॥

पद्धड़ी

फिर क्षुल्लक इह शुभ बुद्धि वान। क्रीड़ा कर आयो हर्षवान।
जहँ भव्यसैन मुनि भेखधार। विद्या मदकर गर्भित अपार। १७।
तिन धर्मवृद्धि खगको नदीन। मदकर उन्मत्त भयो मलीन।
कोढ़ो कष्टनका दैनहार। एगर्व महा ताको धिकार ॥ १८ ॥
जहँ बचन बिषै दारिदअपार। तहँ और बड़ाई कोनिहार।
पाहुणा गति आदि क्रिया महान। तिनके सुपनेमें भी नआन।१९।
सब दोष रहित श्री जैनज्ञान। तिसमेंभी प्राणी मदजुलान।
यह बात सत्य जगके मझार। जे पुन्यहीन पापी निहार। २०।
तिनके अमृत बिषकी समान। होजावै निश्चयकरसोमान।
तब वह क्षुल्लक उठप्रातकाल। भव्य सैन क्रिया देखन सुचाल।२१।

सोरठा

भव्यसैन तिहवार, बहिर भूमको जायथो।
पीछे यह ब्रतधार, लेय कमंडलको चलो ॥ २२ ॥
फिर विद्यापरभाय, मारगमें क्षुल्लक रची।
चहुं दिश हरत सुकाय, चिकनी और सुहावनी ॥ २३ ॥

पायता

तब नष्ट बुद्धिको धारी। मुनि मनमें करत विचारी।

श्री जिन आगमके माही । एकेंद्री जीव कहांही ॥ २४ ॥
इम कहकर गमन जोकीना । तृण ऊपर पैर धरीना ।
फिर सोच समय ब्रह्म चारी । माया अपनी बिस्तारी ॥ २५ ॥
जलथाजो कमंडल मांही । सो सोख दियो तिह ठांही ।
अर कहत भयो इम बानी । हो मुनिइसमें नहि पानी ॥ २६ ॥
तातें सरकों जल लीजे । मृतकाजुत सौच करीजे ॥
ऐसे सुनके हरषायो । ताही बिध सौच करायो ॥ २७ ॥
मिथ्याकर दूषित जेहैं । क्या क्या नहि काज करैंह ।
चारित्र रहित जो ज्ञानं । सो देखै नाहि शिव थानं ॥ २८ ॥
जैसे जब भानु प्रकाशै । घू घू को तमही भाशै ।
तैसे यह मुनि अज्ञानी । चारित्र रहित अभि मानी ॥ २९ ॥

दोहा

मिथ्या दृष्टी के निकट, जैन शास्त्र सुखदाय ।
सोभी खोटे पथ अरथ, दोष रूप होजाय ॥ ३० ॥
जैसे मिष्ट सो दुग्धको, तूंबी माहि भराय ।
जहर रूप हो पर तबै, कष्ट देय अधिकाय ॥ ३१ ॥

चौपाई

ऐसे मनमें करत बिचार । यह छुल्लक चतुरोत्तम सार ।
मुनिको मिथ्या दृष्टी जान । खोटे कर्म बिषै रतिमान ॥ ३२ ॥
नाम अभव्यसैन तिह बार । सब जन आगे कहो प्रचार ।
दुरा चार कर कष्ट अतीव । या जग मांही पावै जीव ॥ ३३ ॥
वहुर ब्रह्मचारी धीमात । व्रत पवित्र उज्जज अधिकान ।
वरण भूपकीहै वरनार । नाम रेवती सम्यक धार ॥ ३४ ॥
तास परिच्छा लेने काज । पूरव दिश मायाको साज ।
कमल बिंधे चतुरानन रूप । गले जनेऊ धरै अनूप ॥ ३५ ॥

वेद ध्वनीको करै बखान। सुर अर असुरनमैं तिसआन।
ब्रह्मा रूप करो तत्कार। लीला कर तिष्टो पुर बार ॥ ३६ ॥
ब्रह्माकोसुन आयो राय। अभवसैन आदिक तहँ जाय।
बड़े हर्ष जुत वंदन करी। सब पुरजनने भी तिसघरी ॥ ३७ ॥
कैसे जन मूरख अभिधाय। जड़ आतम दूषित अधिकाय।
तबही बरुण नामनरराय। रानी को बहु बिधसमझाय ॥ ३८ ॥
तुम भी जावो जात्रा हेत। तौभी गई नही गुणसेत।
सम्यक रत्न सहित वहनार। जिनवर भक्ति हियेमेंधार ॥ ३९ ॥
करो बिचार चित्त यह भंत। यूं भाषोहै जैन सिद्धांत।
ऋषभदेव सो ब्रह्माभए। आतम ज्ञानी शिबपुर गए ॥ ४० ॥
अरु कोई ब्रह्मा नहि आय। यह दीखै धूरत अधिकाय।
आयोहै ठगने को यहां। इम बिचार कर गई नहितहां ॥ ४१ ॥
और दिना दच्छणादिशजाय। चुल्लक माया धरी अधिकाय।
बिश्नु रूप कीनो तिह थान। चार भुजा गरुड़सान जान ॥ ४२ ॥
संख गदा अरु चक्र अनूप। करमें अस बिकराल स्वरूप।
सर्व दैत्य गणको भयदाय। ऐसो रूप सबै दिखलाय ॥ ४३ ॥

दोहा

तोपण रानी रेवती, गई नही तिस पास।
सम्यक तिस हिरदेबिमल, बरततहै सुखरास ॥ ४४ ॥
अरु इक दिन छुल्लक बिमल, पश्चम गोपुरजाय।
संकर रूप बनाईयो, मायाकर अधि काय ॥ ४५ ॥

काव्य

बृषभ पीठ असवार जटा सिर ऊपर छाई। पारवती अरधंग तास मुख कंज लखाई ॥ सुर असुरन कर पूज्य सर्वजनको सुखदाई। धाए पुर के लोग तोहू रानी नहि आई ॥ ४६ ॥

और दिनाके विषै बृह्मचारी इम ठानी। उत्तर दिशकी ओरकारी माया अधिकानी ॥ समवशरन रचलीन ध्वजा जामें फहरावैं। प्रातिहार्य वसु युक्त तहां सुर गान करावैं ॥ ४७ ॥
मानी जनका मान सुभाशुभ थंभ नशावैं। कूप वापिका आदि सुमंगल द्रव्य लखावैं ॥ तीर्थंकरको रूप रचो तोने अतिभारी सुन नर असुर अधीश आय पूजा बिस्तारी ॥ ४८ ॥
तब नृप बारन भव्यसैन आदिक जन सारे। आए अर्चनहेत हर्ष चितमें अति धारे ॥ समझाई नृपनार सबै पुरजन तिहबारा कहत भई इस भांत सुनो तुम बचन हमारा ॥ ४९ ॥
अहो जिनागम मांहि कहे चौबिस तिर्थंकर। ग्यारारुद्र विख्यात भए नवनासु देव बर ॥ ते पहुंचे पर लोक आपने गुणअनुसारी तातें निश्चय जान लेहु यह माया चारी ॥ ५० ॥

दोहा

कैसो है यह भेस धर, ठग विद्या अधिकाय।
मूरख जनकी बुधहरै, नाना रूप दिखाय ॥ ५१ ॥
ऐसी रानी रेवती, सम्यक रतन भरंत।
सब जनको समझायके, निज ग्रहमें तिष्टंत ॥ ५२ ॥
जैसे सुर गिर चूलका, निश्चलहै अधिकार।
ताहि चलावनको पवन, समरथ नाहि लगार ॥ ५३ ॥

चौपाई

फिर यह छुल्लक कपट सुधार। व्याधि युक्त तनकर तिहवार।
व्रतकर शोभित छीन शरीर। श्रावक रूप धरो वरवीर ॥ ५४ ॥
चर्या समय रेवती ग्रेह। याको लेन अहार सुतेह।
ताही छिन पीड़ाके भार। मूर्छा खाय पड़ो तत्कार ॥ ५५ ॥
तिसको देख नृपति की नार। धर्म सनेह चित्तमें धार।

हाहा कार करी अधिकाय। भक्ति ठान इनके ढिग आय। ५६।
सुंदर शीतल करी समीर। ताकर कियो सचेत शरीर।
आदर कर घर भीतर लाय। तहँ तिष्ठाये बहु सुख पाय॥ ५७॥
कैसीहे यह दया निधान। प्राशुकरस मई दीनो दान।
दयावान जो प्रानीहोय। दान बिषै बुध धारै सोय॥ ५८॥

सवैया

तब यह ब्रम्हचारी लेयके आहार शुभ, तिहिथान माया फिर येम बिस्तारी है। करीहे प्रचंड बौन आति दुर्गन्ध रूप, जाके देखे ते गिलान आवै तहां भारीहै॥ जवै रानी रेवती पश्चाताप ऐसे करै, भोजन अपथ मैंने दियो दुख भारी है। हाय हाय पापनी मैं कौन यहकाज कीनो, इत्यादिक निंदा निज कीनीतिहबारीहै।५९।

दोहा

फैर भक्ति हिरदय सोधर, निःशंकित मनहोय।
बमन सबै धोवत भई, लेकर उश्न जु तोय॥ ६०॥

पायता

तब चंद्र प्रभु ब्रह्मचारी। श्रावक दृढ़ ब्रतको धारी।
धीमान चित्त हरषानो। रानीको भगति लखानो॥ ६१॥
जब माया तज तत्कारा। आदर जुत बचन उचारा।
कैसे जुबैन उचरेहैं। रस युक्त संतोष भरेहैं॥ ६२॥
हो देवी अब सुन लीजे। मन बचन काय थिर कीजे,
त्रय जग में सारजो मानो। त्रिय गुप्ताचारज जानो॥ ६३॥

अडिल्ल

तिनकी देख सुधर्म वृद्धिचित धारिये। जाते सबही सिद्ध होत सुनिहारिये। तुह्मरे मनको सार पवित्र करो वही। या प्रकार शुभ गिरा ब्रह्मचारी कही॥ ६४॥

पद्धड़ी

अरु मनमें धर्मनुराग धार। नाना प्रकार जिन जिन्नसार।
कीनो है सो तुमकोअवार। कल्याण हेत वरतो अवार॥ ६५॥

यह अमूढ़ दृष्टि गुण जगमझार। संसार जलधितें करतपार।
मैं नानाविधि माया दिखाय। पण तुम्हरी दृढ़ता अति लखाय।६६।
ताते तिहु लोक सु पूज्यमान। तुमरे हिरदय सम्यकमहान।
श्री जिनवर चंद्रतनेसुचर्न। जग जीवनको आनन्द कर्न ॥६७॥
तिन पूजनको तुमही सुजान। पंडित नाहि कोई तुमसमान।
ताते तुम्हरी महिमा अपार। या जगमें कौन करै उचार ॥ ६८ ॥
ऐसे गुण जुत रानी मनोग। ताकी स्तुति कीनी सुजोग।
फिर निज व्रतंतसबहीउचार। ब्रह्मचारी कीनो गमन सार ॥६९॥
तिस पीछे चारुण नाम राय। शिव कीर्ति नाम सुतको बुलाय।
निजराजदेय वन मांहिजाय। जिनभाषत तप धारन कराय।७०।
सो काय त्याग तपके प्रभाव। माहेंद्र स्वर्ग उपजो सुजाय।
देदीप्यमान वपुकांति वान। जिन पद पूजै नित भक्ति ठान ॥७१॥

दोहा

फिर वह रानी रेवती, जिन वच मैं अनुराग।
धर कर जिन दिक्षा लई, तप कीनो बड़ भाग ॥७२॥
ब्रह्म स्वर्ग मैं सुर भयो, ऋद्धि लहो अधिकाय।
जिन तीरथ जात्रा करै, मनमैं हरष लहाय ॥ ७३ ॥

काव्य

आचारज इम कहैं, सुनो तुम भवि जन सारे।
देव इन्द्र नर धीश, रैन दिन सेवन हारे ॥
स्वर्ग मोक्ष दातार, धर्म जिन भाषत सोई।
अति पवित्र हिय धरो, तासते सब सुख होई ॥ ७४ ॥
बहुत कालते लगो, कुमारग मिथ्या भारी।
ताको तज नृपनारि, हिये दृढ़ सम्यक धारी ॥
तेम तुम भी करो, जगतमें पूजा पावो।
क्रमतें शिव सुख लहो, बहुरि जगमें नहिं आवो ॥ ७५ ॥

इति श्री आराधनासार विषै रानी रेवती की कथा सम्पूर्णम्

अथ उपगूहन अंग सेठ जिनेंद्रभक्ति ने

पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं. ॥ १०॥

मंगला चरण । सोरठा

सुरशिव सुख दातार, श्री अरिहंत जिनेशहैं ।
तिनकी भक्ति सुधार, नमन करूं सिर नायके ॥ १ ॥
उपगूहन गुण सार, जिनेंद्र भक्ति श्रेष्ठी करो ।
ताकी कथा उदार, भाषामें भविजन सुनो ॥ २ ॥

चौपाई

रस संयुक्त दयाकी खान । ऐसो सोरठ देश महान ।
श्री नेमीश्वर जन्म प्रभाय । ताते देश पवित्र कहाय ॥ ३ ॥
पाटलपुर तहँ नगरी जोग । नृप विशुद्ध नामा जुमनोग ।
नाम सुसीमा तिसके नार । रूप और लावन्य अपार ॥ ४ ॥
तिन दोनोंके करम बसाय । पुत्र सुबीर भयो दुखदाय ।
सब चोरनमें वह सिरताज । सप्त बिशन सेवै तजलाज ॥ ५ ॥
मात पिता शुभ कुल अरुजात । दीखतहै निर्मल बिख्यात ।
होनहार दुर्गत दुख जास । कुल आदिक निरफलहैतास ॥ ६ ॥
इस अंतर इक गौड़ सुदेश । ताम्र लिप्त नगरी तहँबेश ।
जहां बसैं नर कीरत वान । पूजा दान करैं अधिकान ॥ ७ ॥
तिसही नगर विषय बड़भाग । जैन धर्ममें धर अनुराग ॥
सम्यक दृष्टी श्रावक जान । सेठ जिनेन्द्र भक्ति बुधवान ॥८॥
तिसको चित सो मेघ स्वरूप । सुर शिव सुख जो धान अनूप ॥
ताको सींचत चित्त लगाय । सप्त क्षेत्र में धन खर्चाय ॥ ९ ॥
श्री जिनमंदिर बीच मनोग । शास्त्र लिखावैं वाँचन जोग ॥
चार प्रकार संघ को दान । येही सप्त क्षेत्र पहचान ॥ १० ॥
सम्यक दृष्टि शिरोमणि येह । सेठ बुद्धि आकर गुण गेह ॥

ताके महल विषय जिनधाम। सप्तम खणपैहै अभिराम ॥११॥
रतन मई प्रतिमा तहँ जोग। श्री जिन पारस नाथ मनोग ॥
तिनके शीस छत्र त्रय जान। अद्भुत रतन मई द्युतिवान ॥१२॥

दोहा

जिन छत्रन में एक मणि, द्युतिकर कांति अपार।
बैडूरज मणिमय दिपै, ता रचा अधिकार ॥ १३ ॥
ता मणिकी महिमा अधिक, फैली जगत मझार।
सुनी चोर भूपति तनुज, मनमें हरष सुधार ॥ १४ ॥

पद्धड़ी

सब चोरनको तबही बुलाय। तिनसों यह बात कही सुनाय ॥
तुममें कोई सामर्थवान। जो उस मणिको लावै सुजान ॥१५॥
तिनमें इक सरज नाम चोर। सो कहत भयो इम बैन जोर ॥
मैं इन्द्र मुकटकी मणि उदार। चणमें लाऊं अवनी मँझार ॥१६॥
जो दुराचार कर युक्त नीच। ते तत्पर खोटे करम बीच ॥
यह बात युक्त जानो प्रवीन। यामें संशय रंचक न हीन ॥१७॥
तिस बच सुनकर तस्कर सूबीर। तिसको आज्ञा दीनी गहीर ॥
तस्कर सूरज कपटी महान। चुल्लक को भेश धरो निदान ॥१८॥
सो काया क्लेश करै अपार। बपु चीण कियो बहु बरत पार ॥
पुर ग्राम द्रोण पट्टन सुदेश। तिनमें भिरमन करता बिशेष ॥१९॥
उपदेश सर्व जनको कहंत। अपनो आपो परगट करंत ॥
नाना प्रकार तप तपत सोय। हिरदय में धारै कपट जोय ॥२०॥

दोहा

क्रम कर ताम्र सुलिप्त पुर, आयो तप मैं रक्त।
सुन कर बंदनको चलो, सेठ जिनेन्द्र जुभक्त ॥ २१ ॥
माया चारी की तबै, देखी दुर्बल काय।
नमस्कार कर सेठ जी, स्तुति कर घर लाय ॥२२॥

सोरठा

कोई न जानन हार, धूरत जनको धूर्तपन।
जे पंडित बुधवार, तेभी ठगे सुजाय हैं॥ २३॥

चौपाई

मणिको लखकर तस्कर सोय। हर्षित मनमें बहु बिधि होय॥
जैसे सुबरण देख सुनार। मनमें धारै हर्ष अपार॥ २४॥
तब वह सेठ महा बुधिवान। सरल चित्त सम्यक्त निधान॥
इसको श्रावक निर्मल देख। यासों बचन कहे सुबिशेष॥२५॥
छत्र तनी रक्षा तुम करो। मेरे मनको संशय हरो॥
तबही कहै सुनो चितलाय। मैं तो नहीं रहूं इस ठाय॥ २६॥
आग्रह करके भक्ति सुधार। याको राखो जिन आगार॥
आप चले व्यापार निमित्त। इसे पूंछकर हर्षित चित्त॥ २७॥
भरो परोहन बहु बुधवान। नगर बाह्य तब कियो पयान॥
सब कुटुम्ब निज काज लगाय। आवे जावे जन अधिकाय॥२८॥
तादिन क्षुल्लक यह मनलाय। अर्द्ध रात्रि मणि लियो चुराय॥
सेठ धाम तज चलो लवार। मणिकी रस्म लखी कुतवार॥२९॥
चोर जान तिस पकड़न काज। तलवर धावो जाय न भाज॥
तब यह दौड़ो चोर अयान। सेठ जिनेन्द्र भक्ति जिसथान॥३०॥
रक्ष रक्ष इमि कह सिरनाय। शरन सेठ मैं तुम्हरी आय॥
तब वह सेठ बनिक सिरताज। सम्यक दृष्टी धर्म जिहाज॥३१॥
कोलाहल सुनके गुणवन्त। याको जानो चोर तुरन्त॥
जो इसको पकड़ाऊं जाय। दर्शन मलिन होय अधिकाय॥३२॥
ऐसो मनमें कियो बिचार। कहत भयो सुनरे कुतवार॥
यह धर्मातम बुद्धि निधान। हो मूरख तुम नांहि पिछान॥३३॥
इन्हें ठहरायो तुमने चोर। मुखते बहुत मचायो शोर॥
चारित रतन तनो भंडार। यह श्रावक संतोषी सार॥ ३४॥

मैंने मणि मँगवायो सोय । तातें अब लायो थो सोय ॥
ऐसे बच सुनके कुतवार । नमिकर गयो गेह तत्कार ॥ ३५ ॥

सोरठा

तब एकांत सुजाय, बणिक पती निज मणि लई ।
कहत भयो समझाय, माया चारी ताहि लख ॥ ३६ ॥

दोहा

रे रे पापी मूढ़ मति, तैं क्या कियो विचार ।
यह चेष्टा दुख दायनी, तोको है धिकार ॥ ३७ ॥

काव्य

जे अन्यायी जीव जगतमें हैं दुखकारी । सो निश्चय दुख लहैं जांय वे नर्क मंझारी ॥ जे पापी शुभ न्याय छोड़ पातिग रति होवें । अपनो पोषन करैं तेई भवि बीज सुबोवें ॥ ३८ ॥
फेर सेठ महाराज चोर ते गिरा उचारी । तू इस लोक मंझार तीव्र तृष्णा को धारी ॥ पड़ता पातिग मांहि नास निश्चय तुझ होवे । यामें संशय नांहि बिफल नर भव तू खोवे ॥३९॥

दोहा

इत्यादिक दुर बचन बहु, भाषे बज्र समान ।
काढ़ दियो निज थानतें, कपटी चोर अयान ॥४०॥

पद्धड़ी

ऐसे जगमें जो भव्य जीव । उपगूहन गुन पालो सदीव ॥
दुर्जन लंपट पापिष्ठ जोय । तिन जोग दर्श में दोष होय ॥४१॥
तिसको ढक लीजे बार बार । कल्याण हेत हिरदय बिचार ॥
अतिशयकर निर्मल श्रीजिनेश । तिनकर भाषित जिन मत बिशेष
जो वुद्धि हीन या जग मंझार । तिसमें भी दोष धरैं निकार ॥
ते पापी मतवाले अयान । यामें संशय रंचक न मान ॥ ४३ ॥
जैसे मिश्री अरु दुग्ध जान । पीवें जन जो अमृत समान ॥
जिसको पित्त ज्वर रोग होय । ताको लागत है कटुक सोय ४४

इति श्री आराधनासार विषय जिनेन्द्र भक्ति की कथा समाप्तम्

अथ स्थितिकरण अंग बारिषेण जीने

पाला ताकी कथा प्रारम्भः नं. ॥ ११ ॥

मंगलाचरण । कवित्त

जगत पूज श्री बीतरागको, भक्ति सहित सो नमन कराय ।
स्थिति करण गुण पालो जाने, ताकी कथा कहूं हरषाय ॥
बारिषेण श्रेणिक सुत ताने, अंग यही उद्योत कराय ।
भव्य समूह सुनो चित देकर, जाते सम्यक शुद्ध लहाय ॥१॥

चौपाई

भरथक्षेत्र में मागध देश । संपति को भंडार बिषेश ॥
राजग्रही नगरी तहँ जान । श्रेणिक नरपति सम्यक वान ॥२॥
सम्यक ब्रतकी धारन हार । नार चेलना तिस आगार ॥
तिन दोनो के पुन्य संजोग । बारिषेण सुत भयो मनोग ॥३॥
उत्तम श्रावक ब्रत धारंत । तत्त्व लखन में श्रावक संत ॥
इक दिन प्रोषधि कर धीमान । चौदश रैन गयो सुमसान ॥४॥
कायोत्सर्ग ध्यान धर धीर । तिष्टे तहँ गुण गण गंभीर ॥
ताहि दिवस इक कारज जान । मदन सुंदरी गणका आन ॥५॥
बनमें क्रीड़ा करत अपार । श्रीकीरत तहँ सेठ निहार ॥
ताके गले हार द्युतिवंत । देखो वेश्या ने चमकंत ॥ ६ ॥
नगर नायका करै विचार । बिना हार मम जन्म असार ॥
ऐसे चितवन कर बहु भाय । दूखित ह्वैकर निज ग्रह आय ॥७॥
जितने दूखित तिष्टे नार । तितने आयो रैन मंझार ॥
बिद्युत तसकर यामें रक्त । चोरी करन विषै आशक्त ॥८॥
कहत भयो प्यारी सुन बात । क्या तुम दुःख आजहै गात ॥
कारन मोको देउ बताय । तब वह कहत भई समझाय ॥९॥

अहो प्राण बल्लभ सुखदान । श्रीकीरत जो सेठ महान ॥
ताके गले हार द्युति वन्त । सो मोको दो लाय तुरन्त ॥१०॥

दोहा

जो तू नोको लायदे, तो मेरो भरतार ।
जो लावै नहि हारको, तो नहि प्रीत लगार ॥११॥

सवैया

बचन सुनाए नार लिये सोई हिये धार, साहस अपार कर रैन मांही जायके । गयो सेठके अगार लियेहै चुराय हार, बुध अनुसार चतुराई को फेलायके ॥ पथमे चलो सो आत तेज मणि की लखात, तब कुतवार साथ लगो पीछै धायके । जब यह पापी चोर सको नहि तहँ दौर, गयो है मसान भूमि हिये डरपाय के ॥ १२ ॥

दोहा

बारषेण चित ध्यान में, ठाढे आतम लीन ।
तिन चरनो ढिग हार धर, अदृश भयो मलीन ॥१३॥
कोतवाल तत्क्षण गयो, राजा के दरबार ।
कहत भयो बिस्तांत सब, सुनिये प्रभु चित धार ॥१४॥

चौपाई

वारिषेण तुम सुत महाराज । चोरीकरत लखो हम आज ॥
तब राजा इसके सुन बैन । कोप सहित कीने निजनैन ॥१५॥
ऐसे कहत भयो नृपराय । हो पुरुषो सुनलो चित लाय ॥
खोटे चरित पापकी खान । मो सुतको देखो अधिकान ॥१६॥
भूमि मसान भयानक काय । तामे ध्यान धरे अधिकाय ॥
कहँ तो धर्म तनी यह वात । कहां ठगने करनो विख्यात ॥१७॥
जे ठगहैं जगमें अधिकार । क्या क्या काज करैं नलगार ॥

फिर नृपति मन कीन विचार। दीरघ राज हमारो सार ॥१८॥
तिसभोगन लायक सत जेह। तिनने कारज कीनो येह।
याते अधिक कष्ट नहिं कोय। जगत माहिं देखो अब लोय १९॥

दोहा

इम विचार कर नृपति ने, हुक्म दिया तत्काल।
ताको मस्तक छेदिये, शीघ्र जाय कुतवाल ॥२०॥

चौपाई

इम आज्ञांदीनी नृपाल, कुँवर हतन को चले चंडाल।
इकठे भये सबै मातंग। चोर हतनको उद्धित अंग ॥ २१ ॥

काव्य

तहां एक चंडाल तीव्र असि करमें लीनी। वारिषेण के सीस विषै तिन ततछिण दीनी ॥ नगरीके सबलोग खड़े देखें तिह ठाहीं। इनके पुन्यप्रभाव भयो कारन अधिकाई ॥ सो खड्ग फूल मालाभई, देखन जन हरषाइयो। बहु देवन जै जै करी, पुलकित चित गुण गाइयो ॥ २२

चौपाई

आचारज इम कहैं उचार। पुन्य महा सुखको भंडार।
तीव्र अग्नि जल सम ह्वै जाय। वारध सेती थल दरशाय ॥२३॥
विष अमृत अरु मित्र समान। विपति संपदा है अधिकान।
ताते सुख इच्छुक भवि जेह। करो पुन्य नाना विधि तेह २४॥
पुन्य कौनको कहिये बीर। ताको बर्णन सुनो गहीर।
श्री जिनचरन कमल की सेव। पांच दान दीजे बहु भेव २५
शीलतनी रक्षा उपवास। या विधि पुन्य जिनेश्वर भास।
इम अचरज सुर असुर निहार। हर्षित ह्वै इम कहत पुकार२६॥
पुन्य बड़ो है जगत मँझार। इहविधि अस्तुति करी अपार।

पुष्प वृष्टि नभते बरषंत । तापर अलि गुंजार करंत ॥ २७ ॥
धर आनंद हिये तिहबार । बड़े बड़े सावंत अपार ।
कहतभये नृपति से जाय । हो साधू सुनये मनलाय ॥ २८ ॥
बारिषेनको चरित महान । ताको अब हम करैं बखान ।
तुम्हरे सुतको चित्त अभंग । जिन चरनांबुज सेवनभृंग ॥२९॥
श्रावक क्रिया करै बुधवान । शुद्ध आत्मा निर्मल ज्ञान ।
जैन धर्म में निपुण महंत । तिस महिमा वर्णत नहिं अंत ३० ॥

दोहा

इम अस्तुति करते भये, नृपके आगे शूर ।
पून्य थकी क्या क्या न है, याते कुछ नहिं दूर ॥ ३१ ॥
श्रेणिक नृप सब चरित सुन, पश्चाताप कराय ।
मैं कारज कीनो कहा, हाय हाय दुखदाय ॥ ३२ ॥

अडिल्ल

करैं नरेंद्र विचार सोच उर धारके ।
जे जन हैं बुधवान करैं सुविचारके ॥
तेही सुख अधिकान लहैं या जग सही ।
तिनकी कीरति प्रगटहोय संशय नहीं ॥ ३३ ॥
जे महंत जड़बुद्धी हम सम जग विषै ।
विना विचारे कारज निज मुखते अखै ॥
तेई सुख सागरमें डूबत देखिये ।
अपकीरतिं परत्यत्त तिन्हींकी पेखिये ॥ ३४ ॥

दोहा

इत्यादिक आलोचना, करके श्रेणिक राय ।
महा भयान मसान में, गयो तबे दुख पाय ॥ ३५ ॥

मेघकुमार

कहत भयो जिन पुत्रसेजी सुनिये ज्ञान निधान ।
बिना बिचारे मैं कियोजी यह कारज दुखदाय ॥
सयाने क्षमा करो बुधिवान ॥ ३६ ॥

इत्यादिक बच भाषियोजी श्रेणिक बारंबार ।
विनयधार करतो भयोजी विनती बहुत प्रकार ॥
सयाने क्षमाकरो बुधिवान ॥ ३७ ॥

मलियागिरि दाहो थकोजी अथवा घिसन कराय ।
देत सुगंधत ऊसही जी त्योंही धूचित थाय ॥
सयाने श्रीगुरु के यह बैन ॥ ३८ ॥

तिस पीछे तस्कर वही जी सुभट महा बलवान ।
नमस्कार कर मांगियो जी, नृपसे अभय सुदान ॥
सयाने मोबिनती सुन भूप ॥ ३९ ॥

अहो देव मैंने कियोजी यह कारज दुखदाय ।
गणिका शक्त सदारहो जी हूं पापी अधिकाय ॥
सयाने मो बिनती सुन भूप ॥ ४० ॥

तुमरो पुत्र महान है जी श्रावक शुद्धाचार ।
इम वृत्तांत भाषे सही जी विद्युत ने तस्कार ॥
सयाने मो बिनती सुन भूप ॥ ४१ ॥

तब नृप आदरयुत कहोजी पुत्र चलो निज गेह ।
राज संपदा भोगवोजी तुमसे अधिक सनेह ॥
सयाने मो बच लीजे मान ॥ ४२ ॥

बारिषेण कहते भयेजी, सुनो तात चित लाय ।
चेष्टा सब संसार कीजी, मैं देखी बहु भाय ॥
सयाने सुनिये तात महान ॥ ४३ ॥

अब निज चरन कमल तनोजी, मोको शरण महान।
पान पत्र भोजन करोजी, आतमको हितठान ॥
सयाने सुनिये तात दयाल ॥ ४४ ॥
बनमें जाऊं बेगहीजी, मुनि मारग चित लाय।
तिष्ठूंगो नित ही तहांजी, हो दीगम्बर काय॥
सयाने सुनिये तात दयाल ॥ ४५ ॥
ऐसे कह संसार तेजी, कै बिरक्त अधिकार।
सूरदेव मुनि गयोजी, दिक्षाले तत्काल ॥
सयाने निज आतमके काज ॥४६ ॥

चौपाई।

तब यह बारिषेण मुनि संत। निज भाषित चारित पालंत॥
अवनीपर सो करत बिहार। भव्यनको संबोधत सार ॥४७॥
ग्राम पलाश कूट इक जान। तहँ चर्याको गयो महान ॥
श्रेणिकको मंत्री तिहि ठाम। अग्निभूत तिस नाम ललाम।४८
तनुज तासके पुष्प सुडार। पूजा दान विषै रतसार ॥
तामें गुण शोभित मुनिराज। आवत देखे धर्म जिहान ॥४९॥
हर्ष सहित उठकर तिहि घरी। तिष्ट तिष्टकर वंदन करी॥
नवधा भक्ति करी अधिकाय। दाताके गुण सप्त लहाय ॥५०॥
हर्ष सहित रसकर संयुक्त। दीनों मुनिको प्रासुक भुक्त॥
भले सुपात्र अर्थ जो दान। देवै सुख जग में अधिकान॥ ५१॥

दोहा।

लघु वयसे इन मित्रथो, पुष्प डाल हितकार।
मुनिको पहुंचावन चलो पूछ सो मिला नार ॥५२॥

काव्य।

भक्ति धार हिय मांहि, कमंडल कर निज लीना।
थोड़ी दूर सुजाय, फेर ग्रह को मन कीना ॥

पुष्प डाल इम बैन कहे, मुनि से तिहि बारी।
अहो देवपथ में तड़ाग, यह है सुखकारी ॥५३॥
हम तुम दोनों कीनी थी, यहाँ क्रीड़ा भारी।
सघन छांहि यातीर, अधिक शोभा बिस्तारी॥
कल्प वृत्त सम वृत्त, फलन कर उन्नत पेखो।
मोहत हैं सहकार तने, यह आगे देखो ॥५४॥
यह दूजो अस्थान, लखो तुम श्री मुनिराई।
हम तुम क्रीड़ा प्रथम, करी थी बहु सुखदाई॥
कैसो यह स्थान महा, बिस्तीरण जानो।
सत पुरुषन मन जेम, यहै निश्चय मन आनो॥५५॥

दोहा।

इत्यादिक बहु बचन कर, चिन्ह दिखाये सार।
नमस्कार करतो भयो, मुनि को बारम्बार ॥ ५६ ॥

चौपाई।

इसके चितकी जान तुरंत। तत्व बचन भाषे बुधिवन्त॥
आदर सहित सुधर्म सुनाय। याको मन बैराग कराय ॥५७॥
भगबत दिक्षा याको दीन। शास्त्र पढ़ाये बहुत प्रवीन॥
पालत संजम पढ़त पुरान। तो पण मोह धरै अधिकान॥५८॥
कानी नारि सोमिला जोय। ताको भूलत नाहीं सोय॥
आचारज इम कहे उचार। काम मोहको है धिक्कार ॥५९॥
ताकर जीव ठगाये जाय। हित अनहितको जानतनांहि॥
वारिषैन मुनि दीन दयाल। तपकी सिद्ध हेत तत्काल॥ ६०॥
तीरथ जात्रा करत अपार। द्वादश वर्ष गये निरधार॥
इक दिन ये दोनों मुनिराय। समो शरन मे पहुँचे जाय ॥ ६१॥
वीरनाथ को वंदन करी। निज कोठे बैठे तिहि घरी॥

तहं गंधर्बन की बहु नार । प्रभूके गुण गावें थी सार ॥ ६२ ॥
नाना बिधिके गान कराय । तामें बिरह अधिक दरसाय ॥
इत्यादिक गावें थी गान । ताको बरन सुनो दे कान ॥ ६३ ॥

गाथा ।

मलय कुचेली उम्मणी नोहे पवसियरणि ।
कह जीवो षणयधर इमंत बिरहेण ॥ ६४ ॥

चौपाई ।

इह बिधि गान सुनै देकान । काम अग्नि तिसतन उपजान ।
पुष्प डाल लघु बरती साद । नारि सोमिला कीनी याद ॥६५॥
बारिषेण जोगीश्वर तबै । याके मनकी जानी सबै ॥
स्थिति करण गुणपालन काज । याको साथ लेय महराज ॥६६॥
राज ग्रही नगरीमें आय । आवत देखे चेलन माय ॥
अपने मनमें करो बिचार। क्या मुझ सुत चित चलो अपार ।६७।
ऐसे मनमें चितवनकीन । कनक काष्ट दो आसन दीन ॥
तब यह बारिषेण धीमान । बीतराग आसनं थित ठान ॥६८॥

दोहा ।

जे मुनिराज जहाज सम, ऐसे क्रिया कराय ।
सत्पुरुषन के चित्तमें, भ्रांत नहीं उपजाय ॥
यह जतीन्द्र ताही समय, सुधा समाने बैन ।
बिनय वान माता थकी, कहत भये सुखदैन ॥ ७० ॥

पद्धडी

या बिधिते श्रीमुनि बचकहाय । सुनमाता अबतू चित्तलाय।
मेरे अन्तेवरकी जुनार । श्रँगारसहित लावो अवार ॥ ७१ ॥
ऐसे सुनकर मातातुरंत । बत्तीस नार अति रूपवन्त ॥
पटभूषण जुतबहुविधि श्रँगार। लाई मुनिढिग तिसहीसुबार ।७२।

शिष्य पुष्पडाल परमादलीन। तिष्ठथोइन ढिंग चितमलीन।
तब वारिषेण मुनि इम भनंत। सुन पुष्पडाल मोबच तुरंत ।७३।
जुगराज पदी मेरीअपार। बहुसार संपदाकी भंडार ॥
अरुये नारी अतिरूपवान। हो मुनितुझ रुचि तोलेमहान।७४।
तिनके बच सुनकर पुष्पडार। लज्जाजुत उठकर भूनिहार॥
गुरुचरन कमलमें शीसधार। बचकहत भयोकर नमस्कार॥७५॥
होमुनि स्वामिनतुम धन्यधम्य।तुमलोभ पिशाच कियोकदन्य॥
अरु साततत्व भाषेजिनेन्द्र। तिनजाननको पंडितजितेन्द्र ।७६।

दोहा

जे महंत तुम सारिखे, तज संपति तप ठान।
तिनको क्या इसलोक में, दुर्लभ है भगवान ॥ ७७ ॥

चौपाई

मैं तो जन्म अंधसम होय। यामें संशय नाही कोय।
तपरूपीमणि ग्रहणकराय। तऊकारण तियनाहि विराय ।७८।
तुमने द्वादशवर्ष प्रजंत। तप निर्मल कीनो गुणवन्त॥
अरुमैं मूरखभी तपकीन।पणमुझ चित सलरही मलीन॥७९॥
तातें करुणानिधि तुमईस। मैं अपराधी विस्वेबीस॥
प्राश्चित मोकूं दीजे देव। जाते नाशहोय अघभेव ॥ ८० ॥
तबही बारषेण मुनिचन्द। निश्चल वृतधारी गुणवृन्द॥
परमानंद उपजावनहार। बचन कहे ताको हितकार ॥ ८१ ॥
होमुनि धीरवीर मनमांहि। दुखअब कीजै रंचकनांहि॥
यह प्रानी।उठ करमबसाय। पंडितजन भी मग विसराय॥८२॥

काव्य

ऐसे कहकर बैन सरस धीरज उपजायो।
प्राश्चित आगम जुक्त देयकर शुद्ध करायो॥

फिर श्री पुष्प सुडाल बचन गुरु के चित आने ॥
है वैराग सुभाव बहुत दुःसह तप ठाने ॥ ८३ ॥
धर्म रूप पर्वतते जो कोइ पड़तो प्रानी ।
तिसको थांभा भव्यनने जो करअधिकान ॥
निज कल्याण निमित्त यही गुण हिरदय धारो ।
स्वर्ग मोक्षफल लहोजगत महिमा विस्तारो ॥८४॥

दोहा

देह आदिक अरु संपदा, यह जग अथिर सुजोय ।
तो पण करहू थान में, रक्षाते सुख होय ॥ ८५ ॥
कोड़ौ सुख दातार जो, धर्म जगत विख्यात ।
तिसही रक्षाकरन ते, क्या क्या सुख नहिंपात ॥८६॥

सवैया इकतीसा

ऐसो जान भव्य जन तजो परमाद वेग, एही दुख कारन हैं जग मांहि जानिये । भवदधि तारन को अंग स्थिति कर्न सेत ताहि, पालो बार बार छिन न भुलानिये ॥ कहे गुरु बैन येह वारिषेन मुनि वह, हमें मोक्ष थान देउ भव भ्रम हानिये। और सुख मंगल की प्राप्त नित प्रति करो, यह बर मांगत हूं मेरे कर्म भानिये ॥ ८७ ॥

चौपाई

कैसेहैं वे श्रीमुनि राय । वारिषेन जी जन सुखदाय ॥
श्री जिनचरन कमलके भृंग। ज्ञानध्यान रतजयो अभंग ॥८८॥
है प्रसिद्धमहिमा जगबीच। ज्योंपूरव शशिसहित मरीच ॥
तपरूपी भू भृततेजान । पड़तो मुनिथामो धीमान ॥ ८९ ॥

दोहा

हस्तालंबन देयके, व्रत को प्रापति कीन ।
स्थिति करन गुन पालिये, वारषेण परवीन ॥ ९० ॥

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषै स्थिती करण अंग वारषेण जी ने पाला ताकी कथा समाप्तः ।

* अथ वात्सल्य गुण विष्णुकुमार मुनि *
नें पाला तिनकी कथा प्रारम्भः नं० १२

अड़िल्ल

श्री अरिहंत जिनेश्वर को सिरनाय के, और सरस्वति मात तनों मनलायके। गुरुके चरन कमल जग में सुखकार जी, तिनको बंदन करूं हर्ष उरधारजी ॥ १ ॥

चौपाई

वातसल्य गुण प्रगटकराय। विश्नु कुमार भये मुनिराय।
तिनकी कथाकहूं चितलाय। सुनतें भविजन आनंदपाय ॥२॥
येही भरतक्षेत्र है बेश। तामधि आवंती शुद्ध देश ॥
तहँ उज्जैनीपुरी अनूप। श्रीवर माता कोवर भूप ॥ ३ ॥
श्रीयमती ताके पटनार। ताकोलख रति लज्जाधार ॥
फिर कैसोहैं नृपतिउदार। न्यायशास्त्रको जाननहार ॥ ४ ॥
अरिमद मर्दनको बलवान। परजा पालन दक्षमहान ॥
धर्मातमा धर्ममैं लीन। दुष्टनको जिन निग्रह कीन ॥ ५ ॥
तिस नृपतिके मंत्रीचार। जैन धर्मके शत्रु निहार ॥
बलनिमुंच बृहस्पति पहलाद। तिष्ठत नृपढिग जुतअहलाद ॥६॥
धर्मलीन नरपति है जेह। ए पापी सेवें कर नेह ॥
जैसें चंदनके तरुमांहि। दुष्टसर्प निसदिन लिपटाहि ॥ ७ ॥

दोहा

इक दिनके औसर विषै, ज्ञान नैत्र दुतिवान।
नाम अकंपन सूरजी, आय तहँ थिन ठान ॥ ८ ॥

मद अवलिप्त कपोल छंद

कैसे हैं ऋषिराज बचन अमृत बरसावें।
भव्यरूप जेधान सींच तिन मुदित करावें ॥

काम जई मुनि शान्ति सतक तिन के संग मांही।
देव इन्द्र नागेन्द्रन कर पूजत अधिकाई ॥ ९ ॥
उज्जैनी उद्यान विषै तिष्ठे सुखदाई।
तब आज्ञा गुरुहई सुनो सब चित्त लगाई ॥
राजादिक जन आय कहैं कुछ जो सुन लीजो।
हो जतीन्द्र तुम बीच कोऊ मत उत्तर दीजो ॥ १० ॥

दोहा

अरु तुम में कोई मुनी, देगो उतर सोय।
सर्व संग को तास तैं, महा उपद्रव होय ॥ ११ ॥

सोरठा

दोनों भव सुखकार, ऐसे गुरुके बैन सुन।
तब ही मौन सुधार, ध्यान लगा तिष्टत भये ॥१२॥
जे हैं शिष्य महान, बिनय सहित गुरु वच कहैं।
जो अग्या नहिंमान, ते कुपात्र सम जग बिषैं॥१३॥

चाल-अहो जगत गुरु की

या अन्तर पुरलोक चित्तमें हर्ष बढ़ाये।
पूजन वंदन काज सार सामग्री लाये ॥
तास समय भूपाल महल ऊपर थित ठाने।
पुरजन को समुदाय जात देखे अधिकाने ॥ १४ ॥
श्री वरमा महाराज तबै इम बचन उचारें।
बिना काल पुरलोक कहा को गमन सुधारें ॥
तब वे मंत्री चार दुष्ट निज वचन सुनावें।
अहो देव वन मांहि जती नित आवें जावें ॥ १५ ॥
तिन के ढिंग यह जात पुष्प लेकर जन सारे।
सुन ऐसे नरराय फेर इम वचन उचारे ॥

तिनके देखन काज चलें हम भी इहिबारा।
लीने मंत्री साथ तहीं पहुंचे तत्कारा ॥ १६ ॥

दोहा

तहां जाय कर नृपति ने, देखो मुनि समुदाय।
ध्यान जुक्त निश्चल सबै, आतम सों लवलाय ॥१७॥

दोहा

सब मुनिको लख नगन स्वरूप। प्रति प्रति बंदन कीनी भूप॥
भक्तिहर्ष करिके तिहघरी। बहु प्रकार अस्तुति बिस्तरी ॥१८॥
सब जतीन्द्रलख नृपको सही। धर्मलाभ काहू नाहिंकही॥
निसप्रेही वे साधुमहान। देखराय तब कियोपयान ॥ १९ ॥
तिसऔसर मंत्री पापेश। सत्पुरुषनसों राखे द्वेश ॥
कहत भये सुनिये नरनाह। क्यायह बोलन जानत नांह ॥२०॥
कपट सहित यह मौन धरंत। यह बिधि हास्य बचनभाषंत ॥
नृतजुत चाले तिसहीबार। दुष्ट चित्त ये मंत्री चार ॥ २१ ॥

दोहा

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र कर, बंदनीक गुरु जान।
जे पापी निंदा करैं, ते सठ स्वान समान ॥ २२ ॥

पद्धडा।

तिस पीछे मारगके मंझार। श्रुतसागर मुनि आवत उदार॥
चर्या निमित्त कीनो पयान। गुरुकी आज्ञा नहिं सुनी कान।२३।
इनको आवत लखके तुरंत। तब दुष्ट सचिव ऐसे भनंत ॥
यह तरुन बैल देख्यो प्रत्यच्च। आवतहै मगमें पुष्ट कुच्च ॥ २४ ॥
ऐसे सुनि सुनि इन जान भाव। इन बाद करनको चित्तचाव ॥
तब स्याद् बाद नभकर प्रचंड। नृप देखत वच भाषे प्रचंड ।२५।
कैसे हैं बच सुनिके महान। ज्ञानांबुज जलकल्लोलमान ॥
ऐसे बचकर जीते तुरंत। विद्या गर्भित दुजमति एकन्त ॥२६॥

दोहा।

एक मुनी जीते बहुत, यह क्या अचरज जान।
ऐसे भानु प्रकाश तें, होत सबै तम हान ॥ २७ ॥

चौपाई।

श्रुतसागर मुनि गुरुढिंग आय। बाद भयो सो कह्यो सुनाय ॥
तब गुरु सुन इम भाषे वैन। हां यह काज कियो दुखदैन ।२८।
सुखको देनहार जो संग। अपने करते कीनों भंग ॥
तात तुम एका की जाय। बाद थान तिष्ठो मुनिराय ॥ २९ ॥
कायोत्सर्ग रैनमें धार। ध्यान करो परमारथ सार ॥
तो जीवन संगको ह्वै सही। तुम निर्मल हो गुरु इमकही ॥३०॥
धीरवीर थिरमेरु समान। श्रुतसागर नामा ऋषि जान ॥
गुरु बच सुन संग रक्षा हेत। बाद थान तिष्ठे जग सेत ॥ ३१ ॥
तब वे ब्राह्मण मंत्री चार। मान भंगकर लाजित अपार ॥
रात्रि विषै मारनके काज। घरसे निकसे आयुध साज ॥ ३२ ॥
मारग में श्रुतसागर संत। कायोत्सर्ग धार तिष्ठंत ॥
दुष्ट चित्त इम करो विचार। चारों खड्ग लई इकबार ॥३३॥
मुनि मस्तक वाही तत्काल। इन मुनिवरको पुन्य विशाल ॥
नगरदेव आसन कंपाय। सब चरित्र लख तत्छिन आय ॥३४॥

दोहा।

इन चारों मंत्रीनको, कीलत भयो तुरंत।
नगन खड्ग तिनकर विषै, ऋषि सिरपर शोभन्त ।३६।

चौपाई।

होत प्रभात सबै जन आय। देखे मंत्री कीलत काय ॥
नृपके ढिंग जब कहो सुनाय। तब नृपति देखो तहँ आय ॥३७॥

जो पापी या जगत मंझार। कुत्सित मनके धारन हार ॥
निराबाधको दुख बहु करैं। ते निश्चयकर नर्कहिं परैं ॥ ३८ ॥
जो समान जनको मारत। तिनको मुख देखे महिसंत ॥
येतो तीन जगत गुरु जान। इनको जेदें कष्ट महान ॥ ३९॥
ते बहु विधि जन दुःख लहाहि। ताकी कथा कही नहिं जाहि ॥
कुल क्रमते एते परधान। अरु इनको ब्राह्मण नृपजान ॥४०॥
याते इनकी हनी न काय। क्रोध धार खरपे चढ़वाय ॥
देश निकालो दियो तुरंत। न्याय शास्त्र वेत्ता नृपसंत ॥ ४१ ॥

सोरठा।

अन्यायी नर जेह, ते असंगति को लहे।
यामें नहीं संदेह, आचारज इम कहत हैं ॥ ४२॥
जैन प्रभाव निहार, भविजन आनंदित भये।
कीनी जयजयकार, कोलाहल बहु ठानके ॥४३॥

पद्धड़ी।

इस अंतर हस्तिनापुर मंझार। नृप महा पदम तिष्टे उदार ॥
सो कपट रहित धर्मज्ञसार। लक्ष्मी पति नामा तासुनार ॥४४॥
तिन दोनोंके शुभपुन संजोग। जुगसुत उपजे अतिही मनोग ॥
इक पदमनाम शुभतनुज जान। अरु विष्णुकुमार द्वितियमहान ४५
बहुसुखसे तिष्टे धर्म लीन। इस आगे और सुनो प्रवीन ॥
इक पदम नृपतिहै पुन्यवान। लख धारे अंबुजकी समान ॥४६॥
निज चरनकमलमें लीन सोय। एक दिन चित्त वैराग होय ॥
निजपुत्र पदमके राजदेय। छोटेसुतको निजसाथ लेय ॥ ४७॥
श्रुतसागरचंद्र मुनीदयाल। परमारथमें निजचित विशाल ॥
तिनको करके नृप नमस्कार। दिक्षा लीनी आनंद धार ॥४८॥

अवधानविषै तत्परमुनिंद्र । श्रीविश्नुकुमार महा जोगिंद्र ॥
भगवतभावत तपको करंत । उपजी विक्रियसो रिधिमहंत ॥४६॥

दोहा ।

तिस अंतर नृप पदम अब, दीरघ राज कराय ।
हस्तिनागपुर नगरमें, तिष्टे बहु सुख पाय ॥ ५० ॥
बलि आदिक चारों सचिव, पदम रायपै आय ।
होत भये मंत्री तहां, अपनी बुद्धि पसाय ॥ ५१ ॥

चौपाई ।

एकदिना यह बलप्रधान । रायकाय कृषिलख अधिकाय ॥
कहतभये सुनियेहो देव । कृषितन क्यों सो कहियेभेव ॥ ५२ ॥
तब नरेंद्र बोले इमबान । कुंभ नगर सिंहबल राजान ॥
दुर्गम गढ़को बल धारंत । मेरो देश उजाड़ करंत ॥५३॥
याते मम चिन्ता अधिकाय । यह विधि कारन कहो सुनाय ।
तब राजाकी आज्ञा पाय । बल मंत्री ता ऊपर जाय ॥५४॥
अपनी बुध चतुराई ठान । ततछिन ताको गढ़के मान ।
हर बलको बांधो तत्कार । लायो गजपुर नगर मँझार ॥५५॥
पदमराय पै तबही जाय । कहत भयो लोहर बलराय ।
ऐसी सुनकर पदम नरेश । निज तनमें धर हर्ष विशेष ॥ ५६ ॥
कहत भयो बलते तेहिबार । धीर बीर बच सुन तू सार ।
जो तुमरे चित इच्छा होइ । बर मांगो मैं देहूं सोइ ॥ ५७ ॥
बोलो बच सुन नृप गुण गेह । रहै भंडार बचन शुभ येह ।
जब मोको कछु पर है काज । लेऊंगो तब में महाराज ॥

काव्य

रस अन्तर मुनि सात सतक जिन के संग सोहैं ।
नाम अकंपन सूर जगत जनके मन मोहै ॥

भविजनको उपदेश देत आये हितकारी ।
गजपुर वाह्यउद्यान विषै तिष्टे जगतारी ॥ ५९ ॥
जब सुनके पुरलोग किये उत्साह अपारा ।
ले सामग्री सार गये बंदन तिहिवारा ॥
जब ये मंत्री चार कियो मनमाहिं बिचारा ।
यह नृप मुनिको दास, एम डर चित बहु धारा ६०॥

दोहा

इम डर मनमें आनकै, चारों कियो बिचार ।
बलने नृप से आयके, बर मांगो तत्कार ॥ ८१ ॥
सप्तदिवस को राज अब, दीजे भूप उदार ।
तुम सतबादी जगत में, बचनकरो प्रतिपार ॥ ६२ ॥
तिन मंत्रिन के बचन कर, ठगो गयो नर राय ।
राजदियो वाही समय, आप महल तिष्टाय ॥ ६३ ॥

चौपाई

तब ये मूरख मंत्री चार । राज पाय जिय कपट सुधार ।
मुनि गणके मारनको जबै । यज्ञ आरम्भ कियो इन तबै ६४
बाड़ो रोप्यो चारों ओर । तृणको मंडप कियो अघोर ।
तामें बिप्र वेद ध्वनिकरैं । पशु घात बहुविधि विस्तरैं ॥ ६५ ॥
पशू होय करके दुर्गंध । घृत और अग्नि भयो सम्बध ।
ताको धूम उड़ो दुखदाय । जाकर मुनि उपसर्ग लहाय ॥६६॥
झूठीपातल ले मतिहीन । सब जतियन पे चेपन कीन ।
ताकर पीड़ित श्रीमुनिराय । द्वै प्रकार सन्याश धराय ॥ ६७ ॥
कैसे हैं सब वे मुनिचंद । परमातम में धरो अनंद ।
शत्रु मित्र में है सम भाय । अचल मेरु सम निश्चल काय ६८

इस अन्तर अब सुनो बखान । दक्षिण मथुरा नगर महान ।
तहँ श्रुतिसागर चंद मुनिंद । अष्ट निमित्त जान गुणवृन्द ६९
तिष्ठै थे वे जन सुखकार । कारन एक लखो तिहिवार ।
नभ में श्रवण नक्षत्र महान । कंपत देखो तिन अधिकान ७०
हाय हाय यह कष्ट अपार । मुनिगण पै इस समय मंझार ।
पुष्पदंत क्षुल्लक तहँ एक । मुनिढिग तिष्टै सहित बिवेक ७१
तातै पूछो तब सिरनाय । कहँ उपसर्ग कौनको थाय ।
तब श्रीगुरु बोले इम बान । गज पुरनगर विषै तू जान ॥७२॥
नाम अकंपन शूर प्रधान । सात सतक मुनिता संग जान ।
तिनको बहु उपसर्ग अवार । फिर श्रावक पूछो कर धार ॥७३॥
अहो देव यह कष्ट अपार । क्योंकर दूर होय तत्कार ।
तब गुरु कहत भये सुन बत्त । भू भूषण पर्वत परतत्त ७४
तापर विष्णुकुमार जोगिन्द्र । धरैविक्रिया ऋद्धि मुनिंद ॥
तिष्टत हैं तहँ ध्यान लगाय । तिनकर यह उपसर्ग पलाय ७५

दोहा

तबही छुल्लक गगन मग, ततछिन कियो पयान ।
विष्णुकुमार मुनिंदने, भाषो सब तिन आन ॥ ७६ ॥
तब स्वामी कहते भये, क्या मुझको है ऋद्ध ।
नाम विक्रिया तासको, उपजी है परसिद्ध ॥ ७७ ॥

सोरठा

लेन परीक्षा जान, भुज फैलाई आपनी ।
सो भू सूतको भानु, सागर तक पहुँचत भई ॥ ७८ ॥
जानत भये तुरंत, मोकूं ऋद्ध उपजत सही ।
धर्म स्नेह धरंत, हस्ति नागपुर में गये ॥७९॥

गीता

तब जायकर नृपपद्म सेती बचन ऐसे उच्चरे।
हो भ्रात कारज कष्ट दाता कौन तुम ने यह करे॥
शुभ कुल हमारे में किसी ने आज लों यह नहिं करी।
ऋषि गणन को उपसर्ग कीजो क्या सु यह चितमें धरी।८०।
जो सृष्टि को पालै सदा अरु दुःख को निग्रह करै।
वोही नृपति है जगत माहीं जस तिनों को बिस्तरै॥
जो साधु जन की करै बाधा ते लहै अति कष्टही।
जैसे उषण जलते लहै तन जान या बिधि तूसही॥ ८१॥

दोहा

जोलौं मुनिगण को अबै, कष्टग होय शरीर।
तिनतेही तू शांतिकर, मान बचन भो बीर॥ ८२॥

छप्पय

ऐसे बच सुन पदम नरेश्वर उत्तर दीनो।
हो मुनि मैं क्या करूं काज यह बलने कीनो॥
सप्त दिवसको राज दियो मैं बचन बंध है।
ताते तुम अब करो बेग जाते आनंद है॥
यासेमें अब क्या कहूं कारज तुमहीं से सरै।
दैदीप्यमान सूरज उदै दीप प्रभा नहिं बिस्तरै॥८३॥

पधड़ी

तब बिष्णुकुमार मुनिन्द चंद। विक्रिया ऋद्धि धारै अमन्द॥
लीनो बावनको रूप धार। बहु वेदध्वनी मुखतें उचार॥८४॥
जहँ होत यज्ञ अतिही अघोर। अरु ब्राह्मण बहुविधि करत शोर।
तिहि थानक तिष्ठे आप जाय। सुनकर बलआयो हरषपाय ८५
अरु कहतभयो इम बचनसार। हो विप्र रुचै सो ले अबार।

वेदांग वेदपाठी जु येह। बालो ब्राह्मण बावन सुदेह ॥ ८६ ॥
हो राजन चित करके उदार। भू तीन पैंड़ दीजे अबार।
वल फेर कहौ सुन विप्र संत। कछु बहुत मांगियो हरषवंत ८७

दोहा

अहो विप्र क्या जांचियो, बलिसे दाता पास।
और कछू मांगौ अबै, ऐसे बहुजन भास ॥ ८८ ॥

सोरठा

समझाये बहुबार, और कछू मांगों नहीं।
तीन पैंड़ सुखकार, धरती दीजे देव अब ॥ ८९ ॥
तब बलि कहो सुनाय, तीन पैंड़ भू लीजिये।
इम कह जलमँगवाय, छोड़ा तबही संकलप ॥

चाल

तव मुनि क्रोधकर एक करतेभये एक पग लेय कर मेरुधारौ।
दूसरो चरण फिर मानवोत्तर धरो कियो विस्तार नहिं टरे टारो
तीसरी पैंड़की भूमि दे बेग अब आपसुखनाथ बच इम उच्चारो।
तासमैं क्षोभ त्रैलोक्य माहींभयो और नभ में हुवो क्षोभभारी९१
सर्व परवतचले सबै वारधिहले भूमिथरहरभई तिसीबारी।
भयो संघट्ट परचंड पाषाण में देव बीमान तब चिगे भारी ॥
जबै सुर असुरगण आव युतविस्तरी क्षमाकरनाथ इमअर्जधारी।
तबै बलिरायको बांधतत्क्षिणलियो ल्यायचरननतलेदियोडारी ९२

दोहा।

सबै देव मिलके तबै, पूजा करी अपार।
विष्णुकुमार मुनिने दये, क्षमाकराई सार ॥ ९३ ॥
स्वान सतक मुनिराजको, दूरकियो तिन कष्ट।
पुन विष्णुकुमार आपि ऋद्धिधार उत्कृष्ट ॥९४॥

चौपाई

तबहीं सुनकर पद्म सुराय। आतेवर तज बाहर आय।
विष्णुकुमार आदि मुनिचंद। तिनके चरण परो गुणवृंद ॥९५॥
अरुवेभी चरणों परधान। खोटे अभिप्राय को मान।
विष्णुकुमार अकंपन शूर। और मुनी जे गुण भरपूर ॥ ९६ ॥
सबके चरनन में सिरनाय। मिथ्या मत तज ज्ञान लहाय।
जैन धर्ममें तत्पर होय। श्रावक व्रत धारे मदखोय ॥ ९७ ॥
ताही छिन सुरगाए गान। तीन बीन लाये बुधिवान।
तिनकर पूजे विष्णुकुमार। तीनलोक के आनंदकार ॥९८॥
आचारज अब कहैं उचार। और भव्य जे जगत मंझार।
तेभी वातसल्य गुण गेह। करो जगतमें सहित सनेह ॥ ९९ ॥
मुनि आदिक सबही भव जीव। इनते बतसलकरो सदीव।
स्वर्ग मोक्षकी आपत दोय। याही गुणकर निश्चय होय १००

अडिल्ल

ऐसे विष्णुकुमार मुनीश्वर जानिये।
जिन चरनाम्बुज सेव अलि सम मानिये॥
धर्मरागयुत उद्यमवंत अपार हैं।
बतसल गुण परकाश भये भव पार हैं ॥ १०१ ॥
सोही विष्णुकुमार मुनीश्वरजी सही।
हमको भवदधिपार करो विनती यही।
बात सत्य गुणतनी कथा पूरनभई।
सुर शिव सुखदातार बखत रतना कही ॥ १०२ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषै विष्णुकुमारमुनिनिवारसल्य
गुणपालाताकीकथा समाप्तः ॥ १२ ॥

—:0:—

वज्रकुमार मुनिने प्रभावनांग गुण

पाला ताकीकथा प्रारम्भः नम्बर १३

मंगलाचरण दोहा

तीन जगत के गुरु प्रभू, परमातम भगवान ।
तिनको नमन सुठानके, कहूं कथा इस खान ॥ १॥
परभावन अंगक्क में, कीनों बहु उद्योत ।
वज्रकुमार मुनीश ने, तासु सुनत सुख होत ॥ १ ॥

चौपाई

गजपुरनगर महा रमणीक । बलनामा नरपति तहँ नीक ॥
ताके प्रोहित गरुड़ सुनाम । चतुर महा बुधको सो धाम ॥ ३ ॥
तिसप्रोहित के तनुज महान । सोमदत्त तिस नाम सुजान ॥
श्रुतसागरको जाननहार । सज्जनजनको आनन्दकार ॥ ४ ॥
एक दिना अहच्छतपुर जाय । नाम सुभूत मामग्रह आय ॥
विनय सहित इमवचन उचार । दयावन्त तुम माम उदार ॥ ५ ॥
दुरमुख नामा नरपतिसार । मुझको दिखलावो तत्कार ॥
तब तिन गर्वधार मन मांहि । राजाको दिखलायो नांहि ॥ ६ ॥
सोमदत्त तब बुद्धि पलाय । गहलेको तब रूप बनाय ॥
राजसभामें गयो तुरन्त । दे आशीरवाद बहु भंत ॥ ७ ॥
अपनी विद्या तहां प्रकाश । मंत्रीपद पायो सुखराश ॥
याको मंत्रीपद लख तेह । नामसुभूत जुमातुल जेह ॥ ८ ॥
अपनी जगदत्ताजो सुता । परनाई याको गुणजुता ॥
एक दिना जगदत्ता नार । ताको गर्भ रहो सुखकार ॥ ९ ॥
ताको भयो दोहलो येह । जो बिन सत अब बरसे मेह ॥
पक्काफल होवे सहकार । मैं आश्वादन करूं अबार ॥ १० ॥

ऐसे याके मनकी जान । सोमदत्त मुनि कियो पयान ॥
जे जगमें साहस धारन्त । बिना काल भी उद्यमवन्त ॥ ११ ॥
ढूंढ़त पाये पुन्य संजोग । मुनि सुमित्र नामा सुमनोग ॥
तरुसहकार तले थिर ठान । तिन अतिशय तरु फलोमहान ।१२।
महत पुरुष जहँ थितको करैं । तहँके तरुभी शोभा धरैं ।
ऐसी अतिशय मुनिकी जान । हरषो सोमदत्त बुधिवान ॥१३॥

दोहा ।

फल इकले सहकार को, भेजो नारी पास ।
तिष्टो आप मुनीश ढिंग, भक्ति सहित गुरुपास ।१४।
हैं पवित्र त्रिय जग विषै, बे सुमित्र मुनिराय ।
सोमदत्त पूँछत भयो, तिनको सीस नवाय ॥ २५ ॥

काव्य ।

हो मुनि दीनदयाल दयासागर जगतारी ।
तीन भुवन के मांहि कहो क्या है सुखकारी ॥
तुम मुख कमल समान तासते बचन बखानो ।
सार बस्तु को भेद कहो मम संशय मानो ॥ १६ ॥
तब मुनीश अति दक्ष धर्मको भेद बतायो ।
जो जिन बर जगचंद्र तास बानी में गायो ॥
अहो वत्स सुन भेद धर्मको तुम चितलाई ।
अनागार सागार यही दो बिधि सुखदाई ॥ १७ ॥
तिन दोनोंमें प्रथम जती को धर्म वतायो ।
दश प्रकार सो जात सहित रतन त्रिय गायो ॥
दूजो श्रावक भेद कहो पूजा अधिकारी ।
ब्रत प्रोषाधि जुत करै शील पालन सुखकारी ॥ १८ ॥
पर उपगार निमित्त तथा कल्याण हेत नर ।

दीनों भेद बताय धर्मको इहि बिधि हितकर ॥१९॥

इम सुन सोमसुदत्त तबै मनमें बैरागो ।

दीक्षा ले तत्काल निजातम रस को पागो

दोहा ।

गुरुकी भक्ति प्रशादतैं, पहुंचो आगम पार ।

तिष्ठो पर्वत नाभि पै, आतापन तप धार ॥ २० ॥

पद्धडी छन्द

इस अंतर इनकी नार जेह। जगदत्ता नामा जान लेह ॥

तिन पुत्र जनो अति रूपवंत। सुखआकर पूजन जोग संत ॥२१॥

मानो यह श्रेष्ठ सुकाव जान। अथवा विदुषनकी बुध समान॥

इक दिन जगदत्ता ग्रहमंझार। निज नाथ सुनोतुम चरितसार २२

अपने परिवार विषैसुजाय। बहु रुदन कियो तिन दुःख पाय ॥

सारेविरतांत कहो सुनाय। जिस बिधि भरता दीक्षा लहाय ॥२३।

तवसव परयन इस लारलेह। गिरि नाभि विषै पहुंचो सुतेह ॥

आतापन जोग धरे महान। तब देख नार कहे कोप ठान।२४।

सवैया इकतीसा

रे रे दुष्ट क्यों कियो विवाह कष्ट देनहार, मेरे साथ तैंने बहु चित्त उमगायके। अब तज दीन मोहे प्रीत करी तप मांहि, तिष्ठो शील धारतू तो चित हरपायके ॥ ताते इस बालक को पाल अब तूही वेग, ऐसे जो कठोर वच भाषे रिसलाय के। खोटो अभिप्राय धार बाल धरो चर्न मांहि, आप निज धाम तब गई दुखपायके ॥

दोहा

सिंह व्याघ्र कम्पन भगे, तापै शिशु गई डार ।

क्रोध धार या जगत में, क्या नहिं करे है नार ॥ २६ ॥

ताही औसर के विषै, बालक पुन्य पसाय।
कारन एक भयो तहां, सो सुनिये चितलाय ॥ २७ ॥

चौपाई

अमरावती पुरीको ईश। नाम दिवाकर देव खगीश।
तिसलघु भ्रात पुरन्दरदेव। तासों युद्धभयो बहु भेव ॥ २८ ॥
बड़े भ्रातको लघु तेहिवार। नारी जुततब दियो निकार ॥
कैसोहै लघु भ्राता जान। बुद्धकठोर धरै अधिकान ॥ २९ ॥
अबजो दिवाकर देवखगेन्द। चढ़ बिमानचालो गुणवृन्द ॥
तीरथ जात्राकरनउदार। दुर्गत बेदक सुखकरतार ॥ ३० ॥
नभमें जातहुतो बुधवन्त। पर्वत नाहि लखो दुतिवंत ॥
तापरतिष्ठे श्री मुनिराय। भक्तिसहित खग बंदेआय ॥ ३१ ॥
तहँ सुफरायमान दुतिवान। आननकंज समानमहान ॥
ऐसो बालक मुनिपद पास। पड़ोजो मानो पुनकी रास ॥ ३२ ॥
देखतही खग चितहरषाय। ततछिन ताको लियो उठाय ॥
निज नारीको दियो तुरंत। एहि बालक लीजे दुतिवंत ॥ ३३ ॥
तब नारीने देखो सार। याके करमें बज्र अकार ॥
ताते बज्रकुमार सुनाम। धरके लेयगयो निजधाम ॥ ३४ ॥
देखो मातातजो अयान। तो पण बालक पुन्यनिधान ॥
विद्याधरकी नारी लाय। याको पालो बहुत लडाय ॥ ३५ ॥

दोहा

अब वह बालक बुद्धवर, अपने गुणकी लार।
बढ़त भयो आनंद कर, दोयज शशि समसार ॥

अडिल्ल

या अन्तरयक कंकन पुरी को रायजी।
नाम विमल बाहन खग बहु सुखदायजी ॥

जो सो दिवाकर देवतनों सालो सही ।
या बालक को माम भयो कृत्तम यही ॥ ३७ ॥
तिसके ढिंग सीखो बहु विद्या जायके ।
पार भयो गुणवन्त बुद्ध अति पाय के ॥
सब खगेश इस बालक को लखके तबै ।
अचरज वन्त महान भये चित में जबै ॥ ३८ ॥

चौपाई

इस अन्तर इकदिन बुधवान । गरुड़ बेग विद्याधर जान ॥
ताके आवंती नरनार । गुणाकर पंडित बहु सुकुमार ॥ ३९ ॥
ताके पुत्री रूपनिधान । नाम पवन बेगा दुतिवान ॥
सो श्रीमंत शिखिरपै जाय । विद्या साधथी सुखदाय ॥ ४० ॥
तिनने ताके नैन मंझार । कंटक उड़कर पड़ो दुखकार ॥
ताकर पीड़त चल चितथई । याते विद्या सिद्ध नभई ॥ ४१ ॥
तबही कन्या पुन्यपसाय । बज्रकुमार कुंवर तहं आय ॥
आकुलता जुत ताहि निहार । दुर्जन समकाढो दुखकार ॥४२॥
भले जतनते चतुर सुजान । काढ़तभयो कुंवर गुणखान ॥
तब वो कन्या बहु सुखपाय । निश्चल चित्त कियो अधिकाय ।४३।
मंत्र जोगकर लही तुरंत । विद्या पर गुणी दुतिवंत ॥
कोड़ो सुखकी जोदातार । याको सिद्धि भई तत्कार ॥ ४४ ॥

दोहा

तब कन्या कहती भई, सुनो धीर मम बैन ।
तुम प्रसाद ते में लही, ए विद्या सुख दैन ॥ ४५ ॥

सोरठा

काज सिद्ध एहकीन, याते तुम ममनाथ हो ।
वरूं तोहि परवीन, गुणी होय वा निर्गुणी ॥ ४६ ॥

चौपाई

गरुड़बेग कन्याको तात । बिधि बिबाहकी कर विख्यात ॥
बज्रकुमार कुंवर सुखदाहि । ताको पुत्री दीनी ब्याहि ॥ ४७ ॥
इस अंतरअब बज्रकुमार । विद्या जुतनारी ले लार ॥
सेन्या संगलई बहुभेव । लीनो साथ दिवाकर देव ॥ ४८ ॥
अमरावती पुरीमें जाय । कीनो युद्ध महा भयदाय ॥
तत् छिन जीतालियो खगराय । नाम पुरन्दर जो दुखदाय ।४९।
उत्सव कीनों बहु बिधि साज । धर्म तातको दीनों राज ॥
सो यह बात सत्यही मान । भलो पुत्रकुं दीपक जान ॥५०॥
एक दिना राजाकी नार । मनमें कीनों एम विचार ॥
या होते मेरे सुत कोय । राज लत्त पावै नहिं सोय ॥५१॥
उपजी कौन ठौर यह बाल । होत भयो हम सिरको साल ॥
श्रीगुरु कहै कष्ट यह थाय । नारनकी बुध जड़ अधिकाय५२॥
बज्रकुमार कटुक बच सेह । माताके मुखसे सुनलेह ।
पिता पास सो गयो तुरन्त । कहत भयो यहिबिधि गुणवंत ५३
अहो खगेश्वर मैं किस बाल । याको भेद कहो तत्काल ।
तब खगेन्द्र बोलो मुसकाय । क्या तुम्हरीमत थिर नहिंथाय ५४
जो तुम बोलतहो यह बैन । मेरे चितको बहु दुखदैन ।
ऐसे कहे दिवाकर देव । फिर कुमार बोलो सुनलेव ॥५५॥
सांच बैन भाषो नर इंद । जाते मेरे होय अनंद ।
अरु न कहोगे तुम यह बात । तो भोजन परतिज्ञा तात ५६॥
याको हठ लखके नर राय । सब बृत्तान्त भाषो समभाय ।
ऐसे सुनकर कुँवर सुजान । है विरक्त चित चढ़ो विमान ५७॥

दोहा ।

सोमदत्त इनके पिता जो मुनि दीन दयाल ।
तिनकी बंदन करनको चलो कुँवर तत्काल ॥ ५८ ॥

सवैया इकतीसा

सर्व साथ परिवार लेयके तबै कुमार, मथुरानगर पास पहुँचो हरषायके। तहँ गुफा शुभ नाम चत्रत्रिय मान, जहां तिष्टे हैं मुनिंद्र ध्यानको लगायके॥ इंद्र चन्द्रनर बृंद सेवत पदारविंद, करे थुति तिनकी सो सीसको नवाय के। तहँ आयके कुमार देखो तात को निहार, देयपरदच्छणा सुमन हरषायके॥ ८९॥

दोहा

बहु प्रकार पूजन करी, भक्तिधार सुख पाय।
नमस्कार करके तबै, बैठे सब समुदाय॥ ९०॥
तबै दिवाकर देवने, भाषो सब वृतन्त।
सोमदत्त मुनिके निकट, धर्मराग कर संत॥ ९१॥

पद्धडी छंद

तब बोले वज्रकुमार येह। भो तात मोह आज्ञा सुदेह॥
जाकर तप ग्रहण करूं अवार। तब कहै दिवाकर खग उदार ९२
हे पुत्रपाय तेरी सहाय। मुझको तपकरतो जोग थाय।
तुमराज लक्ष मेरी अपार। अब ग्रहनकरो आनंद कार ९३॥
इत्यादिक मीठें वैन सार। खगने भाषे बहु युक्त धार।
तोपण कुमार उनको समोध। मुनि होतभयो चितपाय बोध९४
तप कीने नाना विधि महंत। बाईस परीषह को सहंत।
इन्द्रिय रूपते हैं करिंद्र। ता जीतन को वे मुनि मृगेंद्र॥९५॥
भविजनकोमन अम्बुध समान। तिसविरधकरनको शशिमहान।
यह विधि तिष्टे गुरुके सुपास। श्रीवज्रकुमार सुगुण प्रकास ९६

दोहा

इनअंतर सब भव्यजन, कथा सुनों सुखदाय।
मथुरा नगरी के विषै, पूत गंध नरराय॥ ९७॥

तिस नरपति के नार वर, उर बल्पा बड़भाग।
जिनवर चरण सरोज में, धारै बहु अनुराग ॥ ६८ ॥

चौपाई

सम्यक दृष्टिन में सरताज। जिन पूजनमें पंडितराज।
एक बरसमें सो त्रिय बार। नंदीश्वर को पर्व मंझार ॥ ६९ ॥
रथ जात्राको उत्सव करै। अंग प्रभावन चितमें धरै।
कर इकट्ठो सब संग समुदाय। नितप्रति ऐसी भांत कराय ।७०।
या अन्तर इसही पुरमांहि। सागर दत्त इक बणिक रहाय ॥
ताकेसागर दत्तानार। तिनके पाप उदय अनुसार ॥ ७१ ॥
दुख दरिद्रदाता अघमई। नाम दरिद्रा पुत्री भई ॥
याके उपजतही तिहबार। बन्धुवर्ग नासे तत्कार ॥ ७२ ॥
झूंठपराई कन्या खाय। वृद्धभई सो बहु दुख पाय ॥
जे नर पूजादान न करैं। सो यह बिधि दुखको अनुसरैं ।७३।
तहं नन्दन मुनिराय महान। दूजो अभिनन्दन लघुजान ॥
य अहार नगरमें आय। देखी कन्या झूंठ सुखाय ॥ ७४ ॥

दोहा

को लख छोटे मुनी, कहत भयो यहिभाय।
हाय हाय कन्यातु येह, जीवत है दुखपाय ॥ ७५ ॥
च सुनकर तबै, नन्दन ऋषि तप रास।
ज्ञान नेत्र कहते भये, मधुरे वचन प्रकास ॥ ७६ ॥

काव्य

अहो मुनी तुम सुनो दरिद्रा कन्या यो है।
पूत गंध नरधीश तनी पटरानी सो है ॥
तहं ही भिक्षा अर्थ धर्म श्री बोध जु आयो।
तातें सुनि वच सुने, चित्त में निश्चय लायो ॥७७॥

बचन जैन के तीन काल में मिथ्या नाहीं ।
इम बिचार कन्या को ले गयो ग्रह निज मांही ।
बहु बिध मिष्ट अहार देयकर पोषन कीनो ॥
यह दालिद्रा सेठ सुता तन जोबन लीनो ॥ ७८ ॥

दोहा

ऋतु बसंत पल चैत में, लीला सहित अपार ।
झूलै थी बन के विषै, जोवन में मद धार ॥ ७९ ॥
देव जोगते नृपत ने, देखी कन्या आय ।
काम अन्ध हो तो भयो, तिसको रूप लखाय ॥८०॥

चौपाई ।

तबही मंत्रीको बुलवाय । बोधमती ढिग दिये पठाय ॥
जाय तिनोंते भाषे बैन । भो बंधक सुनिये सुखदैन ॥ ८१ ॥
तुम्हरी कन्याये सुखदाह । नृपको दीजे बेग बिवाह ॥
अरु तू धन आदिक लेसार । सुख भोगे नाना परकार ॥ ८२ ॥
तबै बोध बोलो उमगाय । अहो सुनो तुम चित्तलगाय ॥
मेरे मतको अंगीकार । करै नृपति जो चित्त मंझार ॥ ८३ ॥
तो गुण उज्जल कन्या येह । नृपको देहूं निज संदेह ॥
तब राजा उसके बचमान । बोध धर्मको कर सरधान ॥ ८४ ॥
दारिद्रा परनी तत्काल । पटरानी कीनी दर हाल ॥
कामी काम अग्नि तपताय । क्या क्या पातग नाहिं कराय ।८५।
यह दारिद्रा लहि सुखरास । बुधदासी निज नाम प्रकास ॥
अरु पटरानी पदको पाय । बौध धर्मसे वे हर्षाय ॥ ८६ ॥
आचारज इम बचन बखान । यह तो बात सत्यकर जान ॥
श्री जिन चन्द्रतनो मतसार । पृथ्वी तलमें सुख दातार ॥ ८७ ॥

ताको लघु पुत्री नर जेह। ग्रहन करन समरथ नहिं तेह ॥
जैसे जन्म अंध नरकोय। ताको निधी प्राप्त किम होय ॥

दोहा

या अंतर अष्टान का, आई फागुन मास।
उरबल्या नृप नार तब, धरो चित्त हुल्लास ॥ ८६ ॥

पद्धड़ी

पूजा बिधान बहु बिधि सुठान, कंचनमई रथ देदीप्य मान।
जिन जात्राको उद्यम अपार, सो करत भई नृपनार सार।९०।
वो कैसो रथ जिम मारतंड, दैदीप्यमान आभा अखंड।
रेशमके पट नाना प्रकार, बहु शब्द करत घंटे निहार ॥९१॥
अरु छुद्र घंटका करत शोर, तहँ होय रहो आनंदजोर।
नाना प्रकार के रतन सार, रथ माहि जड़े शोभैं अपार ॥९२॥
भीतर त्रिय छत्र बिराजमान, गंगा तरंग सम चमरजान।
जिन बिंबनकर सोरथ सनाथ, भव गणन्यावें तिनको सुमाथ।९३।
बहु लटकन चहुंदिश फुलमाल, सौरबदसदिस फैलो विशाल।
इत्यादिक शोभायुत अपार, उरविल्या रथ कीनो तयार ॥९४॥

दोहा।

ऐसो लख ताही समय, बुध दासी रिसधार।
पूत गंध नृपसे तबै, ऐसे बचन उचार ॥ ९५ ॥
हेनरिंद्र या नगर में, बौध तनो रथ जेह।
सो पहले मन थिर करै, असी आज्ञा देह ॥ ९६ ॥

चौपाई।

तिसके बच सुनके हरषाय। ऐसेहीं हो इम कहो राय ॥
मोहअंध प्रानी जगमाह। काज अकाज लखे कुछ नाय ॥९७॥
ऐसे आक गायपै जोय। मूरख अंतर लखे न कोय ॥
तब उरविल्या नृपकी नार। जिन चरणांबुज सेवनहार ॥९८॥

इम परतिज्ञा तबतिन कीन । मनमें निश्चयकर पावीन ॥
पहले मेरो रथ सुपदाय । नगर माहि जो भ्रमण कराय ॥९९॥
तबतो मैं जो लेऊं अहार । नातर त्यागन कियो अपार ॥
ऐसे कह पहुंची हरषाय । छत्री नाम गुफा में जाय ॥ १००॥
सोमदत्त मुनिवर जग त्यार । तिनको नमन कियो हितधार ॥
तहँही बज्र कुमार मुनिंद । पूजे रानी धर आनन्द ॥ १ ॥
धर्मस्नेह धार, अधिकाय । बिनय सहित इम बचन सुनाय ॥
भो मुनिंद्र श्रीजिन सुखकार । तास धर्म सागर उनहार ॥२॥
तास बढ़ावन चंद्र समान । मिथ्यामत नाशनको भान ॥
याते तुमरी सरन महान । लीनी अब मैं निश्चय आन ॥ ३ ॥
भक्तिसहित इम स्तुति ठान । अपना सब बिरतंत बखान ॥
श्रीमुनि चरणनके ढिगसार । जबलों तिष्टतहै एहनार ॥ ४ ॥
इतने याके पुन्य पसाय । मुनि दोनों पूजन खग आय ॥
नाम दिवाकर देव महान । खगचर बहुत तास संगजान ॥५॥
तिनते वज्रकुमार मुनिंद । कहत भए ऐसे बुध वृंद ॥
भो सबखग सुनिये चित्त लाय । धर्म नेह धारक तुमराय ॥६॥
यह रानी उरवल्या जान । सम्यक् दृष्टि सिरोमणि मान ॥
तिसकी रथ यात्रा सुखकार । करवावो तुम नगर मंझार ॥ ७॥

दोहा ।

इम सुनके खग गण सबै, श्री मुनिको सिरनाय ।
पहुँचे मथुरा नगरमें, शीघ्र सबै हरषाय ॥ ८ ॥

काव्य ।

प्रथम जैनके धर्म बिषै तत्पर खग सारे ।
दूजे गुरु के बैन तिन्हों ने चित में धारे ॥
क्रोध धार चित्त मांहि बुद्धिदासी रत नासो ।
उत्सव कर संयुक्त जैन को रथ परकासो ॥९॥

धर्मलीन नृप नार नाम उरबिल्या जानो ।
रथ यात्रा तिन करी हर्ष जियमें तिन आनो ॥
बंध्य बंध्य इम शब्द करत भये जन मिल सारे ।
दसों दिशाके मांहि बजत बाजे अधिकारे ॥ १० ॥
चारन स्तुति करैं बृद्ध भासैं अधिकाई ।
जय जय कार महान भयो नगरी के मांहीं ॥
रथ ऊपर जन करत पुष्प बरषा अधिकारी ।
नृत्य बिनोद उछाह होत नाना परकारी ॥ ११ ॥
श्रीजिनके गुण गान करत कामन तिहबारी ।
सुनते जन मन हरष बहुत उरधारैं भारी ॥
नाना बिध को दान जबै बांटत पथमांही ।
सम्यक् दृष्टी भए जीव केते तिहठांही ॥ १२ ॥
श्रीजिन बिम्ब बिराजमान दैदीप्य मानवर ।
सर्व संघकर सहित मनोरथ पूरालिए उर ॥
साज सहित रथ नगर बिषै चालो अधिकारी ।
उरबिल्या नृप नार तबै चित्त साता धारी ॥१३॥

दोहा

बहरथ सब भवि जननको, भयो जो सुखदातार ।
ताके बरणान करनको, को या जगत मंझार ॥ १४ ॥

पद्धड़ी

इस अंतर नृपको पूतगंध । बुधदासी के युत बौद्धब्रंद ॥
ते रथ जात्रातिनकी निहार । जिनधर्म प्रभाव लखो अपार ॥१५॥
मिथ्या तब कीनों मनतुरंत । भए जैनधर्म रति सर्वसंत ॥
अब वज्रकुमार मुनिदयाल । करवाई परभावन रिसाल ॥१६॥
अरुऔर भव्यजे जग मंझार । ते करो प्रभावन अंगसार ॥
सो स्वर्ग मोक्षके दैनहार । हितदाताहै त्रय जग मंझार ॥१७॥

किह विधि प्रभावना अंग होय। श्रीजिन भाषो सो सुनो लोय।
नानाप्रकार तीरथ महान। तिन जात्राकीनी हरष ठान ॥१८॥
करवावै श्रीजिन बिम्बसार। अरु करै प्रतिष्ठा भावधार।
जिनमत को उद्योतन करंत। यह विधि प्रभावना अंग महंत १९
बर बुद्धि सहित जे धर्म लीन। सोई सम्यकयुत नर प्रवीन।
सोई सुर शिवको सुख लहाय। त्रय जगत पूज्य वोही कहाय २०
वो बज्रकुमार मुनिंदचंद। भवि जीवनको आनंद कंद।
सोई हमको दे बुद्धि यार। नित लीनकरो जिनमत मँझार २१॥

कवित्त

शोभितहै श्रीमूल संगमें गंबभारती तिनको जान। भट्टारक गुरु मल्ल सुभूषण तिनके गुणको करै बखान॥ बुद्धिवान बानी के वारिधि सम्यक दर्शन चारित्र ज्ञान। सोई निर्मल रतन अनूपम तिनकी आकार हैं दुतिवान ॥ २२ ॥

दोहा

ऐसे गुरुकी भक्तिमें, अतिशय कर चितलाय।
हमको मंगल श्रेष्ठ अब, दीजे निज सुखदाय ॥ २३ ॥

सोरठा

कथा तेरमीसार, पूरन यह कीनी सही।
संस्कृतके अनुसार, बखतावर अरु रतनने ॥ २४ ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषे भट्टारकश्रीमल्लभूषण तत्शिष्य ब्रह्मनेमीदत्तविरचितायां वज्रकुमारमुनि प्रभावना अंग करी साक्षी कथा सम्पूर्णम्

श्रीनागदत्त मुनिकीकथा प्रारम्भः १४

मङ्गलाचरण दोहा।

पंचपरम गुरु हैं सही, पंचमगति के स्वाम।
नागदत्त मुनिकी कथा, भाषूं कर परणाम॥ १५॥

चौपई

एही मागध देश सुढार। राजग्रही नगरी तहँ सार।
प्रजापाल नरपति तिह थान। परजापालन करै महान॥ २॥
न्यायशास्त्र को जानन हार। धरमात्मा जिन भक्त अपार।
ताके ग्रह नारी गुणवंत। प्रिय धर्मा बर रूप धरंत॥ ३॥
चितप्रसन्न कर धर अनुराग। पूजा दान करै बड़भाग।
जुगसुततिनके भए विख्यात। प्रियेधर्म प्रियेमित्र कहात॥४॥
जैन धर्मके जाननहार। गुण उज्जल यह धरै कुमार।
एकदिना यह दोनों बीर। मनमें राग विचारो धीर॥ ५॥
श्रीजिनवरकी दीचा धार। तप कीनो नाना परकार।
तन तज अच्चुत स्वर्ग सुजाय। बहुप्रकार तहँ रिद्धि लहाय ६
पहलोभव तहँ करके याद। जिनमत धारो कर अहलाद।
भगवतभक्ति मांहिं चित दीन। दोनों सुर तिष्ठे सुखलीन॥७॥
धर्मराग धर त्रदश महान। आपुस में परतिज्ञा ठान।
जो पहले निरजर तजकाय, मध्यलोक में उपजे जाय॥ ८॥
ताको स्वर्ग विषै जो देव। संबोधे करके बहुभेव।
दिच्चा दिलवावे तत्काल। थापे शिव मग जग अघटाल॥९॥
इस अंतर अब सुनो बखान। उज्जैनी नगरी में जान।
नागधर्म नरपति बड़भाग। धर्म विषै धारे अनुराग॥ १०॥

गीता छंद

ताके अनूपम नाग दत्ता नार ग्रह मध जानिये।
शुभ रूप लावन अधिक तनमें पुन्यवान प्रमानिये॥

तिनके सुरग ते आनकर प्रियमित्रको चरसुत भयो।
तिस नागदत्त सुनामधारो बुध सदन विधना ठयो ॥ ११ ॥

दोहा

अहकर क्रीड़ा करन में, महा चतुर सुकुमार।
गारुड़ विद्यासीखियो सो, नानापरकार ॥ १२ ॥

पद्धडी

इक दिन प्रिये धर्मतनो जो जीव। तिष्ठे अच्चुतमें अवस दीव।
ताने भ्राताको जानभेव। संबोधनको आयो स्वमेव ॥ १३ ॥
गारुड़को रूप करो तुरंत। युग अह लीने तिनजहरवंत।
ताको करंडमें धार लीन। उज्जैनी में परवेश कीन ॥ ७४ ॥
तव नागदत्त के पास जाय। सो कहतभयो निज बचसुनाय।
तू वड़ो चतुर क्रीड़ा मंझार। मैं यह सुन आयो हूं अबार १५॥
तव राजपुत्र वहु गर्भधार। निज बचन भने ऐसे पुकार।
जो मणधर तुझ ढिग जहरवंत। सो मो आगे छोड़ो तुरंत १६
तासों क्रीड़ा करहूं अवार। तब गारुड़ बच ऐसे उचार।
मैं वादकरूं नहिं आप सात। तुमराजपुत्रहो जग विख्यात १७

दोहा

पिता तुम्हारो जो सुनै, करै रोस अधिकान।
पकड़ मंगावे वेगही, हरै जो मेरे प्रान ॥ १८ ॥
ऐसे सुनके नागदत्त, ताको ले निज संग।
पिता पास दिलवाइयो, अभय दान भय भंग ॥१९॥

चौपाई

तबही पकनर्प तिह ठौर। तासों क्रीड़ा कीना जोर ॥
ताको सब मद दियो उड़ाय। अहिको पकड़ कंवर हरषाय।२०।
फिरयह कंवर कहै सुनलेय। दूजो नाग छोड़ अबदेय ॥
तब वह कहन भयोहो देव। इस अहिको तुम लहो न भेव।२१।

वड़ो दुष्टहै यह दुखदान। देव जोगते हनै जो प्रान ॥
तो इसकी भेषज नहिकोय। यह निश्चयकर जानोसोय ॥ २२ ॥
नागदत्त तबरोस कराय। कहतभयो तू सुन चितलाय ॥
तेरोसर्प विचारो दीन। मेरो कहाकरै बिष लीन ॥ २३ ॥
मंत्र तंत्रमें जाननहार। गारुड़ विद्याधरूं अपार ॥
ऐसे सुनकर गारुड़तबै। राजादिक साखी कर सबै ॥ २४ ॥
छोड़ो नाग तबै बिकराल। कंवर डसो ताने तत्काल ॥
ताही छिन बिषके परभाव। पड़ो सोभूंपर मूर्छा खाय ॥ २५ ॥
जैसे मोह अंधहो जीव। भव अम्बुधमें पड़े सदीव ॥
तब नरेश मनमें दुखपाय। मंत्रबादियों को बुलबाय ॥ २६ ॥

दोहा

वह यह बिध कहते भए, सुन अवनी के राय।
काल सर्प कर यह डसो, याको नाहि उपाय ॥

चौपाई

तब नरिंद्रमन होयउदास। उसगारुड़ प्रति बचन प्रकास ॥
जो तू याको करै सचेत। आधो राज लेय सुखहेत ॥ २८ ॥
ऐसे कह निजपुत्र उठाय। गारुड़को सौंपो नरराय ॥
तब गारुड़ इम कहो पुकार। काल सर्पकर डसो कुमार ॥२६॥
जो कदाचजीवे तुम बाल। जिनदिच्छा लेवे तत्काल ॥
तोमें करूं इलाज अवार। येही भेषज इसकी सार ॥ ३० ॥
तब राजा मनधर हुल्लास। गारुड़ प्रति इस बचन प्रकास ॥
ऐसेही हो आज्ञादीन। तब निजसर्प ज़हर हर लीन ॥ ३१ ॥
नागदत्तको कियो सचेत। उठो तबै यह हर्ष समेत ॥
जैसे जगमें जीव अयान। मिथ्या बिषकीनो जिनपान ॥३२॥
तिनको श्रीगुरु करै सचेत। दे उपदेश तिन्हे सुखहेत ॥
तैसे इस सुरने उपकार। कीनो नागदत्तकी लार ॥ ३३ ॥

छप्पय छंद

तिस पीछे इह नागदत्त चित्त में हरषानो ।
राजादिक ते सब व्रतांत निश्चयकर जानो ॥
पर फुल्लित धीमान प्रतिज्ञा पालन कीनी ॥
दमधर मुनि ने चरन कमलकी सरन जो लीनी ॥
भक्तिहिये में धारकर, भगवत दीक्षा आदरी ।
जासों सुरिंद्र पूजैं सदा, सोई विधि याने धरी ॥ ३४ ॥

दोहा

तब वह देव सु प्रकट है, प्रिय धर्मचर सोय ।
सब व्रतांत कह नमन कर, गयो सोहर्षित होय ॥ ३५ ॥

पद्धडी

तिसपीछे तब मुनि नागदत्त। वैरागयुक्त चितवैं सुतत्व ॥
निर्मल आचरणगहो अत्यंत। जिनकलपी साधु भयो महंत।३६।
श्रीजिनवर चंद्र तनेसुक्षेत्र । ताकी जात्रा करते पवित्र ॥
बहु चितमें भगवत भक्तिठान। बिहरत अवनीमें हर्षमान ।३७।
एहमुनि सत्तम करते विहार। इकदिन आए अटवीमंझार॥
सोमहा विकट संयुक्तथान । तहं सूरदत्त इकचोर जान ॥३८॥
वहु तस्करजाके संगबीच । खोटी बुधधारे कर्म नीच ॥
मारगको रोककरै जुवात। इहमुनि हमको कहै विख्यात।३९।
ऐसे डरकर वह चित्तमांहि। मुनि पकड़ किए अतिभय जोखांहि॥
तब सूरदत्त सबको हटाय । उन चोरनते इमबच कहाय ॥४०॥

छंद चाल

यह उत्तम चारित्र धारी, प्रभु वीतराग अनगारी । है बुद्धिवान अधिकाई, देखतभी नाहि लखाई ॥४१॥ काहूसे कुछ नहिं भाषै । निज धीर वीर मन राखै॥ इनको तुम छोड़ो भाई। भय करो नहीं दुखदाई । ४२ ॥ तस्कर सुन के यह बानी । तबहीं

मुनि ज्ञानी ॥ तहँते रिपीगमन कराही । आवैंथे पथके मांही ४३
इस अंतर इनकी माता । है नागदत्त विख्याता । नागश्रीपुत्री लारी । संगहै विभूति अधिकारी ॥४४॥ सो वत्सदेसके माहीं । कोसांबी नगरी कहाही ॥ तामध नरनायक जानो । जिन पाल नाम बुधिवानो ॥४५॥ ताको सुत जिनदत्त जो है । जिन धर्म विषय रतिसोहै ॥ ताके संग भई सगाई । नाग श्रीकी सुखदाई४६

दो०—ताको एहपर भावते, ले निज पुत्री लार ।
सज्जन जनकर सहित जो, जावैं थी तिहबार ॥ ४१ ॥

चौपाई ।

पथमें मुनिको मात निहार । नमन कियो चित हर्ष सुधार ॥
कहत भई हम आगे जाह । मारग निर्मलहै अकनाह ॥४८॥
तव मुनि मोह जई वड़भाग । सत्रु मित्रपे रोष नराग ॥
महा चरित्रको धारन हार । मौनलीन तब कियो बिहार ॥४९॥
नागदत्ता तव आगे गई । सब चोरोंने पकड़ सो लई ॥
वहुधन लूट लियो तत्कार । अर कन्याकोभी लेलार ॥ ५० ॥
सूरदत्तको सौंपत भए । तब तिनने ऐसे बच लये ॥
देखो तुम सबही परधान । वे मुनि उदासीन अधिकान ॥५१॥
निस्प्रेही अतिही गम्भीर । जैन तत्व जाने बरबीर ॥
इन सबने उनसे पूछाय । तौ भी भेद न दियो बताय ॥ ५२ ॥
ऐसे बच सुन मुनिकी माय । सूरदत्त प्रतिएम कहाय ॥
एक छुरी अति तीक्षण देह । ताकर कूख विदारूं एह ॥५३॥
जामेंमें राखो नव मास । यह कुपुत्र मुनि दुखकी रास ।
मोह रहित चित मांहि कठोर । यूं नकहा आगेहैं चोर ॥५४॥
ऐसे बच तव याने भास । सूरदत्त सुन भयो उदास ॥
कहत भयो ऐसे निरव्यात । तू मुनि मात सो मेरी मात ॥५५॥
इमबच कहसब धन तिसदीन । कन्याभी दे नमन करीन ॥

करी विदा सो ताही बार । अपने मन वैराग जु धार ॥५६॥
सब चोरनको जो यह राय । नागदत्त मुनिके ढिग जाय ॥
चरण कमलको नयो तुरंत । स्तुति मुखते बहुत चयंत ॥ ५७॥
तिन ढिग दिच्छा ले तरकार । तपकीनों नाना परकार ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र । तिनको पालन करै मुनिश ॥५८॥

छप्पय छंद

घातकर्मको नाश कियो तबही मुनि नायक ।
लोकालोक प्रकाश ज्ञानपायो सुखदायक ॥
देव इंद्र नागेंद्र चंद्रकर पूजत सोई ।
दे उपदेश महान बहुत न्यारे भवलोई ॥
फेर अघाती नाशकर, शिव नगरी छिनमें लही ।
श्रीसूरदत्त मुनिराजजी, निज अबास दीजे सही ५९ ॥

सवैया इकतीसा—सूरदत्त नागदत्त दोनों मुनिराज सोह, सांत अर्थ होय कल्याण शुभ ठानिये । गुणके समुद्रसार लोकालोक को निहार सर्वदेव इंद्रकर बंदनीक जानिये ॥ तीन जग जीवन के नेत्र जो कमोद भए तिन विकसावनको मृग अंक मानिये । कहै करजोर बुधजन हूजिये दयाल मोपै सुख विस्तारकर सर्बकर्म भानिये ॥ ६० ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषे नागदत्त मुनिकीकथा समाप्तम्

कुसंगतदोषपै शिवभूतकी कथा १५

मंगलाचरण सोरठा

सर्व जीव हितदाय, श्री सर्वज्ञ महंत हैं ।
वंदूं सीसनिवाय, ताप्रशाद बरनूं कथा ॥ १ ॥
खोटो संग दुखकार, तास दोष बखान करूं ।
कीनो निज दुख धार, सुनो भव्य चितलाय के ॥२॥

चौपाई

वत्स देश कोशांबी पुरी । कोट खातिकर सहित सोखरी ।
तामें नृप सोहै बनपाल । दुष्ट जनन को दीखत काल ॥३॥
ताके प्रोहित है शिव भूत । चारबेद विद्या संयूत ।
सब विप्रनमें है परधान । राजा बहुत करै सनमान ॥ ४ ॥
तिसही नगर विषै धनवान । पूरण चंद्रकलाल बखान ।
नारी मणीभद्र का नाम । पुत्र सुमित्र तासुके धाम ॥५॥
एक दिना यह पूरण चंद । पुत्र बिबाह रचो सुखबंद ।
बहुजनको भोजन करवाय । फिर शिवभूत विप्रबुलवाय ॥६॥
भोजन है तैयार इमकही । तबइनकहो शूद्र तू सही ।
तब ऐसे बोलो कलवाल । हो गुणवान सुनो गुणपाल ॥७॥
बहु विप्रनने बनमें जाय । सामग्री राखी अधिकाय ।
ताको भोजन करो तुरंत । यामें दोष कछू न लहंत ॥८॥
याको हट शिवभूत लखाय । आरे करलीनी सतभाय ।
विनय युक्त जो देवै दान । मानलेय सोई परधान ॥ ८ ॥
दोहा—तब पूरन चंद बन विषै, गयो महा हरषाय ।
 बिप्र हाथ खट रस सहित, भोज ताहि जिमाय ॥ १० ॥
 उस कलालको कुटम सब, एक तरफ तिष्ठंत ।
 दुतिय तरफ शिव भूत जो, पैमिश्री पीवंत ॥ ११ ॥

पद्धडी

कितने इकजन नृप पास जाय । शिवभूत चरित्र कहो सुनाय ॥
हमदेखो अपनी दृष्टिजोय । मदिरापीवत शिवभूत सोय ॥१२॥
ऐसी सुनकर तत्काल राय । शिवभूत विप्र लीनों बुलाय ॥
पूछनकीनी तासों नरेश । सो नटतभयो जानूं नलेश ॥ १३ ॥
नृप लेन परीक्षाके निमित । करवाई बमन तबैतुरंत ॥
तामाहींते दुर्गंध आय । नरधीश तबै निश्चय कराय ॥ १४ ॥

सो क्रोधधार अतिही प्रचंड। निष्ठुरवच भाषदियो जो दंड॥
फिर कष्टदेय मनकर बिचार। निजदेश थकी दीनों निकार ॥१५॥
खोटी संगतकर दुष्ट एह। ततछिन पायो शिवभूत तेह॥
ताते खोटा संग जग मंझार। है निंदनीक देखो बिचार ॥१६॥
जे बुद्धिवान पंडितमहंत। ऐसो लख तज दीजे तुरंत॥
सज्जन जनकी संगत महान। ताको कीजे आदर सुठान ॥१७॥
दोहा—जे श्री जिनवर चंद के, चरन कमल रसलीन।
खोटी संगत तज करो, साधु संग परवीन ॥ १८॥
सोई संगत जग बिषै, माननीय है सार॥
ऊंचो पद तातें लहै, धन धान्यादि अपार ॥ १९॥
सोई संगत साधु की, दीजे मंगल मोह।
तातें सुख की प्राप्ति है, नाशे दुख अरुद्रोह ॥ २०॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय कुसगत दोष शिवभूत कथा समाप्तः

अथ बुद्धिबर्धनीकथा प्रारम्भनं० १९

मंगलाचरण। अडिल्ल

श्रीअरिहंतजिनेश्वरकोसिरनायके। बुद्धवर्धनी कथा कहूं हरषायके
जैसीबालकनै देखीतैसी कही। ताको बरननसुनो भव्याचित देसही
चालछंद—कोसांवी नगरी जानो, जयपाल बिचक्षण रानो।
तहं धर्मलीन अधिकाई, सागर दत्त सेठ रहाई ॥ २॥
सागरदत्ता तिसनारी, युग प्रीतिधरे अति भारी॥
तिनके सुत रूप निधानो, वारधदत्त नाम बखानो ॥३॥
तिसही नगरी के मांही, गोपायन बनक रहांही॥
तिसपाप उदय अधिकाई, दारिद्र धरै अधिकाई ॥४॥
खोटी बुध धरै अयानो, सो सम बिपनरति जानो।
तिनके है सोमा भामा, सोमक सुत ताके धामा ॥५॥

दोहा

समुद्र दत्तजो सेठ सुत, अर सोमक मिल दोय ।
रेत विषय क्रीड़ा करें, बहु बिध हर्षित होय ॥ ६ ॥

चौपाई

एकदिन धनके लोभपसाय । पापी गोपायन अधिकाय ॥
समुद्र दत्त बालक जोथाय । भूषणाकर शोभित बहुभाय । ७ ।
ताके भुषण सर्व उतार । बालकको मारो तत्कार ॥
अपने सुतके देखत लाय । घरमें गढ़ो खोद गड़वाय ॥ ८ ॥
तबही सागर दत्त तिस तात । अरु सागर दत्ताजो मात ॥
सब कुटंब मिलके तिहबार । बहु बिलाप कीनो दुखकार । ६ ।
सारे ढूंढ फिर अधिकाय । कहीं न पाई ताकी साय ॥
ऐसे पुन्यहीन नरजोय । ताको सुख प्रापति किम होय ॥१०॥
तिसपीछे बालक की माय । सोमक शिसु से पूछो आय ।
अरे समुद्रदत्ता किह थाय । जहँ देखो तहँ देय बतान ॥ ११ ॥

दोहा

तब तिन बालक भावते, सांच बैन कहदीन ।
गड़ो हमारे घर बिशे, गढ़ो माहिं दुखलीन ॥
बालक क्या जाने सही, भले बुरेकी बात ।
जैसे की तैसेकहै यह सुभाव शिसु जान ॥ १३ ॥

सोरठा

पापी पाप छिपाय, करै सुचित हरषायकै ।
तौभी प्रगट है जाय, कोड़ दुःख दाता सही ॥ १४ ॥

पद्धडी

तब सागर दत्ता सेठनार । निज बालकको मृतक निहार ।
अपने पतिके तब पास जाय । दुखदायनि बात कही सुनाय १५

जब सेठ जाय जमदंड पास । सब बातकही तासों प्रकास ।
उसने नरपति सेती बखान । सुनके नरिंद्र कोपो महान ॥ १६ ॥
गोपायन बुलवायो नरेश । ताको निग्रह कीनो विशेश ॥
यह जान भव्य नितपापत्याग । दुखिदाता लखकरतजो राग ॥१७॥
सुखदाय श्री निज धर्मसार। ताको सेवो अनुराग धार ॥
इम आचारज भाषे महान । तुम निश्चयकरजानो सुजान ॥१८॥

दोहा

इतने जन जाने नहीं, हित अनहित कथा होय ।
ताको वरणन करतहूं, सुनो सबे भव लोय ॥

चौपाई

बालक और विकल नरजान। कामातुर फुनि जोबनवान ॥
तयारोगकर पीड़ित जोय। बहु कुटम्ब कर दूखित होय ॥ २० ॥
इत्यादिक जब जानो सही। ऐसे श्री जिनवर बरनई ॥
अरजेथिर चित धारणाहार। प्रभुको धर्म गहो सुखकार ॥ २१ ॥
तेहित अनहितको जानंत, यह बिधि भाषो श्री अरिहंत।
कथा सोलमी यह बरनई, जिम बालक देखी तिमकही ॥२२

इति श्री आराधना सार कथा कोष विषे जिमपद्रिपतिमवदति
कथा सम्पूर्णम्

श्री धनदत्त नरेश्वरकी कथा नं० १७

मगलाचरण । सवैया तेईसा

श्री मत देव जिनेन्द्र नमूं तिन पूजन इंद्रन के गुण सारे।
लोक अलोक प्रकाश करो जिन सिद्ध भए सब कर्म प्रजारे॥
तास प्रसाद कथावरनूं धनदत्त नरेश्वर की हितधारे ।
भव्यन के समुदाय सुनो सुख होय सबै अघजाय निवारे॥१॥

चौपाई।

अंध्रदेश जगमें विख्यात। ध्यान कनकपुरनगर सुहात॥
ताकोधनदत्त नृपवड़ भाग। सम्यक् दृष्टी जिनमतराग॥ २॥
बोधमती मंत्री मत हीन। संघश्री मिथ्या मति लीन॥
धर्म कर्ममें तत्पर राय। ताजुतराज करै सुख दाय॥ ३॥
एकेदिन धनदत्त नरिंद्र। महल सिखर तिष्टे गुणवृन्द॥
संघश्री मंत्री ढिगजान। क्रीडामात्र मंत्र कछु ठान॥ ४॥
तब मध्यान समै नरराय। अंबरमें जुगमुनि सुखदाय॥
देखे चमतकार युतसोय। मनमें अति आनंदित होय॥ ५॥
धरअनुराग उठे तत्काल। दोकर जोड़ नवायो भाल॥
आदरकर निजमहल मझार। लायो जुगमुनिको तिहवार॥६॥
साधोकी संगत सुखदाय। सत्पुरुषनको सदा सुहाय॥
नृपतब पूछो सीसनवाय। धर्म स्वरूप कहो मुनिराय॥ ७॥

दोहा।

तब श्रीगुरु जिन धर्मको, कीनों बिबिध बखान।
सुन संघश्री बोध मत, लायो चित श्रद्धान॥८॥
कर श्रावक इस बोधको, वे मुनि दीन दयाल।
गुण मंडित अम्बर बिषै, जात भए तत्काल॥९॥

छप्पै।

पहले मिथ्या मोह ग्रसित मंत्री जो थाई।
बुधश्री तिसका नाम कुगुरुथो दुरगति दाई॥
जावै थो तिस पास एक दिनमें त्रियवारी।
करतो वंदन सदा हर्ष चित में बहु धारी॥
सो अब ता ढिग वंदना, करनेको नाही गयो।
बुद्धश्री वंधक तबै, ताको बुलवावत भयो॥ १०॥

चौपाई ॥

तातेनमन करो नहिं आन। तब वंधकइम वचन वखान ॥
रेतूने मोकूं इहघरी । नमस्कार क्यों नाहीं करी ॥ ११ ॥
तब मंत्रीने सबै चरित्र। मुनिवर को भाखियो पवित्र ॥
पल भक्षी बंधक बुध हीन। ऐसे वचन कहे सुमलीन ॥१२॥
हाय हाय तू ठगयो बीर। को चारन कहँहै कहो धीर ॥
निरआश्रय एहहै आकास। तामधगम्मन होय किमभास ॥१३॥
कपटखान तेरोनरराय। इंद्र जाल तोहि भांति दिखाय ॥
सो तू बोध भक्त परवीन। तू मति हो जिन मतमें लीन ॥१४॥
ऐसे मिथ्याकर दुःखंत। मने कियो याको बहु भंत ॥
अरु तू मत जायो चित धार। प्रातकाल नृप सभामंझार ॥१५॥
जो कदाचिभी जानो होय। सभा विषै इम कहिये सोय ॥
मैंने मुनि देखे नहिं कोय। ऐसे थे किसने अवलोय ॥ १६ ॥
ऐसे बोधगुरुके बैन। सुन संघश्री तज मन जैन ॥
बंधकमतकी श्रद्धा करी। श्रावक ब्रत छोड़े तिह घड़ी ॥१७॥

दोहा।

पाप करावै और से, आप करै अधिकार।
ते नर अगन समान हैं, आप जरैं परजार ॥ १८॥
सम्यक दृष्टि शिरोमणी, धनदत्त नृप बुधिवान।
प्रातकाल निज सभामें, धर्म राग चित आन ॥ १९॥
सामंतादिक भव्य जन, तिनके आगे राय।
चारन मुनि देखे हुते, तिनकी कथा कहाय ॥ २०॥

छप्पय।

साक्षि हेत मंत्री बुलवायो तब नरनायक।
तासों कहे सुनाय आप निज मुखतें बायक।

काल हम तुम जुगचारन मुनिके दरशन पाए।
सो कैसे थे कहो अबे जिह भांत लखाए॥
तब निंदक बंदकमती, कहत भयो सुन रायजी।
चारन मुनि किम होत हैं, मैंने नांहि लखायजी।२१।

पद्धड़ी

ताहीछिन मंत्री अतिमलीन, एहवच भाषित बहु दुःख लीन।
महापाप उदय आयो प्रचंड। युगनैत्र तने भये खंड खंड॥२२॥
जिन धर्म जगतमें मारतंड। सब जनको सुख दाता अखंड॥
एक पापी धूधू दुखपात। तोको सुभाव एही विख्यात॥ २३॥
ऐसो कारन लखके तुरंत। नृप आदिकजन सब धर्मवंत॥
जिनमतकी सरधाकर अपार। श्रावकव्रत धारै चित मझार॥२४॥

काव्य।

देव इंद्र नागेंद्र चंद्रकर पूजा जिन मत।
ताकी सरधा करो तासते ह्वै सुर शिवगत॥
कुबुध भ्रांत को त्याग चाह जो सुख निधकेरी।
निरमल धी निज करो मिटे तातें भवफेरी॥ २५॥

इतिश्रीआरधनासारकथाकोषविषै धनदत्तनृपतिकीकथासम्पूर्णम्।

श्रीब्रह्मदत्त चक्रेश्वरकी कथा नं० १८

(मंगलाचरण कवित)

तीन जगतकर पूजत जिनवर तिनकी भक्ति करूं अधिकाय।
जिनके चरणकमलमें नमहूं शुद्धकिये निज मन वच काय॥
सत्पुरुषन सम्बोधनकारन, अब चरित्र भाषूं उमगाय।
ब्रह्मदत्त बारमचक्रेश्वर तिनकी कथा कहूं चितलाय॥ १॥

चौपाई

कम्पल्या नगरी एहजान । ब्रह्मरथ राजा धीमान ॥
ताके प्राणबल्लभा थाय । नाम रामला है सुखदाय ॥ २ ॥
रूप गुणनकर मंडित भली । तालख नृप मन धारत रली ॥
तिन दोनोंके पुन्य पसाय । ब्रह्मदत्त सुत उपजो आय ॥ ३ ॥
द्वादश मोसोंहै चक्रीश । छहो खंड पालक अवनीश ॥
सो तिष्ठत है अपने धाम । सुखसे बीतत हैं वसुजाम ॥ ४ ॥
एके दिना रसोईदार । बिजै सैन तिसनाम निहार ॥
चक्रवर्तिके जीमन वार । खीर परोसी उश्न अपार ॥ ५ ॥

सवैया इकतीसा

सोई खीर खावने को समरथ भयो नाहि, चक्रवर्ति कोप अंध भयो अधिकाई है । मनमें कुबुधिधार करमांहि लेयथार, उश्न खीर युत उस सीसपे बगाई है ॥ भयो दुखलीन सोय तन तिसदाझ गयो, ततछिन माह मौत पाई दुखदाई है ॥ खारड़ी समुद्र बीच दीरघ रतन दीप, तहां परयाय तिन व्यंतर की पाई है ॥ ६ ॥

सोरठा

कोड़ो दुख दातार, क्रोध जगत में जनन को ।
तातें है धिक्कार, भव्य जीव त्यागो सदा ॥ ७ ॥

चौपाई

तब वह जीव रसोईदार । व्यंतर अधिपाई अधिकार ॥
अवध विभंगा धर कर सोय । पूर्व चरित्र सबै अवलोय ॥ ८ ॥
महाक्रोधकर कम्पित होय । पूरबबैर सबै तिन जोय ।
दंडी रूपधरो रिस ठान । मीठे फल लीने रसवान ॥ ९ ॥
शीघ्र जाय चक्रीके पास । फलदीने धर चित हुल्लास ।
सरना लंपट अवनीपाल । खायो फल तन भयो खुशाल १० ॥

दोहा

चक्रवर्ति तत्र पूछियो, हे परिब्राज महान ।
बहुत मनोहर फल विमल, एह उपजत किस थान ।११।

छप्पय

तब दंडी इमकाहो सुनो अब हे नर नायक ।
सागरके मध जान हमारो मठ सुख दायक ॥
ताके निकट महान बाग इकरुचिरथ जानो ।
तामें फल बहु लसैं इसी बिध के तुम मानो ॥
ताके बच सुन चक्र धर, चलने की इच्छाकरी ।
जे रसना लंपट पुरुष हैं, जानत नहिं भली बुरी ।१२।

चौपाई

दंडी संग चले चक्रेश । अंतःपुर जन लेय बिशेश ॥
पहुंचो बारधिके मधजाय । तब वह व्यंतर तहं प्रगटाय ॥१३॥
चक्रवर्तिके मारन हेत । दुख दीनो उपसर्ग समेत ॥
तब चक्री सुमरे नवकार । व्यंतर जोर चले नलगार ॥ १४ ॥
दुष्ट भाव धारक वह देव । प्रगट बचन भाषेतिन येव ॥
रे रे दुष्ट प्रथम भवबीच । कष्ट देय मोह मारो नीच ॥ १५ ॥
ताते अबमें तेरे प्रान । कष्ट देय हनहूं इस थान ॥
एक तरह ते छोड़ूं सही । तू निश्चयकर मन में यही ॥ १६ ॥
अपने मुखते एम बखान । जिनवर को मत झूंटो जान ॥
अरजो मत है जगत मझार । तिनको परशंसा कर सार ।१७।
लिख नवकार मंत्र इस बार । अपने पगते मेट सुडार ॥
तो तोको छोड़ूं तत्काल । नातर तू अपनो लखकाल ॥१८॥

दोहा

ताही बिध करतो भयो, ब्रह्मदत्त चक्रेश ।
मिथ्या भाव प्रचंडते, रही बुद्धि नहि लेश ॥ १९॥

पद्धड़ी ।

व्यंतर तब बेर हिये धरंत । सागर मध डोब दियो तुरन्त ॥
सो मरकर सप्तम नरक जाय । इह मिथ्या जगमें कष्टदाय ।२०।
जिनके हिरदे नहिं धर्म प्रीत । तिनकेदोऊ लोक न कुशलमीत ॥
मिथ्यात समान न और जाल । बहुनिंद नीक अरु तुच्छमान।२१।
जिसके प्रभावतें चक्रधार । पहुंचे सप्तम पृथिवी मंझार ॥
तातेंहो पंडित भव्य संत । मिथ्यात बमन कीजे तुरंत ॥ २२ ॥
सम्यक्त गहो तुम बार बार । ताकर पावो सुर शिव अगार ॥
जिनबच धारो हिरदेमंझार । सोई बचदे मंगल अपार ॥ २३ ॥
कैसेहैं सो बच अतिमहान । भव अंबुधितारन पोत जान ॥
अरु बहु प्रकार सुख देत येह । यामें नाहीं जानो संदेह ॥२४॥
जिन भगवतके यह बच उदार । सो कैसेहैं हिरदे निहार ॥
सब दोष रहितसो हैं दयाल । संग बरजत नाशैं कर्मजाल ।२५।
अरु देवइंद्र नागेंद्र चंद्र । रविखग बहु भक्तिधरैं नरेंद्र ॥
पूजें तिनको सिरनाय नाय । तिहुं काल विषै आनंद पाय ।२६।

दोहा

ब्रह्मदत्त चक्रेशकी, कथा सो पूरन थाय ।
भव्य जीव बांचे सुनैं, तिनको मंगलदाय ॥ २७ ॥

इति श्रीआराधनासार कथाकोष विषै ब्रह्मदत्त बारमें चक्रेशकीकथा सम्पूर्णम्

अथ श्रेणिक नृपतिकी कथा नं० १६

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा ।

जग पूज केवल विशाल नैन धारैं देव, तिष्टैं समोशर्ण बीच छवि अधिकाई है । ज्ञान दर्शन सुख वीरज अनंतजाके बानी खिरैं, मेघसम जान ताहि भव्य सुखदाई है ॥

तिन्है सीस नाय नृप श्रेणिककी कथासार। तासको बखान करूं मेरे मन आई है ॥ सुन जेते जग जीव तिनके कल्याण होय, सम्यक प्रकाश होत दुरनय नशाई है ॥ १ ॥

चौपाई।

एही मागध देश सुहात। राज ग्रही नगरी बिख्यात ॥
तहां राज विद्या करलीन। नृप श्रेणिक शोभै परवीन ॥ २ ॥
ताके महला लक्षणवती। नाम चेलना शोभै सती ॥
सम्यक दृष्टि नमें परधान। भगवत चर्ण जजैं गुणखान ॥३॥
एकै दिन नृप कहो सुनाय। सुनदेवी तू चित्त लगाय।
बिश्नु धर्म जगमें है सार। ताको तू कर अंगीकार ॥ ४ ॥
तब वह जैन तत्व मे लीन। निश्चल तत्व धरै परवीन ॥
बोली बायक मिष्टर शात। बिनय सहित सुनये भूपाल ॥५॥
बोध भाक्ति जेते हैं सार। तिनको भोजन दो तत्कार ॥
ऐसे सुनकर अवनीपाल। हिरदे मांहि भयो खुशहाल ॥ ६ ॥

अडिल्ल

इस अंतर इस सती चेलनाने तबै।
बिश्नु भक्त बुलवाए निज ग्रह में सबै ॥
भोजन देने अर्थ उनै थापन करो ॥
कपट सहित सो मूरख ध्यान तहां धरो ॥ ७ ॥
तिन के प्रछन करी चेलनाने सही।
अहो तपस्वी करत कहा कहिये यही ॥
तब बोले हम करत सो निज कल्याण हैं।
मैल मई तन त्याग जाय शिव थान हैं ॥ ८ ॥

दोहा

तब चेलन तिस थान में, दीनी अगनि लगाय ॥
भागे वायू सम सबै, महा कष्ट को पाय ॥ ९ ॥

तब अशोक बहु रोस कर, कहत भए सुन लेय।
जो तू भाकि धेर नहीं, मारत क्यों दुख देय ॥१०॥

पद्धड़ी

जब रानीबोली सुनहु देव। इन ध्यान धरो है बिश्मसेव ॥
खोटोशरीर तज मोच्च थान। हम जावतहैं इनइम बखान ।११।
तब मैने चित्त बिचार लीन। इह मुख सेवा तिष्ठो प्रवीन ॥
या आकर क्या करहै अवार। इम जान करो उपगारसार ।१२।
मम बच कीजो परतीत होय। इक कथा कहूं दृष्टांत जोय ॥
सो आदरकर सुनिये नरेश। जिमतुम मत में भाषी विषेश ।१४।
इक वत्स देश बिख्यात जान। नगरी कोसांबी मध्यमान ॥
तहँ प्रजापाल सोहै नरिंद्र। लीलाकर तिष्टत जिम फणिंद्र ।१४।
सागरदत्त सेठ तहां राय। बसुमती नार तिस गेह थाय ॥
तहँ दूजो सेठ समुद्रदत्त। नारी समुद्रदत्ता पवित्त ॥ १५॥

दोहा

तिन दोनों के परस्पर, हुती प्रीति अधिकार।
बचन बंध आपस विषै, इह विधि कियो करार ॥१६॥
हमरे तुमरे ग्रह बिषै, पुत्र सुता है मीत।
तो बिबाह करनोसही, सदाकाल रहे प्रीत ॥१७॥

चौपाई

तापीछे सागर दत्त जेह। पुत्र सुमित्र भयो तिह गेह।
दिनमें सर्प रहै बिकराल। रैन समय है कुंवर रिसाल ॥ १८ ॥
अरु समुद्रदतके गृह आय। पुत्री भई रूप अधिकाय।
नागदत्ता तिस नाम बखान। लावनता जुत जोबनवान ॥१९॥
कर्म कर वसुमित्रके साथ। भयो बिवाह जगत बिख्यात।
वचन बंधहै सेठ उदार। दई सर्पको कन्या सार ॥ २० ॥

सत्पुरुषनकी है यह बान । कोड़ो कष्ट होय जो आन ।
तौभी निज वचनाहि तजंत । मुख सो कहैं सोकरैं तुरंत॥२१॥
अब यह वसुमित्र अहिजान । रात्रिसमय ह्वै कुँवर महान ।
लीला करके सर्प जुकाय । धरत पिटारेमें हरषाय ॥ २२ ॥
नागदत्ता नारीके संग । भोगत भोग अनूप अभंग ।
नागदत्ता को माता आन । देखी पुत्री जोबनवान ॥२३॥
कहत भई तब सिसि हलाय । कर्म तनी गति कही न जाय ।
कहाममपुत्री जोबनवन्त । कहा सर्प बर लखै डरंत ॥२४॥
माताके इम बच सुनकान । कहत भई तू दुखमत ठान ।
निज भरताको सब बिरतंत । मातासे भाषियो तुरंत ॥ २५ ॥
तब समुद्रदत्ताहरषाय । रही रैन पुत्री ग्रहजाय ।
बसु मित्र अहि तन दुखरास । तजकर गयो नारके पास ॥२६॥
निंदनीक अहितन भेदाय । धरो पिटारेमाहिं लखाय ।
ताको छिपकर दियो जराय । तब समुद्रदत्ता सुखपाय ॥२७॥

दोहा

वसूमित्र तब नर रहो, गई सरप परयाय ।
भोगत भोग सुहावने, तिष्टत दीपत काय ॥ २८ ॥
इसप्रकार शुभ चेलना, कथा कही समझाय ।
याही विधि शिवलोकमें, ए रहते सुखपाय ॥ २६ ॥
यह विचार करके तबै, दीनी अगन लगाय ।
ब्रह्मलोक ए थिररहे, जरै मलीन जुकाय ॥ ३० ॥
ऐसे बच श्रेणक सुने, मनमें रोश जुआन ।
उत्तरको असमर्थ ह्वै, तिष्टे मौन सुठान ॥ ३१ ॥

छंदचाल

इस अंतर श्रेणिक नरिंद्र मन इच्छाधारी ।
करन अखेट प्रचंड गयो कानन दुख भारी ॥
तहां आतापन जोग धरैं तिष्टैं मुनि नायक ।
नाम जशोधर देव जगत जनको सुखदायक ॥ ३२ ॥
तिनैं देख नरनाथ क्रोध धारो अधिकाही ।
इह मो बिघन निमित्त भए या बन के माहीं ॥
मारूं इन्हैं तुरंत एम मन चिंतवन कीना ।
तबै पांचसै स्वान छोड़ मुनिवर पर दीना ॥ ३३ ॥
जबै स्वान विकराल महा उद्धत तनवारे ।
मुनि तपके परभाव शांतहूवे वे सारे ॥
दे परदच्छणा चरण कमल में सीस नवाई ।
भक्ति हियेमें धार पास बैठे ते आई ॥ ३४ ॥
इहविध देख नरेश क्रोध में अंध होयकर ।
छोड़ो बान तुरंत मुनीपै रोश हिये धर ॥
सायक फूल सुमाल भयो ततच्छन दुखदाई ।
मुनिप्रभाव जगमाहिं किसी तें कहो न जाई ॥३५॥

दोहा

ताहीविध श्रेणिक तनी, बँधी आय दुखकार ।
नरक सातवें की सही, बहुत कष्ट दातार ॥ ३६ ॥

चौपाई

मुनिप्रभाव लखि श्रेणिकराय । भक्तिसहित तिनके ढिगजाय ।
चरन कमलमें धारो सीस । खोटी बुद्धि त्यागी नर ईस ॥३७॥
नृपको पुन्य उदय जब भयो । मुनिको पूरन जोग सुभयो ॥
इंद्रचंद्रकर पूजित जान । तत्व स्वरूप कहा हित दान ॥ ३८ ॥

तबसुनके श्रेणिक बड़भाग । भक्तिसहित धारो अनुराग ।
उपसम सम्यक प्रापत भई । दीरघ आयु छेद तिन दई ॥३९॥
बरस चौरासी सहस प्रमान । प्रथम नर्कमें रही सुआन ॥
सम्यक दर्शतने परभाय । कौन २ दुख मिट नाहिं जाय ॥४०॥
तिस पीछे नरनाथ महान । चित्र गुप्त श्रीमुनि गुणखान ॥
तिनकी भक्तिकरी अधिकार । लै उपशम सम्यक तबधार ॥४१॥
फिर श्री जगत पूज परमेश । बर्द्धमान स्वामी जगतेश ॥
तिनके चरणकमलके पास । चायक सम्यक लहि सुखरास ।४२।
तिसही सम्यक तने प्रबन्ध । तीर्थंकर बिरकत कर बंध ॥
तीन लोक करहैं जिन सेव । होवेंगे तीर्थंकर देव ॥ ४३ ॥
प्रथम तिर्थंकर पद्म सुनाम । अब होवेंगे बहु गुणधाम ॥
सो जैवंतो होय सदीव । केवल ज्ञान सहित शिवपीव ॥४४॥
देव इंद्र चक्रीश गधीस । तिनको आन नवावे सीस ॥
भक्ति भाव धारे अधिकाय । पूजा अस्तुति करे बनाय ॥४५॥
जिनके श्रेष्ठ बचन हिये आन । हर्ष सहित धारैं सरधान ॥
सो निरमल लक्ष्मी भरतार । होवे निश्चय जगत मंझार ॥४६॥

दोहा

श्री श्रेणिक महाराज की, कही कथा हित दाय ।
भव्य जीव बांचो सुनो, जातें सम्यक पाय ॥ ४७ ॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय श्रेणिक महाराजकी कथा समाप्तम् १९

अथ रायपद्मरथकी कथा प्रारम्भः २०

मंगलाचरण कवित्त ।

तीन जगत पति पूजतहैं ऐसे श्री अरिहंत महान । तिनके चरणकमल को नुतकर कथा तनो अब करूं बखान ॥ रायपदम

रथ प्रगट भये हैं भव्य नमैं उत्कृष्ट सुजानं । जिनवर भक्ति धार चित माहीं ताकर फल पायो अधिकान ॥ १ ॥

चाल

तर्ज—सुन भाईरे, मागध देश सुहावनो सुन भाई रे । मिथला पुरी विख्यात सत्य सुन भाई रे ॥ भूप पदम रथ तासको, सुन भाई रे । सो सूरख अव दात, सत्य सुन भाई रे ॥ २ ॥

एक दिना अटवी विषय, सुन भाईरे । खेट करन गयो सोय, सत्य सुन भाईरे ॥ हयको दौड़ावत भयो, सुन भाईरे । एक मुसा अवलोय, सत्य सुन भाई रे ॥ ३ ॥

दूर निकलगयो वन विपय, सुन भाईरे । एकाकी नरराय, सत्य सुन भाईरे । पुन्य उदय जब आइयो, सुन भाईरे । काल गुफा में जाय, सत्य सुन भाईरे ॥ ४ ॥

तपो दीप्त रिधिके धनी सुन, भाईरे । तहां तिष्टे मुनिराय, सत्य सुन भाईरे । रत्न त्रयकर सोहने, सुन भाईरे । है सौधर्म ऋषिराज, सत्यसुन भाईरे ॥ ५ ॥

चाल मेघकुमारकी

देखी तिने देख नृप सुखलहो जी शांत चित्त है सोय । तप्त पिण्ड जिनलोहका जी, पैते शीतलहोय रेभाई ॥ ६॥

त्यों नृप समता लीन वाजीते उतरो जबैजी । मुनि ढिग गयो तुरंत सिर धारो चरण विषयजी । मनमें अति हरषत रेभाई। नृपको पुन्य विशेष ॥ ७ ॥

दोनों बहुत उपदेश सुन नृप सम्यक हिये धरीजी । गहे अनुव्रत धर्म रेभाई । नृ० पु० वि० । ८ ।

फिरमुनि को नायकेजी, बुद्धिमान भूपाल । प्रश्नकियो एह

विधि तवैजी । सुनिये दीनदयाल गुरुजी । मेरी संसय हान रेभाई ॥ नृपको पुन्य विशेष ॥ ९ ॥

सवैया इकतीसा

जैन धर्म रूपी सार सागर तरनजोग और वच आदि गुण जास मांहिं पाइये । ऐसेकोई उत्तम पुरुष इस अवनीपर तुम सम हूके नाहिं मोह मन लाइये ॥ तत्व ज्ञानी मुनिराय काहे नरधीश सुन वर्या नगर अनूप सुखदाइये । ताविषै विराजमान वांस पूज जिनराज पूजे गिरवान आप तिने शिरनाइये ॥ १० ॥

चौपाई

भविजनको सुखके दातार । कोटभानु ते दुति अधिकार ।
ज्ञान दीप्त गुणको धारंत । ऐसे वांस पूज भगवंत ॥ ११ ॥
तिन जिनवर को ज्ञान महान । अरु मेरे में अन्तर जान ।
जैसे मेरु सुदर्शन जोय । अरु सरसों तासम किम होय ॥१२॥
इमि मुनिवरके बच सुन राय । धर्म विषै बहु प्रीति लगाय ।
श्रीजिनवरके वंदन हेत । कीनो मन उत्साह समेत ॥ १३ ॥
होत प्रभात समय नर राय । बहु विभूति संग लेउ मँगाय ।
प्रीति सहित बन्दन के काज । चम्पापुर चालो महाराज १४॥
तितने कारन एक मनोग । होत भयो इस कर्म संजोग ॥
नाम धनन्तर एक सुजान । दूजो विश्वानल बुधवान ॥१५॥
रायभक्त देखनके हेत । आयो भूंपर हर्ष समेत ॥
पथमें जात लख्यो भूपाल । माया फैलाई तत्काल ॥ १६ ॥
स्याम शरीर नाग अधिकाय । मारगमें आडो दिखलाय ॥
छत्र भंग अरु हाहाकार । रज पत्थर अम्बरते भार ॥ १७ ॥
करी अकाल वृष्टि अधिकान । ताकर पंक भई दुख दान ॥
तामध गज झूमत दिखलाय। इमि माया बहुत विधि दरसाय।१८।

दोहा।

इस प्रकार अप शकुन लख, बोले मन्त्री एव ।
अहो अबै चालो नहीं, भयो अमंगल देव ॥ १९ ॥

चौपाई

तब प्रसन्न धीमान नरेश । कहत भयो ऐसे वच वेश ॥
बांस पूज स्वामी को सही । नमस्कार हो इमि मुखकही ॥२०॥
ऐसे कहकर पंक मझार । प्रेरो करी भक्ति हियधार ॥
इमि लखि सुर माया तज दीन । बारम्बार प्रशंसा कीन ॥२१॥
सर्व रोगको नाशन हार । जो जन एक पवन विस्तार ॥
ऐसो भेरी बहु गुणवन्त । नृपको देकर गये तुरन्त ॥ २२ ॥

दोहा

जिनके चित्त सदा बसे, जिन वर धर्म अपार ।
तिन के कारज सिद्ध सब, होवें जगत मंझार ॥ २३ ॥

काव्य

तिस पीछे नरनाथ गयो चम्पापुर मांही ।
परफुल्लत हिये कमल भक्त रूपी खग पाहीं ॥
मंगल तीनों लोक तनें वे जिनवर स्वामी ।
तिन के दर्शन किये नृपति ने बहु सुख यामी ॥२४॥
बहु स्तुति उच्चार फेर निज सीस नवायो ।
सुनो तत्व व्याख्यान चित्त में निश्चय लायो ॥
तैंन पद्म रथ राय लई दीक्षा सुखदाई ।
बांस पूज्य जिन नाथ चरन में तिन लौ लाई ॥२५॥
कैसे हैं जिन देव समोश्रित मांह विराजें ।
भानों गिरि अकाल भात हारज वसु साजें ॥

सेवें चरन सरोज सदा सुर नर खग सारे।
केवल ज्ञान प्रकाश तत्व जिनने विस्तारे ॥ २६ ॥

दोहा

लगो अनादि जु काल तें, मिथ्या भाव अयान ॥
ताके नासन हार प्रभु, बांस पूज भगवान ॥ २७ ॥
चार ज्ञान धारक सुधी, श्री गणधर महाराज।
तिनकर सेवत चरन युग, ऐसे जिन भव पाज ॥ २८ ॥

चौपाई

ऐसे प्रभुके चरन महान। मिथ्या तज सेवो भव आन ॥
यातें सुर शिव तुमको होय। यामें संशय नाहीं कोय ॥२६॥
जैसे राय पद्म रथ करी। भक्ति प्रभूकी हिय बिस्तरी।
तैसे तुम भी करो सुजान। जो श्री पावो तासु समान ॥३०॥
अब वे श्रीमान भगवान। केवल ज्ञान बिराज सुमान ॥
सत्पुरुषन कर सेवत जेह। सब जगको दीजे सुख गेह ॥३१॥
जिनकी भक्ति जगतमें जान। निश्चय सुख देवें निरवान ॥
बाह्रज इंद्र आदि चक्रेश। पद अथवा पावें धरनेश ॥ ३२ ॥

दोहा

राय पद्म रथ की भई, पूरन कथा महान।
पढ़ें सुनें जे भव्य जन, तिनको ह्वै कल्यान ॥ ३३ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय पद्मरथ राजा
दृष्टान्त कथा समाप्तः

अथ सेठ सुदर्शन की कथा प्रारंभः नं. २१

मंगलाचरण। सोरठा

पंच गती के हेत, पंच परम गुरुको नमूं।
कहूं कथा सुख केत, नमोकार फल की अबै ॥ १ ॥

चौपाई

अंग देश शोभा जुतलसे। तामध चम्पापुर शुभ बसे ॥
ताको नृप बाहन भूपाल। धारे सुन्दर नेत्र विशाल ॥ २ ॥
निज प्रताप कर अरिगण जास। परजा पालत सहित हुलास ॥
तिसही अवनीपति के जान। वृषभदास एक सेठ महान ॥ ३ ॥
सो वह सेठ जिनेश्वर दास। प्रभुकी भक्ति हिये परकास ॥
जिन चरनांबुज सेवन भंग। पाले निरमल क्रिया अभंग ।४।
तिस बानक पतिके वृष पाल। सब गौधनको है रिछपाल ॥
इक दिन बनते आवत धाम। पुन्य जोग पथमें अभिराम। ५।
जुग चारन मुनि ध्यान धरंत। सब जगमें उत्तम शिवकंत ॥
तिनको देख गोप हरषाय। मन बिचार इहि भांति कराय ।६।
एह मुनि मारतण्ड गुणवन्त। वस्त्र रहित तननगन धरन्त ॥
शिला श्रृंगपर धारत ध्यान। और एह शीत पड़े अधिकान ।७।
कैसे कर है रैन बितीत। इमि करुनाकर ह्वै भयभीत ॥
कर विचारसो निज गृह आय। मुनि चरननमें चित्त लगाय ।८।
पिछली रैन समय उठधाय। भैंस चरावनको तहं जाय ॥
देखे जुग मुनि ताही ठाम। तन तें निस्प्रेही गुणदाम ॥ ९ ॥
सब शरीर पर पड़ो तुषार। देख ग्वाल करुणा मन धार ॥
अपने करतें हिमकण सबै। कीने दूर हरष जुत तबै ॥ १० ॥
जुग मुनिके चरनाम्बुज सार। बहु तप लोटे थिरचित धार ॥
ताही छिन सुकृत भंडार। भरत भयो नाना परकार ॥ ११ ॥
इतने मांही भयो परभात। पूरन ध्यान कियो जगनाथ ॥

निकट भव्ययाको अविलोय । स्वर्ग मोक्ष सुख जाते होय।१२।
ऐसो मंत्र दियो तत्काल । णमो अरिहंताणं गुणमाल ॥
याको याद राखयो वीर । इमिकहि गये गगन तव वीर ।१३।

दोहा

तब ही उस गोपाल को, श्रद्धा भई महान ।
सुख दाता दोउ लोक में, मन्त्र प्रभाव सुजान ॥ १४ ॥
सब कारज के आदि में, पहिले मंत्र उचार ॥
यह निश्चय हित में धरी, गोपालक सुखकार ॥ १५ ॥

पद्धड़ी छन्द

एकै दिन सेठ महा सुजान । या मुख ते मंत्र सुनो महान ॥
तब कही अरे तू क्या कहन्त । तब गोप सबै भाखो वृतन्त ।१६।
सुन सेठ चित्तमें हर्षधार । धन धन भूपर तुमही औतार ॥
तू ने देखे मुनिराज जेह । तिहुंलोक पूज गुरूजान तेह ।१७।
जे धर्म राग प्रानी धरन्त । ते जगत विषय शोभा लहंत ॥
एक दिन याकी एक भैंसजान । गंगाके पार गयीनिदान ।१८।
तब ताके ढूंढनको गुवार । वो मंत्र उचारत बार बार ॥
सो नदी विषय ऐसो तुरंत । तहां काष्ट खंड आवत बहंत ।१९।
याने ताको नाही निहार । तानें हिरदो तत्छिन विदार ॥
जिमि दुरजन अपनो पायदाव।छिपकर शायकतै करतघाव।२०।
तब गोप मंत्र सुखतें बखान । करके निदान छोड़े पिरान ॥
सो वृषभदासकी नार सार । ताकी सुकूख लीनो औतार ।२१।

दोहा

नाम सुदर्शन तासुको, उपजे रूप निधान ।
महा भाग्य निज पुन्यते, शोभा धेर महान ॥२२॥
पुन्यवान को जगत में, क्या दुर्लभहै वस्तु ।
कोई दूर न देखिये, निकट निहार समस्त ॥ २३ ॥

चौपाई

इस अन्तर इस नगर मँझार । सागर दत्त एक सेठ निहार ।

सागर सोना ताकी भाम। मनोरमा पुत्री गुणधाम ॥ २४ ॥
सेठ कुंवरको ताके संग। भयो बिवाह सहित सुखरंग।
वृषभदास अब सेठ पुनीत। धर बैराग विषै तिन प्रीत ॥२५॥
अपनो पुत्र सुदर्शन सार। ताको निजपददे तत्कार।
गुरु समाधि गुप्त यह जाय। दीक्षा लीनी मन बचकाय २६॥
सेठ सुदर्शन अब बुधवान। राजादिक ते पायो मान।
भयो प्रसिद्ध जगतके बीच। फैली कीरति सहित मरीच २७॥
भगवत भाषत किरपासार। पाले श्रावककी अविकार।
पूजादान शील व्रत मांहिं। नितप्रति सावधान अधिकाहिं २८
एक दिन वनमें क्रीड़ा काज। नृपसंग गये सहित समाज।
इनकी रूप सम्पदा सार। देखत भई नृपतिकी नार ॥ २६ ॥
भवयालाम तासुको जान। होतभई विहबल अधिकान।
धाय प्रती बोली दुखपाय। हे माता सुनिये चितलाय ॥ ३० ॥
क्रोड़ों मुनि गणमें परधान। को तिष्ठत यहकाम समान।
तब वह कहतभई मुसकाय। सुनरानी मैं कहुं समझाय ।३१।
नाम सुदर्शन सेठ महान। जग विख्यात काम सम जान ॥
ऐसे वच सुन नृपकी भाम। धाय प्रति बोली अभिराम ३२ ॥

दोहा

हे माता इस पुरुषको, दीजे मोहिं मिलाय।
तो मेरो जीवनरहे नातरु जमपुर जाय ॥ ३३ ॥
तब धातृ वच इमकहे, सुन पुत्री अभिराम।
तन छिनमें करहूं सही, तेरे पूरन काम ॥ ३४ ॥

सोरठा

जे कुलटा हैं नार, निन्द काज सबही करें।
रंचक भय नहिंधार, आचारज बच इम कहें ॥ ३५ ॥

काव्य

इस अन्तर अब सेठ सुदर्शन जो बड़ भागे ।
श्रावक ब्रत कर सहित सदा जिनमत अनुरागे ॥
आठें चौदस रैन विषै बन खराडमें जावे ।
भूमि मसान मंझार जायकर ध्यान लगावे ॥ ३६ ॥
बन में जातो देख सेठको धाय अयानी ।
पाप कर्म में चूर उष्ट मनमें अधकानी ॥
यह कुम्हार घरजाय एक इन पुतलो लीनो ।
मनुष समानी काय गन्ध बहु तिस बपु दीनों ॥३७॥
पटमें ढको तुरंत चली रानी गृह आवे ।
रोकी तब दरबान जबे यह बहु खुनसावे ॥
पुतलोको तब लेय सीसते भू पर डारो ।
फटत भयो तुरन्त तबै रिस बैन उचारो ॥ ३८ ॥
रे रे दुष्ट अयान निन्द कारज तुम कीना ।
रानी के उपबास आज था वह नहिं चीन्हा ॥
इस पुतलेको पूज फेर वह भोजन करती ।
बिन देखे नहिं खाय यही ब्रत मनमें धरती ॥ ३९ ॥
ताते तुमको अबै दराड बहु विधि दिलवाऊं ।
प्रातकाल के होत सीस तुमरो छिदवाऊं ॥
तबही सारे द्वारपाल याके ढिग आये ।
स्तुति बहु विधि करी फेर इम बचन सुनाये ॥ ४०॥

दोहा

अबतो क्षमाकीजिये, फेर न रोकें तोहिं ।
इनको बसकरके तबे, गई सो हर्षित होय ॥ ४१ ॥

रैन अँधेरी अष्टमी, भूम मशानमें जाय।
सेठ सुदर्शन ध्यानजुत, देख धाय हर्षाय ॥ ४२ ॥
बड़े जतन ते सेठको, लीनो कंध बठाय।
रानी को सौंपत भई, मनमें बहु सुख पाय ॥ ४३ ॥

सवैया इकतीसा

काम कर पीड़ितभई है नृप नार तबै, आलीगन आदर करत तब बोली है। नाना उपसर्ग किये सारी रैनके मंझार, त्रियाके चरित्र तोभी पार न बसाई है ॥ सेठ धीय मानकियो मेरु के समान चित्त, निज मनमाहिं प्रतिज्ञा इम आनी है। टरै उपसर्ग एह मुनिव्रत धारकर, पान पात्र लेऊं अन्न ऐसे विधि ठानी है ४४॥

दोहा

जिन चरनाम्बुज को भ्रमर, बारिध सम गम्भीर।
काष्ट खंड सम होयकर, तिष्टोतित ही धीर ॥ ४५ ॥
सन्त जीव जे जगतमें, कोड़ों कष्ट लहाय।
तो भी नेक न चिगतहैं, चित्त धीरज अधिकाय ४६

छन्द चाल

तब नृप त्रिय निश्चै जानो। यह है पाखान समानो ॥
इस शील खण्डने रानी। ना भई समर्थ अयानी ॥ ४७ ॥
सो दुष्ट चित्त अधिकाई। तब ऐसे चरित कराई ॥
नखतें शरीर जु विदारो। मुखते तिन कियो पुकारो ॥ ४८ ॥
यह सेठ अवस्था कीनी। ऐसे भाषो रिस भीनी ॥
जे पापन हैं अधिकाई। ते क्या क्या नाहिं कराई ॥ ४९ ॥
तब राजा सुन दुख पायो। रिसते शरीर कंपायो ॥
तब हुक्म दियो तत्कारा। ले जाओ पकड़ यह वारा ॥ ५० ॥
मारो मसान में जाई। एह सेठ महा अन्यायी ॥

नृप बच सुनके भट आये । गह केश मसाणे लाये ॥ ५१ ॥

दोहा

एक दुरमती ने तबै, बांधी असि तत्काल ।
तब ही शील प्रभावतें, भई फूल की माल ॥ ५२ ॥
दशों दिशा गंधित भई, गूंजे अलि बहु भाय ।
सेठ गले शोभित भई, सो किमि बरनी जाय ॥५३॥

सवैया इकतीसा

देवन के गण सार कियो तहँ जैजै कार, कहो सब भव्यन मैं तुम परधान हो । धन धन सेठ आप जगकर पूजनीक, जिन पद सेवनको भृग केसमान हो ॥ श्रावक आचार महा पंडित प्रवीन अति, शीलके निधान अरु रूप अप्रमान हो । इत्यादिक बच सुरभाषे तहं बार बार, पुष्प वृष्टि कीनी कहो दया के निधान हो ॥ ५४ ॥

दोहा

पुन्यवान जनको सदा, होवे कष्ट अपार ।
सुखरूप है परनवै, महिमा धर्म अपार ॥ ५५ ॥
तातें भविजन जतन तें, पुन्य करोहित कार ।
जैसा भगवत ने कहा, तैसा हिरदे धार ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

पुन्य सोयको कहिये मित्त । श्री जिन पूजन कीजे नित्त ॥
दान दीजिये चार प्रकार । पालो शील सदा अविकार ॥५७॥
आठें चौदश धर उपवास । रैन मसाण विषय करवास ॥
सामायिक कीजे तिरकाल । एही पुन्य सचै अघटाल ॥५८॥
सेठ सुदर्शन शील प्रभाय । लखकर तिनही आयो राय ॥
नगरीके जन सारे तबै । सेठ चरन को नमिये सबै ॥ ५९ ॥

क्षमा कराई बारम्बार । लज्जा चित में नरपति धार ॥
सेठ सुदर्शन होय उदास । पुत्र सुकान्त बुलायो पास ॥ ६० ॥
अपनो पद दीनों तत्काल । आप गयो कारन गुणमाल ॥
नाम बिमल बाहन मुनिचन्द । तिनके चरननमों गुणवृन्द ।६१।
जैनिन्द्री दीक्षा तिस पास । लई सेठ धर चित्त हुलास ॥
दर्शन ज्ञान चरित तपसार । तिनको धारो सब अघटार ॥६२॥
निर्मल केवल ज्ञान प्रकास । सब चर अचर पदारथ भास ॥
देवइन्द्र कर पूज महान । मोक्ष पुरीमें कियो पयान ॥ ६३ ॥
और भव्यते है परधान । मन्त्र लयो नौकार महान ॥
सुखको देनहार है यही । ऐसी प्रभु बानी में कही ॥ ६४ ॥
नित सर धान करो मनलाय । निश्चल चितकर हर्ष बढ़ाय ॥
इसही मन्त्रतनें परभाय । भये सेठ शिवपुर के राय ॥६५॥
सोई प्रभु बरतो जैवन्त । जो शिव नारतने है कन्त ॥
केवल ज्ञान मरीच प्रकाश । भवजनके हिय कंच बिकाश ॥६६॥
सुरखग असुर और चक्रेश । अथवा श्रीमुनिवर जगतेश ॥
बनि बारिध जाननहार । इत्यादिक सेवें हितधार ॥६७॥
ऐसे प्रभुके कबि चित लाय । सुँमिरन करे सीस भू नाय ॥
तुमही दीना नाथ दयाल । मेरे भव अघ दीजे टाल ॥६८॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय सेठ सुदर्शनकी कथा समाप्तम्

अथ यमभूतकी कथा प्रारम्भः नं० २२

मंगलाचरण । सोरठा ।

श्री अरिहन्त महान, और भारती मात जी ।
गुरु निर ग्रन्थ महान, तिनको वन्दूं भाव जुत ॥१॥

कहूं कथा सुखकार, भई खण्ड श्लोक तें ।

त्यको सुन चित धार, अहो भव्य प्रानी सबै ॥ २ ॥

चौपाई ।

उड्र देश सबसे विख्यात । धर्म नगर ता मांहि सुहात ॥

सर्वशास्त्र को जाननहार । बुद्धिमान यमभूत उदार ॥ ३ ॥

धनवंती तासू गृह भाम । गर्दभ पुत्ररूप अभिराम ।

नाम कौनका तनुजा जान । लावन मराडत तन अधिकान ४

तिसही नृपके और जो नार । तिनके पुत्र पांच सौ सार ॥

जैन धर्ममें तत्पर सोय । सज्जन जन लख हर्षित होय ॥५॥

मन्त्री दीरघनाम बखान । मन्त्र कर्ममें है परधान ॥

या विधि राज करत भूपाल । सुखसे बीतत है तिसकाल ॥ ६ ॥

एक दिना इक निमती आय । राजासे इमि बचन कहाय ॥

तुमरी सुता कौन का जोय । चक्रवर्त्ति के नारी होय ॥ ७ ॥

ऐसे बचन सुने नरराय । पुत्री पालत भयो छिपाय ॥

एक दिना उस नगर उद्यान । नाम सुधर्मा सूर महान ॥ ८ ॥

पांच शतक मुनि तिन संगधीर । आय बिराजे नगन शरीर ॥

तब सबजन मिल हर्ष बढ़ाय । सामग्री ले वन्दे जाय ॥ ९ ॥

दोहा

पुरजम जाते देख नृप, ज्ञान गर्भ चित आन ।

मुनि निन्दा करतो गयो, एह भी उसही थान ॥ १० ॥

मुनि निन्दा परभावतें, अथवा गर्भ पसाय ।

ताछिन पाप उदै थकी, नृपकी बुद्धि नसाय ॥ ११ ॥

महा कष्ट दाता सही, गर्भ सो आठ प्रकार ।

याको ततछिन छोड़िये, अहो भव्य चित धार ।१२।

पद्धरी

तब नृपत ज्ञानकर हीनहोय। निरमद करीन्द्र सम भयोसोय।
मुनिको कीनो तब नमस्कार। तिष्ठो तिनढिग बहु भगतधार।१३।
जिन भाषित धर्मसु दो प्रकार। सुनिये नरिन्द्र हियमांहि धार।
तब राज लखते ह्वै उदास। गर्दभ सुतको बुलवाय पास॥१४॥
सब राज सौंपताको जु दीन। सुत पांच शतक जिनसंग लीन।
मनबचन काय त्रय शुद्धवान। मुनि होत भये ततच्छण महान १५
सबशास्त्र पढ़े पण सत मुनीश। जिन आगम पार भये जगईश।
अरुयम मुनिको श्रम जात बाद। नहि नमोकर भी होत याद।१६।
तब इह लज्जा चित मांहिं आन। श्रीगुरुते पूछ कियो पयान॥
तीरथ यात्राके हेत जाय। एकाकी विचरे शुद्ध काय॥ १७॥
इक दिन मारग बिहरत मुनिन्द। यकरथ देखोजुत मनुष वृन्द।
अरु खेत खात गर्दभ निहार। तब खण्ड रचो यह श्लोकसार १८

गाथा

१ कड्ढसि पुण णिरक्खेवसि रे गद्दहा जवं पेच्छसि खादिदुमिते १८

चौपाई।

फिर और दिना मगमें निहार। बालक करते लीला अपार॥
गिल्ली जु काष्ठकी तिन बगाय। सो पड़ी गढ़ेके मध्य जाय।१९।

दोहा

तबभी मुनिवर ने रचो, खण्ड श्लोक सुखकार।
कछु यक बुद्धि प्रसादते, इहि विधि कियो उचार।२०।

गाथा

२ अण्णत्थ किं पलोवह तुम्हेए त्थणि बुद्धि पाछिदे
अत्थइ कोणा आई तिछे॥ २१॥

दोहा

इक दिन कमलन पत्रकर, अच्छादित फण धार।
मींडक लख मुनिकूं तबै, भागो भय चित धार। २१

चौपाई

तब यह मुनिवर तहां बनाय। रचो खण्ड श्लोक सुखदाय ॥
या बिधितें भाषो गुण गेह। ताको वर्णन अब सुन लेह ॥२२॥

गाथा

३ अम्हा दोण छिभयं दिही दोषसि देभयं तुम्हेति गछ गये हजे

चौपाई

इस प्रकार त्रय खन्ड बनाय। इनको नित स्वाध्याय कराय ॥
जिन तीर्थनकी बन्दन करै। शुद्धातम निरमल चित धरै ॥२३॥
बिहरत आये दया निधान। नाम धर्मपुर नगर उद्यान ॥
कायोत्सर्ग धरो जगदीश। तिष्ठे ध्यान विषय मुनि ईश ॥२४॥
दीरघ मंत्री गर्दभ राय। यममुनि आये सुन दुख पाय ॥
राज हमारो लेने काज। आये हैं वह बिहरत आज ॥२५॥
ऐसा मनमें कियो बिचार। इन मारनकी इच्छा धार।
अर्द्धरात्रि खोटी मत ठान। खड्गलेय आये बन थान ॥२६॥
मुनिके पीछे ऊभे जाय। मूरख नृप मंत्री अधिकाय।
तब गर्दभ दीरघ मिल दोय। खड्ग उठाई हर्षित होय ॥२७
फिर मुनिकी हत्यातें डरे। खड्ग लेय कर म्यान सुकरे।
हत्याको भय चितमें आन। काढ़े खड्ग करे फिर म्यान २८
उसी समय मुनि दयानिधान। खण्ड श्लोक त्रिय कियेवखान।
प्रथम श्लोक सुन गर्दभराय। मंत्रीसे ऐसे बतलाय ॥ २९ ॥
हम तुम दोनों दुष्ट अयान। इन मुनिने अब लिये पिछान।
दूजा सुन श्लोक नरेश। दीरघ प्रत बोलो बच वेश ॥ ३० ॥
यह तपसी नहिं चाहत राज। पर उपकारी धर्म जहाज।

नोट—यह तीनों गाथाएँ हमको ऐसेही मिली हैं इसकारण हमने ज्योंका त्यों नकल करदी हैं बुद्धिमान शुद्ध करलेवैं और हमको सूचित करें

नाम कौशाका इनकी सुता । ममभगनी जो है गुणयुता ३१ ॥
तिष्ठत है जो तेखानेमाहिं । तिस सनेह बतलावन आहि ।
तृतीय श्लोक जो खंड बनाय । सोभी पढ़ो तबै मुनिराय ॥३२
सुनकर गर्दभ चित्त मंझार । ऐसे कीनों सार विचार ।
यह मंत्री दीरघ दुखदाय । दुष्ट स्वभाव धरे अधिकाय ॥३३॥
मुझको मारन चाहत एह । यामें तो ना है सन्देह ।
मेरा पिता मोह वश आय । गुप्तभेद मोहिं दियो बताय ॥३४
इमि विचारकर नृप परधान । कियो प्रनाम भक्त बहु आन ।
अभिप्राय खोटा तजदीन । उत्तम श्रावक व्रत तिन लीन ३५॥
अब यह यम मुनिंद गुणवान । अति वैराग लीन तपखान ।
भगवत भाषित शुद्ध चरित्र । तिसको पालत सदा पवित्र ३६॥
तप जु प्रभाव कर्म नस गये । सातों रिद्धिके धारी भये ।
तुच्छ ज्ञान धारी यह राय । गुण भाजन है ऋद्धि लहाय ३७
तातें अहो भव्यजन सबै । भगवत ज्ञान अराधौ अबै ।
तुच्छ ज्ञान भी है सुखदाय । जगमें है सो यम मुनिराय ३८॥
कैसे हैं गुणनिधि योगिंद्र । सत ऋद्धि धारी सुखकंद ।
तातें भगवत भाषत ज्ञान । सत्पुरुषन को करै कल्यान ॥३९॥

दोहा

पूरन कथा जो यह भई, यम मुनिकी जुमहान ।
कविताके वे श्रीमुनी, करहैं सब कल्याण ॥ ४० ॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषय खण्ड सप्तऋद्धिकर शोभित यममुनिकी कथा समाप्तम् २२ ।

अथ नवकारमंत्र फलमें सूरजचोरकी

कथा प्रारभ्यते नम्बर २३ ।

मंगलाचरण । सवैया तेईसा ।

लोक अलोक प्रकाश कियो जिन श्रीअरहन्त नमूं सुखकारी।
तीनहुं लोक विषय जु पदारथ भासरहे जिन ज्ञान मंझारी ॥
तासु प्रसाद कथा बरनूं शुभ श्री नवकार तनी अति भारी ।
श्रीदृढ़ सूरज चोर लहो फल तासु चरित्रकहूं अघटारी ॥१॥

दोहा।

येही उज्जैनीपुरी, ताको नृप धनपाल ।
धनवति रानी तासुकी, गुण रतननकी माल ॥२॥

चौपाई

एकदिना बन देखनकाज ऋतुबसंतमें सहित समाज ।
क्रीड़ा हेत गई नृप नार, लारलेय सबही परिवार ॥ ३ ॥
तिस रानीके गल बिच हार । तामें रतन जड़े अति सार ।
तिस अवसर एक गणिका आय । नाम बसंबसेना तिसथाय ४
देखहार चित विस्मै भई । मन विचार इमि कीनों सही ।
या बिन जीवन निष्फल जान । ह्वै उदास गृह पहुँची आन ५॥
दृढ़ सूरज तस्कर इस गेह । रैन समय आयो जुत नेह ।
कहत भयो दुःखित क्यों बाल । तब गणका बोली दरहाल ६
रानीके गलमें जो हार । मोको लाय देय तत्काल ।
तो तू पितम है परधान । नाहीं तो जावे मुझ प्रान ॥७॥

दोहा

दृढ़ सूरज यह बचन सुन, धीरज बहुत बंधाय ।
राजाके गृह जाय के लीनो हार चुराय ॥ ८ ॥

रैन समय लेकर चलो, भयो उद्योत अपार।
नाम तास जमपास है, तहँ आयो कुतवार ॥ ६ ॥

बन्दचाल

दृढ़ सूरज कूं तिन चीन्हा। बांधो बहु कष्ट सो दीना।
नृप आज्ञा फिर तिन पाई। सूली पर दियो चढ़ाई ॥१०॥
ताही नगरी के मांहीं। एक धनदत्त सेठ रहाहीं।
सो प्रातकाल उठ धावे। श्रीजिनमन्दर को आवे ॥ ११ ॥
सो तस्कर दुख जुत भारी। कंठागत प्राण सुधारी।
इम कही सेठसे बानी। मोहे वेगहि लावो पानी ॥ १२ ॥
तुम दयावान अधिकाई। जिन भक्ति महा सुखदाई।
तब सेठ कहे सुन भाई। मेरे वच चित्त लगाई ॥
द्वादश वर्ष माहि लहायो। गुरुकी सेवा तैं पायो ॥
इह मंत्र महा सुखदाता। तिस याद करो अब भ्राता ॥ १४ ॥
जो मैं अब जलको लाऊं। तो मंत्र भूल यह जाऊं ॥
ताते इसको तू भासे। तो जल लाऊं तुझ पासे ॥ १५ ॥
जबमैं जल लाऊं भाई। तब दीजो मोहि बताई ॥
सुन चोर कही सुन नामी। करहूं ऐसे ही स्वामी ॥ १६ ॥

दोहा

धरम तत्व ज्ञायक सुधी, पर उपकारी सार।
ऐसे धनदत सेठ ने, मंत्र दियो नवकार ॥ १७ ॥
आप गयो पय कारने, सज्जन जन हित दाय।
इतने दृढ़ रथ चोर तब, मंत्र सुयाद कराय ॥ १८ ॥

सोरठा

ततक्षण छोड़ी काय, मंत्र घोषतें चोरने।
प्रथम स्वर्ग में जाय, उपजो निर्जर ऋद्धिधर। १९ ।

अहो मंत्र परताप, क्या न लहै प्रानी सबै।
तातें कीजे जाप, सदा मंत्र नवकार की ॥ २० ॥

चौपाई

इतनेमें दुर्जन इक जाय। नरपति तें इम अरज कराय॥
वाणिक पद धनदत्त महाराज। चोर थकी बतलाये आज ।२१।
यातें याके गृह मधिजान। चोर द्रव्य तिष्ठे अधिकान॥
दुरजन जनको है धिक्कार। सज्जन जनको भी भैकार ॥२२॥
याके बच सुन अवनीपाल। क्रोध थकी कम्पो तत्काल।
सेठ पकड़ने हेत तुरंत। किंकर भेजे अवनीकन्त ॥ २३ ॥
ताही छिन तस्कर चरजेह। भयो त्रिदश अति सुंदर देह॥
अवधि ज्ञानते सब उपकार। सेठ तनो जानो तेहिवार ॥२४॥
अवनी पै आयो हरषाय। द्वारपाल को रूप बनाय॥
सेठ पौल तिष्टो तिह घरी। करमें छड़ी सुरतनों जड़ी॥ २५ ॥

दोहा

राजा के किंकरन को, करत प्रवेश निहार।
मने कियो इसने तबै, उन हठ कियो अपार ॥ २६ ॥
तब सुर ने माया थकी, वे चर हने तुरन्त।
नृपति वारता यह सुनी, भट भेजे बलवन्त ॥ २७ ॥

चौपाई

वे भी मारे सब रिष धार। सुन के नृप ले सेना लार॥
गज चढ़ आयो तिहही थान। जहँ तिष्ठत हैं वह दरबान।२८।
सब सेना नृपकी तिहघरी। सुरने तबही मूरछा करी॥
राजा भयकर कम्पित काय। भागत भयो महा डरपाय।२९।
कहे अमर सुनरे नर राय। सेठ तने जो सरनें जाय॥
तो तुझ जीवन है निरधार। नातर मारूं इसही वार ॥ ३०॥

दोहा

तब नरपति जिन धाम में, गयो सबै मद छार ।
सेठ प्रती कहतो भयो, रत्त रच्च यह वार ॥ ३१ ॥

पद्धड़ी

तबही शुभ आतम सेठ धीर । निर्जर प्रति बैन कहे गंभीर ॥
हो धीर वीर यह सब चरित्र । तुमने कीने किस हेत मित्र । ३२ ।
तब दृढ़स्थ सूरजको जु जीव । सुर नमस्कार बोलो सुईव ॥
हे महाराज तुमहो दयाल । जिनपदअम्बुज षट्पद विशाल । ३३ ।
मैं महा पाप गिरसत अयान । मोको दृढ़सूरज चोरजान ॥
तुमरे प्रसाद किरपानिधान । मैंने पायो सौधर्म थान ॥ ३४ ॥
पूरब भवमें निज यारकीन । उपकार लखो तुमरो प्रवीन ॥
यातें मैं आयों हर्ष धार । मोको अपनो चाकर निहार । ३५ ।
रचा तुम्हरी हियमाहिं धार । याते इह काज कियोअवार ॥
इम कह रतनादिक सार लाय । धनदत्त तनी पूजा कराय । ३६ ।
फिर नमस्कार करके तुरंत । निज धामगयो बहु हर्षवन्त ॥
तब चित प्रसन्न नरनाथ होय । पूजे सु सेठके चर्न दोय ॥ ३७ ॥

दोहा

पर उपकारी जीव जे, धनदत सेठ समान ।
तिनको दुर्लभ कछुक नहिं, सबही सुलभ सुजान । ३८ ।

गीता छन्द

धन पाल नृपको आद लेकर मुख्य भविजन जे जहां ॥
इह मंत्र शुभ नवकार महिमा देख हरषित है तहां ॥
अरहंत भाषित धरम निरमल भक्ति रति उन आदरो ।
तातें सबै भव जीव अब भी धरम में बुधको धरो ॥ ३९ ॥

दोहा

पूरन कथा जु इह भई, दृढ़ सूरत की जान ।
मंत्र प्रभाव सुपाइयो, तानें नाक सु थान ॥ ४० ॥

इति श्री आराधनासार कथा कोष विषय दृढ़सूरज चोरकी कथा समाप्तम् ।

जयपालनाममातंगकीकथाप्रारंभः२४

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

सुख दाता अरिहन्त को, धर्म हेत शिर नाय ।
कहूं कथा मातंग की, पूजो सुरतिस आय ॥ १ ॥

चौपाई

नगर बनारस उत्तम थान । नृपति एक शाशन गुणवान ॥
इक दिन अपने देश मंझार । पंडित जन देखे अधिकार ।२।
रोग शांति करनेके काज । उद्यम कियो आप महाराज ।
श्री नंदीश्वर पर्व मंझार । कार्तिक की अष्टानिक सार ॥३॥
तामें घोष नदी नीराय । कोई जीव न मारो जाय ।
कैसो है धरमातम भूप । प्रजा विषय हितधार अनूप ॥४॥
सेठ पुत्र इक दुष्ट स्वभाव । सप्त विषन सेवै अधिकाव ।
धर्म नाम नृपको उद्यान । तामें गयो पापकी खान ॥५॥
नृपको मींढो तामें एक । मारो पापी रहित विवेक ।
ताको पल भच्यो तत्कार । अस्थि गाड़ियो भूमि मंझार ॥६॥
सप्त व्यसनके सेवनहार । तिनके दया न हृदय मंझार ।
इहतो बात सत्य पहचान । यामें मिथ्या रंच न जान ॥७॥
तबै पाक शाशन नरपाल । मींढो ढुंढवायो तत्काल ।
कहिंय न पायो याको खोज । हेरे चर नगरी में रोज ॥८॥
रैन समय बन पालक आय । निज नारीसे इमि बतलाय ।
सेठ तनुज ने मींढो मार । ताको पल भच्यो तिहवार ॥९॥

दोहा

इसकी बातैं सुन सबै, हलकारे दरपाय ।
इव वृतान्त कहो भूपती, जिम मालिद पर आय १०

राजा सुन मनरोशधर, लियो जम दंड बुलाय ।
आज्ञा इहविधिकी दई । तू सुनले चितलाय ॥११॥
धरम सेठको जो तनुज, धर्म परायन जान ।
ताको सूली दो अबै, रंचक देर न आन ॥ १२ ॥

चौपाई ।

नृप आज्ञा सुनके कुतवार । शूली निकट गयो तिहिबार ।
प्यादन को इम आज्ञा दई । एक चंडाल बुलावो सही ॥१३॥
सुन आज्ञा चरगये अभंग । जहँ जमपाल रहे मातंग ।
ताने बृत लीनों परधान । ताको वर्णन सुनो सुजान ॥१४॥
इकदिन सर्व औषधी नाम । सुन भेटे इन कियो प्रनाम ।
धर्म सुनो जिन भाषित सार । दोनोंलोक सुधारनहार ॥१५
यम बालक नामा मातंग । यह विधि नेम लियो जु अभंग ।
दिन चौदश के पर्व मंझार । कोई जीव हनूं न लगार ॥१६॥
इहविधि नेम पवित्र अपार । पहले लीनोथो सुखकार ।
सो इन आवत देखे सही । कोतवाल के चाकर वही ॥१७॥

दोहा

नारी तें बतलाइयो, बृत रक्षाके काज ।
हे प्रिये ऐसे भाषियो, गयो गांव वह आज ॥१८॥
ऐसे कह निज भामते छिपो धाममें जाय ।
शुद्ध बुद्ध धारक यही, इतने वे चरआय ॥ १९ ॥

अडिल्ल

तिनसेती चंडाली ऐसे वच कहे ।
गयो ग्राम मुझ नाथ आज जानो यहै ॥
तिस वच सुनकर किंकर ऐसे तब कहो ।
देव ठगो वह आज ग्रामको क्यों गयो ॥२०॥

सोरठा

सेठ पुत्रको आज, शूली देनोथो सही।
मिलतो सकल समाज, पट भूषण आदिक सबै २१।

पायता

किंकर बचसुन चंडारी। मन लोभ भयो अति भारी।
ऊपरते इमि बतलावे। वह ग्रामगयो कल आवे॥ २२॥
अरुसैन थकी बतलाई। गृह कोने माहिं छिपाई।
मायाचारी है नारी। फिर लोभ मिले जब भारी॥ २३॥
तबतो क्या कहो सुनावे। बहु विधिके चरित बनावे।
जिमि अगिन तेज है भाई। है पवन थकी अधिकाई॥२४॥

चाल मेघकमार

कोतवारके चर तबै जी, पकड़ लियो चण्डाल। भूपति आगे लेगयेजी तब इनबचन उचार॥ हो स्वामी ममविनती उरधार २५

हे नरेश मुझ नेमहै जी, जीविन हनहूं आज। जो मनभावे सो करोजी, सुनलीजे नरराज॥ हो स्वामी ममविनती उरधार २६

इम सुनके तब नरपतीजी, कीनो क्रोध अपार। सेठपुत्र को दोष तैंजी ऐसे वचन उचार। सुनों चर लेजावो इन वेग २७।

इह शिशुमार विषय अबैरे, दोनों को दो डार। आज्ञा इह यम दण्ड सुनी जी, ठानी निज सिर धार॥ तबेही ले चालो तत्काल॥ २८॥

सेठ पुत्र चंडारको जी, गेरे ग्रह मध जाय। क्रूर जन्तु जामें भरे जी, अरु जलकी नाई थाय॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार २९

व्रत रक्षाके कारनेजी, संकट सहे अपार। ता प्रभाव अनुरागते जी, आये सुर तत्कार॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार॥ ३०॥

जलपे सिंहासन रचोजी तापर दियो बैठाय। फिर उत्तम जल

खायकेजी म्होत्व कियो हरषाय ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ॥३१॥
वस्त्रभूषण पहरायके जी दीने रतन अपार। यह कारन लख
नृप तबै जी आयो हर्ष सुधार ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ॥३२॥
शुभ उज्जल यम पाल है जी ताको पूजो राय। बहु स्तुति
मुखतें करीजी तू उत्तम अधिकाय ॥ रे भाई धर्म बड़ो संसार ३३
इह विध भवि जन जानके जी धर्म करो अधिकाय। जो श्रीजिन
वरने कहोजी स्वर्ग मुक्ति सुखदाय॥ यह निश्चय मन धार ३४

छप्पय

व्रत जुत जो चराडार सुरोंकर पूजित होई।
तातैं जगमैं जात गर्व कीजो मत कोई॥
देखो जिनवर धर्म लेश जिम चितमें धारो।
देवनकर भू मांहि पूज है सब अघ टारो॥
सो श्रीभगवत धरम अब, तीन लोक में सुख करो।
अरुमेरे कल्याण कर, दुख दारिद्र बाधा हरो।३५।

सोरठा

यम पालक मातंग, तासु कथा पूरी भई।
सुनते अघहों भंग, बहु कीरत जगमें बढ़े ॥३६॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय यमपालनाम चाण्डालकी कथा समाप्तम्

मृगसेन धीवरकी कथा प्रारम्भः नं० २५

मंगलाचरण ॥ मरहटा छन्द ॥

केवल चखु धारी ज्ञान भराडारी ऐसे श्री अरिहन्त।
सब जनके ज्ञाता जन सुख दाता धारे सुगुण अनन्त॥
तिनको सिरनाऊं, भगत बढ़ाऊं कहूं कथा रसवन्त।
धीवर अघधारी हिंसा कारी ताकर ? ? महन्त ॥ १ ॥

कड़खाछन्द

सर्व सन्देह तमदूर करने विषय भानकी किरने सम् जैनवानी।
प्रान सम जानकर प्रीतकर सेइये करे अघहान सुखलहै प्रानी॥
खिरीजिन मुखथकी शब्द घनघोरसम श्रीगणाधीश निजहियेआनी
अंग द्वादश तबै रचे पदरूप कर सोई जगवंत जगमें बखानी २

सवैया इकतीसा

अट्ठाईस मूल गुण पाले सदा प्रीति कर नगन स्वरूप धरे जग हितकारी हैं। ज्ञान के उदधिसार सुगुण तने भंडार भव दधिसेत और आप अणागारीहैं॥ बाईस परीषह जोर ताको सहे बार बार धर्म शुक्ल ध्यान गहे दया धर्म धारी हैं। ऐसे गुरु मेरे हिये बास करो मेटो त्रास हूजिये सहाय हम सरन तुम्हारी हैं॥ ३॥

दोहा

ऐसे श्री अरहन्त को, और भारती माय।
गुरुको सीस नवाय के, कहूं कथा सुखदाय॥ ४॥
यही मंगल रूप है, करन शान्ति करतार।
यातें सबको आदि में, इनको सुमरन सार॥ ५॥

चौपाई

हिंसा सबजन को भै दार। नाम मात्र भी है दुखकार।
सोई हिंसा तीन प्रकार। पंडित जन त्यागो निरधार।६।
पितृ अर्थ इक जानों सई। दूजी देवता हित बरनई॥
तृतिय शान्ति अर्थ निहार। त्यागी कुमलख दुख भंडार॥७॥
हो भवि जन सुनिये मनलाय। बरत अहिंसा सब सुखदाय॥
तासु महात्तमको व्याख्यान। सुख दाता कल्याण निधान।८।

पद्धड़ी छन्द

रमणीक अवन्ती देश नाम। तामे श्रीयुत सुसरीख ग्राम॥
तहां धीवर इक मृगसेन जान। सो पाप तनी मूरख अयान।९।
इक दिन कांधे धर जाललीन। शिप्रा सरिताको गमन कीन॥
मछियनके पकड़न हेत जाय। इतने मगमें एक मुनि लखाय।१०।
तिनको इह भविलखि हर्षपाय। कांधेते जाल दियो वगाय॥
बहु भक्तिवन्त ह्वै के तुरंत। उनके पदपूजे हर्षवन्त॥११॥
कैसे है श्री मुनिराज चंद। जिन नाम जसोधर सु गुण बृंद॥
सुर असुर चक्रधारी सुआय। तिनके पद पूजे सीस नाय।१२।
अरहन्त कथित नैस्याद बाद। तिस जाननको पंडित अगाध॥
सबजन उद्धारन चित्तठान। अरु कमरकसी मुनि भटनिधान।१३।
धर्मामृतकर सब जीवराश। पोषे त्रियलोक कियो प्रकाश॥
निजबचन भरीचितमें प्रभाव। मिथ्यात अन्ध कीनो अभाव।१४।

दोहा

दिशा रूप अम्बर धरे, रत्न त्रयकर लीन।
ऐसे श्री मुनिराज लख, धीवर मन सुख कीन।१५।
कहत भयो कर जोरके, अंग वसू भुवि लाय।
स्वामी कर्म करीन्द्र को, तुम मृगेन्द्र भयदाय॥१६॥
कौन बरतकर नर लहे, नेम महा सुखदाय।
इमि कह मस्तक नम्र करि, बैठो मौन लगाय।१७।

चौपाई

तबै जसोधर श्री मुनिराय। मनमें येम बिचार कराय॥
इह धीवर हिंसक अधिकार। कैसे इन ब्रत चितमें धार॥१८॥
अथवा बातजोग इहजान। कर्म चरित्र विचित्र महान॥
अवधि जानबल ज्ञानतुरंत। तुच्छ आयु याकी लखिसंत।१९।

दया धुरंधर बोले ऐन । हे धीवर तू सुन मुझ बैन ॥
आजजाल मधि पहिलोजीव । जो आवे सो छोड़सदीव ।२०।
अहो जु महा भाग धीमान । मेरे बच हिरदेमें आन ॥
यहीं नेम तूले गुणवंत । याहीको पालन कर सन्त ॥ २१ ॥
बहुरि जगतमें जो हितकार । ऐसो मंत्र दियो नवकार ॥
फेर कह्यो तू रखियो याद । सदा सुमरियो तज परमाद ॥२२॥
ऐसे धीवंर सुन मुनिबैन । स्वर्ग मोक्ष दाता सुख दैन ॥
अपने मनमें हर्ष सुधार । मुनि बच कीने अंगीकार ॥ २३ ॥
जे जन गुरु बचकरें प्रमान । तिनको सुर शिवहै आसान॥
धींवर नम करके तिहंबार । शिप्रा नदी गयो तत्कार ॥ २४ ॥
डारो जाल नदी में तबै । दीरघ मत्स आइयो जबै ॥
तब मनमें इमि कियो बिचार । मैं पापी धींवर अधकार ॥२५॥
कोई पुन्य उदय मुझ भयो । श्री मुनि बरको दर्शन लयो ॥
बहुरि बरत लीनो सुखखान । याते याके हनूं न प्रान ॥२६॥
ब्रत रक्षाके हेत सुजान । पट टूकरो बांधो तिस कान ॥
छोड़ दियो सरिता महं सोय । ब्रत पाल्यो चित हर्षित होय ।२७।
जे सत्पुरुष जीव जग मांहि । मरन प्रयन्त तजें ब्रत नांहि ॥
बिघन रहित पाले नित जेह । सुख सम्पतिको कारन येह ।२८।

दोहा

दूर जाय दुहनी निकट, डारो याने जाल ।
फिर वोही पाठी फंसो, आयो तब तत्काल ॥ २९ ॥
होनहार सुभगत जिसे, ऐसो धीवर सोय ।
छोड़ दियो तिस मच्छको, चितमें हर्षित होय ॥३०॥
सकरी पति तिस जाल में, आयो बरयां पंच ।
तब इस ने गह छोड़यो, भयो उदासन रंच ॥ ३१ ॥

सोरठा

भारतखंड जिहिं बार छिपत, भयो पश्चिम दिशा ।
भूपधि सार असार, सबै अस्त होवै सही ॥ ३२ ॥

चाल अहो जगत गुरुजी

तब ही इह मृगसेन चित्त में एम विचारे ।
व्रत रक्षा के काज गुरू के वचन चितारे ॥
घरको चलो तुरन्त जाल लीनों तिन खाली ।
लख तब घंटा नार बचन बोली दे गाली ॥ ३३ ॥
रे मूरख मति मूढ़ गेह खाली क्यों आयो ।
अब क्या खाय पखान कटुक इमि बचन सुनायो ॥
करने लगो प्रवेश तबै निज घर तत्कारी ।
नारी दियो कपाट रह्यो यह घर के बारी ॥ ३४ ॥
आचारज इमि कहैं जगत में हैं जे नारी ।
लाभ विषय अति प्यार नहीं नर कारहै ख्वारी ॥
जबही धींवर नमस्कार मुखतैं उच्चारत ।
बाहर गयो तुरन्त रैन में भूमि निहारत ॥ ३५ ॥
काष्ठखगड इक पड़ो सोइ सिर नीचे दीनों ।
सोयो सुमिरन मन्त्र तहां अहिने डस लीनों ॥
दसों प्रानते रहित भयो ताही छिन मांही ।
प्रातकाल इस नारि देखकर अति पछितानी ॥ ३६ ॥

दोहा-

तब इस घगटा नारने, मुख इम बचन उचार ।
परभव में एही पुरुष, हूजो मम भरतार ॥ ३७ ॥
ऐसो कियो निदान तब, सब जन देखत हाल ।
अगानि विषय जलती भई, अपने पतिकी नाल ॥३८॥

चौपाई

इस अन्तर इक नगरी जान। नाम बिशाला है दुतवान ॥

तहां विश्वम्भर नाम नरेश। विश्वगुणा तिस नारी वेश ॥३६॥

तहां गुणपाल सेठ इक रहे। भक्ति जिनेश्वरकी चित गहे।

धन श्रीनाम तासुगृह नार। तनुजा भई सुबन्धा नार ॥४०॥

फिर तिसहीके गर्भ मंझार। पूरब पुन्य उदय अनुसार।

मृगसेन धीवर चर आय। गुण मण्डित तिष्ठो सुखदाय ॥४१॥

इस अन्तर अब नगर नरेश। नष्ट बुद्धिधारी जुविशेष।

नर्म भर्म इसको परधान। नर्म धर्म ताको सुतजान ॥४२॥

ताके हेत नृपति ने सही। इस गुणपाल बनिकतें कही।

तुझ पुत्री जसुवन्धा येह। मन्त्रीके सुतको अब देह ॥ ४३ ॥

कैसी है कन्या दुतवन्त। सब परयन लखि हर्ष धरन्त।

सेठ विचारी मनके माहिं। यहतो कष्ट भयो अधिकाय ४४॥

नष्ट बुद्धि यह है नरधीस। कन्या मांगे बिस्वे वीस।

मन्त्री को सुत दुष्ट अपान। जो याको दूं कन्यादान ॥४५॥

तो अपकीरति जगमें होय। कुल कलंक लागे अब मोय।

अरु दूजो नाहीं इसवार। सरव नाशहै कष्ट अपार ॥ ४६ ॥

ऐसे भयकर आकुल थाय। मन विचार इस भांति कराय ॥

श्रीयदत्त बाणिक इक जान। याको मित्र सुहे अधिकान ४७

तिस घर गर्भवती निज नार। छोड़ चलो पुत्री ले लार।

भाग कुसंभी नगरी गयो। छिपकरके तहां रहतो भयो ॥४८॥

दुर्जन संग सदा दुख मूल। ताके ढिग नहिं रहिये भूल।

निज गृह तज देशान्तर जाय। तो पण ह्यांते सुख अधिकाय४९

दोहा

या अन्तर ऋषिराज दो, आये तिसही ग्राम।

शिवजु गुप्त मुनिगुप्त शुभ, हैं तिनके इह नाम ॥५०॥

चारित्र करी मण्डित प्रभू, सहत बहुत उपवास ।
श्रीयदत्त वाणिक गृहे, आये गुणकी रास ॥५१॥

अडिल्ल

सो कल्याण निमित्त चाव चित धारके ।
पगगाहें जुग साधु सबै भ्रम टारके ॥
सम्पतिको भंडार दुःखटारन यही ।
जगत मांहिं अति सार अन्न दीनों सही ॥ ५२॥
ताकरि पुन्य उपायो वाने अति घनो ।
तिस पीछे इक कारन भयो सोही सुनो ॥
धन श्रीगर्भवती लखि लघु मुनिराज जी ।
सब कुटुम्ब ते रहित महा दुखदायजी ॥ ५३ ॥

सवैया इकतीसा

परघर रहने थकी भयोहै जो दुख अपार आभूषण आदिक रहित उदासीन है। जैसे खोटेकवि केरी काज दुखदाई होत, तैसे गर्भ पीड़ित सो आपदाकीदासी है ॥ जैसे इसे देखकर लघुमुनि तिसवार बड़े मुनि रायसेती पूछो सुखरासी है। खो महाराज याने किये कौन पाप घोर कौन जीव याके गर्भ आयो सुखनासी है ॥५४॥

दोहा

ऐसे वच सुन शिव धनी, ज्ञान नेत्र धारन्त ।
श्रीजिनेंद्र कहतेभये, सप्त तत्व सुखवन्त ।५५॥
तिन जानन को अति निपुण, ऐसे मुनि शिव गुप्त ।
कहत भये मुनि गुप्त तें, ज्ञान तलीने उक्त ॥५६॥

सवैया

वृथा वच ऐसे मत कहो अब साधु तुम यह केते दिनमांहि बसु सुख पावेगी । पुन्यके उदयतें राजमान बलवान अति ऐसो सुत जनसब दुःखको भगावेगी । धरमको धोरी बाल विश्वम्भर

नरपाल तासुकी सुताजो इह नारी कहलावेगी ॥ ऐसे कहे बैन साध सुन धनश्रीय तब मनमाहिं जानी अब विपति नसावेगी ॥ ५७ ॥

दोहा

यही वचन श्रीदत्त सुन, मनमें बहु दुख पाय ।
दुष्ट बुद्धि पापिष्ट अति, निज ग्रह तिष्टो जाय ॥५८॥

सोरठा

होनहार जो बाल, तासु सहन को दुःख यह ।
बगुलेवत तत्काल, कारन नित हेरा करे ॥५९॥

पद्धड़ी छंद

दुरजन जन विन कारन अयान । सज्जन जनतें बहुवैर ठान ।
अब एही धनश्री सेठ नार । सुत जयो पुन्यको पुंज सार ।६०।
परसूत दुःख ते है अचेत । मूर्छा आई नहिं रही चेत ।
तब यह पापी श्रीदत्त थाय । ऐसे बच प्रकटाकिये सुनाय ६१॥
हूवो धनश्रीके मृतक बाल । ऐसे कह बुलवायो चन्डाल ।
खोटी बुध धारक चित मलीन । मारनको बालक सौंप दीन ६२
जे बैरीजे जगमें बिख्यात । तेभी शिशुकी नहिं करत घात ॥
हा कष्ट बड़ो जगमें दिखात । दुरजन अहिवत् क्या नहिंकरात ६३
जे मात गले शिशु रूपवन्त । मारन थानक पहुंचो तुरन्त ॥
इम दीस देखकर है दयाल । जीवतही तज आयो सुबाल ॥६४॥

दोहा

इस अन्तर श्रीदत्तको, भगनी पति तहां आय ।
ग्वाल थकी वृतान्त सुनि, तिस बालक ढिग जाय ।६५।
देख्यो बालक रूपवर, मानों दुती मयंक ।
गौपुत्र ताडिये खड़े, शिला सोय पर जंक ॥ ६६ ।

भानु समान जु बाल लखि, लीनों गोद उठाय।
पुत्र रहित थो इन्द्रदत्त, भयो सुखी अधिकाय ॥६७॥

चौपाई

अपने पुत्र समान निहार। निज नारी ते बचन उचार॥
हे राधे तू सुन चित लाय। गूढ़ गरभथो तुम सुखदाय ॥६३॥
सो इह पुत्र भयो बड़भाग। ले पालो तुमकर अनुराग॥
ऐसे कह नारी कर दियो। सुत उत्साह नगरमें कियो॥ ६६॥
पूरब पुन्य उदय तिस थाय। तहां बैरीकी कौन बसाय॥
आपद सम्पत होय रसाल। दुख होवे सुख में तत्काल॥७०॥
इस अन्तर श्रीदत्त अयान। बालकको बृतान्त सुजान।
इन्द्रदत्त के घर तव आय। कपट रूप हित बहुत जनाय।७१।
अपनी भगिनी ते इह बात। कहत भयो इह हर्षित गात।
भाग्यवानहै यह तव बाल। मम गृह इस युत चल तत्काल ७२
वहांही वृद्धि होयगी सही। कपट रूप इम बातें कही॥
तबही लेय गयो निज धाम। बहन युक्त तासुत अभिराम।७३।
जेजन दुष्ट चित्त अघमोर। मनमें और बचन कछु और॥
कायाते कछु औरहि करे। ठगने में चतुराई धरे॥७४॥
ऐसे इह श्रीदत्त मलीन। शिशु मारनकी इच्छा कीन॥
पहिले तव चण्डाल बुलाय। कहत भयो याको ले जाय॥७५॥
शीघ्र हतो तुम याके प्रान। निर्दय मन इम बचन बखान॥
सो मातंग लेयकर गयो। रूप देख करुणा में भयो॥ ७६॥

दोहा

एक गुफा ढिग जायकर, उत्तम वृक्ष निहार।
सरिता वहै सुहावनी, तातट बालक डार॥ ७७॥
दयावान मातंग है, हने न बालक प्रान।
निज घर आये डारकर, बाल रहो तिह थान॥७८॥

पद्धड़ी

गुणपाल पुत्र अति पुन्यवान। तहां एक गोप आयो सुजान।
अभिराम नाम ताको निहार। ताने अचरज देख्यो अपार ॥७९॥
गौवनके थनते दुग्ध धार। स्वयमेव कसे आनन्द कार ॥
जिमि धाय हस्तमें बालहोत। तिस थनते चीरझरो बहोत ॥८०॥
सो इह गोपाल निहार येम। फिर शिशु मुख देख्यो कंजजेम।
सो संध्याको निज धाम आय। गोबिन्द गोपको सब सुनाय ८१
सो सुनकरके आश्चर्यवान। इह गोपवती चित हर्ष ठान।
तिसठाम जाय सुत सम्य निहार। लाकर सौंप्यो तियकर मझार ८२
पालो सुसुनिन्द्रा हर्ष लीन। धन कीर्त्ति नाम प्रकटो प्रवीन ॥
बहु प्रीति सहित तिस तात मात। हितधारे वृद्धि करैं सुगात।८३

सवैया

कैसा इह बाल रूप गोपनैन कंज सम ताहि विकसावन को अमृत समान है। सर्व देह लच्चण पूरण विराज मान अद्भुत प्रीति उपजावै गुणवान है। रूप काम के समान प्रभा जु मयंक मान तेज उदय भानवत जन सुख दान है। ऐसो द्युतिवन्त बाल धर्म जाके सदा नाल वृद्धि होत गोप गेह पुन्य को निधान है ॥ ८४ ॥

दोहा

एकै दिन श्रीदत्त अब, दुष्ट चित्त अधिकाय।
धिरत हेत घर गोप के, आयो चित उमगाय ॥८५॥
इस बालक को देखकर, सब वृतान्त इह जान।
कहत भयो गोविन्दतें, सुनियो ग्वाल सुजान ॥८६॥

चौपाई

मेरे घरमें है कछु काज। इस बालक कूं भेजूं आज ॥

कागज लिखकर देहुं तुरन्त । आज्ञादेवो अबै महन्त ॥८७॥
सिद्धातम गोविन्द गुवाल । कहतेही भेज्यो तत्काल ॥
जे जन दुष्ट चित्त अधिकाय । तिनको भेद न जान्यो जाय ॥८८॥
तब पापी कागज करलीन । ऐसे अच्चर लिखे मलीन ॥
इह बालक बलवन्त अपार । हम कुल तरुको है चयकार ॥८६॥
प्रजलतकाल अगन सम जान । धन कीरति उज्जल गुणखान ॥
याहि पकड़ियो ममबच मान । मूसलते हनियो इहप्रान ॥६०॥
ब्रह्मनाम सुतको इहबात । लिखकर दीनो बालक हात ॥
कंठ बांधकर चलो तुरंत । इह बालक अतिही बलवन्त ।६१।
चलत चलत पहुंचो गुणरास । उज्जैनी नमरीके पास ॥
मारग खेद निवारन हेत । आम्र तले सोयो सु अचेत ॥ ६२ ॥
या अन्तर इक कारन भयो । गणका बाग चलत चितठयो ॥
सब परिवार संगले बाम । जूंटे पुष्प बढ़ाये दाम ॥ ६३ ॥
अति चतुराई धाई सोय । नाम मदन सेन्या तिस जोय ॥
तरु सहकार तलै सोवन्त । बालक लखो महा दुतिवन्त ।६४।
पूरव जन्म कियो उपकार । ताकर उपजो मोह अपार ॥
फेर लखो ताकंठ मझार । कागज लेख सहित तियबार ।६५।
जतन थकी खोलो तत्काल । बांच लेख जानो सब हाल ॥
जानो सेठ महा दुटभाव । तब इन कीनो और उपाव ॥ ६६ ॥

दोहा

ताके अच्चर मेटियो कर चतुराई सार ।
चखुते सारंग सुत लियो, लता कलमकर धार ॥ ६७ ॥
ता मांहीं अत्तर लिखे, इह विधि भ्रांति निवार ।
ताको वरनन अब सुनो, पुन्य महा हितकार ॥ ६८ ॥

चौपाई।

सेठ औरते लिखियो येम । सुन मेरी नारी जुत येम ॥
जो प्यारो मोहे जाने नार । तो यह कीजो काम अवार ॥९९॥
इह बालक धन कीरत नाम । रूपवान अरु अति बलधाम ॥
मुझ आये पहिलेही जान । कन्या श्री यमती गुणवान ।१००।
दान मानकर दीजो ब्याह । याकी साथ सहित उत्साह ॥
ऐसा लिखकर गणका तबै । याके कंठ बांधियो जबै ॥ १ ॥
तिस अंतर धन कीरत जाग । सेठ धाम पहुंचो बड़भाग ॥
सेठ भाम अरु सुतको जोय । कागज तिनकर दीनो सोय ।२।
तातें बाचतही परमान । याको दीनो कन्या दान ॥
जे हैं पुन्यवान अधिकार । तिनको सुख है कष्ट मझार ॥३॥

दोहा

अब धन कीरति की सबै, बात सुनी श्री दत्त ।
ताही दिन घरको चलो, अति व्याकुल ह्वै चित्त ॥ ४ ॥
एक पुरुष चंडी भवन, दीनों इन बैठाय ।
जो आवे निसि पूजने, तू हनियो तिस काय ॥ ५ ॥

चौपाई

इमि कहकर निज आयोधाम । तनुजा पतिते कह्यो ललाम ॥
यह हमरे कुलकी है रीत । रात्रि समय चंडी गृह मीत ॥६॥
उड़द बाल लेके कर जाय । कीर काकको देय खुवाय ॥
इमि कह रक्त वस्त्रमें धार । देकर कहि जावो इहवार ॥ ७ ॥
उत्सव सुन धन कीरत बाल । कहत भयो जाऊं तत्काल ॥
सुसरे करते लेपट लाल । आरज चित्त चलो दर हाल ॥ ८ ॥
नगर बाह्य अंधियारी रात । नाम महाबल नारी भ्रात ॥
पेख इसे बोलो सुन बैन । कहां आज हो तुम इस रैन ॥९॥

तब इह कहत भयो इम बात। आज्ञा दई तुम्हारे तात ॥
कात्यायनी सुरी बिकराल। ताको भेट देहु इह हाल ॥ १० ॥
सो मैं जाऊं तिसके धाम। और नहीं मेरो कछु काम ॥
तब याको सालो हरषाय। कहत भयो तू निज घर जाय ।११।
मैं जाऊंगो चंडी थान। तब धन कीरत बच्यो जान ॥
तुमरो तात करेगो रोष। तुम मति जावो हे गुण कोष ॥१२॥

दोहा।

तो पणभी जातो भयो, चंडी के स्थान।
धन कीरति निराविघ्न तब, आयो घर बुधवान ॥ १३ ॥
गयो वेग चंडी भवन, नाम महा बल जोय।
तब उस नर ने शीघ्र ही, मारो अति से सोय ॥ १४ ॥

छप्पय

जिस के पूरब पुन्य उदै होवे अधिकाई।
काल रूप विकराल अगन जल सम हो जाई ॥
वारिध हो थल रूप शत्रु हो मित्र समाना।
हालाहल जो जहर होत सो सुधा प्रमाना ॥
अरु होवे आपद सम्पदा, विघन उलट सुख विस्तरे।
तातें सुर शिव बीज यह, पुन्य करो गुर उच्चरे ॥ १५ ॥
कैसो है यह पुन्य दुख नाशक पहिचानो।
वरनो श्री जिन चन्द्र तहां इम भेद बखानो ॥
अर्चा भगवत तनी दान पात्र को दीजे।
व्रत जु शील उपवास आद बहु विध सों कीजे ॥
सो या प्रकार इस धर्म को, भव्य जीव हिरदे धरो।
अनुकम्पा सब जन नये, कर के अघतम को हरो ॥१६॥

पायता

इस अन्तर अब सुन भाई । पापी श्रीदत अन्याई ॥
निजपुत्र दुःख में भीनों । अपनो चित व्याकुल कीनों ॥१७॥
एकान्त बिशाखा नारी । तासों इम बात उचारी ॥
हे प्यारी अब सुन मेरी । मोह सुतकी पीड़ घनेरी ॥ १८ ॥
यह धन कीरति जो थाई । मम कुल नाशक दुखदाई ॥
सो क्योंकर मारो जावे । जब मो चित साता पावे ॥ १९ ॥
हमरे घरमें तिष्ठन्तो । यह बैरी अति बलवन्तो ॥
तब बोली कह सेठानी । अब नाथ सुनों मुझ बानी ॥ २० ॥
तुम बृद्ध भये अधिकाई । यातें सब बुद्धि नसाई ॥
मैं करूं बेग उपकारी । ऐसे इन गिरा उचारी ॥ २१ ॥

दोहा

ऐसे कह निज नाथ कों, धीरज बहुत बंधाय ।
मोदक जहर तने किये, और दिन दो भाय ॥ २२ ॥
पाप विषय पंडित महा, नार विशाखा येह ।
पुत्री से कहती भई, तू सुनले गुणगेह ॥ २३ ॥
सुता समाने स्वेत बहु, मोदक अति सुखदाय ॥
अपने पतिको दीजिये, ऐसो बैन कहाय ॥ २४ ॥
स्याम वरन लाडू जुए, तू दीजो निज तात ।
इम कह सरिता मह गई, मंजनको हरखात ॥ २५ ॥

पद्धड़ी ।

पीछे श्रीमति कीनों बिचार । जगमें जानो जो वस्तु सार ॥
जो पिता जोग देनी तुरन्त । यह बात कहैं सबही महन्त ।२६।
माताके चितकी नाहिं जान । निज पिता भक्ति हिरदे सुठान ॥
लाडू सुबिपर्जय तब खुलाय । श्रीदत्त मुयो बहु दुःखपाय ॥२७॥

जगमाहिं कुकर्मी जीव जोय। तिनके कल्याण न होत कोय॥
फिर भाम बिशाखा आनि तेह। भरतार बिना लखि शून्यगेह २८
तहँ शोक किये तिन बार बार। अरु रुदन सहित कीनों पुकार॥
फिर पुत्रीने इम बच बखान। खोटी चेष्टा तुझ तात ठान॥२९॥
सो अपनो वंश कियो बिनाश। अब सुखसों तिष्ठो तुम अवाश॥
ऐसे इन्द्रानी जुत नरिन्द्र। तैसे तुम सुख भुगतो करिंद्र।३०।

दोहा

यूं असीस बहु देय के, वोभी मोदक खाय।
जयपुर को जाती भई, जैसी मति गति पाय॥ ३१॥

सोरठा

दुष्ट मती जो थाय, परको विघन करे घने।
ते भी दुख को पाय, खोटी गतिको जात हैं॥ ३२॥

अडिल्ल

अब धन कीरति सुखसों तिष्ठत है सही।
पंच आपदा पुन्य थकी सो तिन जई॥
एक दिना विश्वम्भर नामानर पती।
याको रूप निहारो जैसे रति पती॥ ३३॥
अपने मन में बहु आश्चर्य जु आन के।
निज पुत्री दीनों इस को हित ठान के॥
नाना विधि के रतन वस्त्र ले सार जी।
दियो दात जो बहुत महाहित धार जी॥ ३४॥

दोहा।

दई सेठ पदवी तबै, भई सु जैजै कार।
जैन धरम परसादतें, होवे शिव पदसार॥ ३५॥

चौपाई

पुत्र प्रताप सुनों गुणमाल । ताढिग कोसांबी गुणमाल ॥
आयो उज्जैनी दुतिवन्त । धन कीरति सों मिलो तुरन्त ॥ ३६॥
पिता पुत्र तिष्ठे सुखपाय । सम्पति भोगैं पुन्य बसाय ॥
पांचों इन्द्रीके सुख जेह । भोगत नाना बिधि के तेह ॥ ३७॥
सुखकी याकर धर्म रसाल । सावधान पाले अघटाल ॥
श्री जिन चरन कमल सेवन्त । बहु बिधि भक्ति हियेधारन्त ।३८।
ज्ञान मई सम्पत कर लीन । पात्र दान देवें परवीन ॥
पर उपकारी इह बड़भाग । भव्य जीवसों अति अनुराग ॥ ३९॥
बहुत कहनते कौन बिचार । सब इह पुन्य तनों फलसार ॥
जग जन चित्त करत आनन्द । भोगे बहुत काल सुख वृन्द।४०।
इस अन्तर अब इक दिन जान । गुण उज्जल गुण पाल महान ॥
मुनि बन्दनको कियो बिचार । पुत्र मित्र संगले परिवार ।४१।

चौपाई

नाम अनंग सेना सहित, वेश्याभी संग लेय ।
बनमें पहुंचे जायके, चितमें हर्ष धरेय ॥ ४२ ॥

सोरठा

तीन जगत हितकार, नाम जसोधर मुनि भले ।
बन्दे भक्ति सुधार, फेर ब्रह्म कियो सेठ ने ॥ ४३ ॥

गीता छन्द

हे नाथ यह धन कीर्ति मो सुत कौन पूरब पुन कियो ।
जाते सु बालक वय विषय इन सर्व आपद जे लियो ॥
धनवान कीरतवान दाता कला दुति गुणवान है ।
चित दया धारे भोगता अरु महा शर्म निधान है ॥ ४४ ॥
सो आप हे भगवान अबही कहन लायक हो सही ।

मेरे जु इच्छा सुनो केरी एम कह कर चुप गही ॥
तब चार ज्ञान धरे मुनीश्वर दया वारिध इम कही ।
हे वणिकपति सुन चित्त देकर सब चरित्र कहूं सही ॥ ४५ ॥

चौपाई

देश अवंती है अभिराम । तामें एक सिरीष सुग्राम ॥
तावासी धींवर मृग सेन । सुने जसोधर मुनिके बैन ॥ ४६ ॥
लियो तहां इकव्रत बड़भाग । ताको पालो जुत अनुराग ॥
तिसही पुन्य तने परभाय । यह धन कीरति उपजो आय ।४७।
इसकी जो थी घंटा नार । सो निदान करके तन छार ॥
श्रीमती उपजी इह आय । याकी भाम भई सुख दाय ॥ ४८ ॥
अरु वो मच्छ तनो कर जतन । भई अनंग सेना इह आन ॥
पर उपकार करनमें लीन । इह गणिका अतिही परवीन ।४९।
अहो सेठ सुन चित्त लगाय । बरत अहिंसा फल इहथाय ॥
जे जन जैनधर्म चितधरें । तिनके सबही बांछित सरें ॥५०॥
ऐसे सुनकर बचन रसाल । सुरशिव दायक सुन गुणपाल ॥
श्री जिनवरको धर्म महान । हिरदयमें धारो अधिकान । ५१ ।

दोहा

धन कीरति अरु श्री मती, तीजी वेश्या थाय ।
निज भव सुन ताही समय, जाती सुमरन पाय ॥ ५२ ॥
मन वच काय लगाय के, चित में राग सुधार ।
जानो फल इह करमको, फिर इम कियो विचार । ५३ ।

ढाल मेघ कुमार की

अब धन कीरति सेठने जी, श्री मुनि को सिरनाय । भगवत दीक्षा तब लई जी, केश लौंच कराय ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ॥ ५४ ॥

निरमल तप बहु बिधि किये जी तीनों काल मझार। भव्य जीव बोधे घने जी यश फैलो अधिकार ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ॥

श्रीमति जिनवर चंद्रने जी भाषा धर्म अबाध। ताकी परभावन करीजी, रत्नत्रय आराध ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार ५६

अन्त सलेखन बिध धरीजी प्रायोगमन सुठान। सरवारथ सिद्धी गये जी तजके तबही प्रान ॥ सयाने धर्म बड़ो संसार।

पहिले भव इक मच्छको जी छोड़ो पंच सुबार। ता फल कर सुख पाइयो जी आपद पंच निवार ॥ सयाने, धर्म बड़ो संसार

दोहा

ताके पीछे श्री मती, अरगण का हित धार।
यथा योग्य सिक्षा लई, सब तें मोह निवार ॥ ६० ॥
अपने अपने भाव तें, पायो स्वर्ग सुथान।
जैन धर्म परसाद तें, होवे सब कल्यान ॥ ६१ ॥

काव्य

ऐसे श्री जिन सूत्र विषय भाषी हितकारी।
कथा अहिंसा बरततनी भवि जनको प्यारी ॥
सो बरनी संक्षेप पथ की मैं ने सुखदाई।
करि हैं सब कल्याण भव्य गण हिरदे भाई ॥ ६२ ॥
कथा धर्म अनुराग धार तुच्छ बुध से बरनी।
नाना बिधि के हर्ष सुःख उपजावन धरनी॥
बिघन समूह अपार तास नासन को बन्ही।
हिंसा त्यागो बेग भव्य जे हैं शुभ मन्ही ॥ ६३ ॥

छप्पय

तिलक भूत शोभायमान श्री मूल संघवर।
कुन्द कुन्द भए तांस भए मल्ल भूषण गुरु ॥

ज्ञानायुध निसपन्न सिंहनंदी मुनि जानो ।
भवि जनको संसार सिन्धु तारन हिय आनो ॥
ऐसे श्री आचार्य गुरु, नमस्कार तिनको करूं ।
नंदो विरदो चिरकाल लों, चरनाम्बुज में हिय धरूं ।६४।

काव्य

कथा कोष इह ग्रन्थ देव बानी में जो है ।
ताही के अनुसार कियो भाषा में सो है ॥
बन्द प्रबन्ध मंझार भव्य सुनिये हितकारी ।
बखतावर अरु रतन कहो तुछ बुध अनुसारी ॥ ६५ ॥

इती श्री आराधनासार कथा कोष विषय अहिंसा धर्म मृग सेन धींवर ने पालो ताकी कथा समाप्तम् ।

अथ राजा वसुने असत्य बचन को सत्य

कहा ताकी कथा प्रारम्भः नं० २६

। मंगलाचरण ॥ काव्य ।

सुर असुरन कर पूजनीक तिन चरन भले हैं ।
ऐसे श्री अरिहन्त सकल जिन करम दले हैं ।
जग जन के हित कार तिनों को सीस नमाऊं ।
असत बचन नृप बसु कह्यो तिस कथा सुनाऊं ॥ १ ॥

दोहा

पुरी स्वस्तिकावती मैं, विश्वा वसु भूपाल ।
श्रीय मती रानी भली, पुत्र बसू अरिसाल ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा

तार्हीं नगरी मझार उपाध्याय एक सार, नाम खीर कन्द वसु महा बुधवान है । उजल स्वभाव धरे विप्रवर माहिं सिरे जिन पद सेवन में अलि की समान है । जैन धर्म कृया में रहे

साबधान नित, भव्य जन सीखन को देत विद्या दान है।
ताके स्वस्ति मती नार शील की धरन हार, पति सेव करन में
सदा साबधान है ॥ ३ ॥

चौपाई

तिन दोनों के कर्म बसाय। पापी पुत्र भयो दुख दाय।
परवत नाम तासु को जान। खोटे कर्म विषय रति ठान॥ ४ ॥
एक बिदेशी बिप्र महन्त। नारद नाम महा गुण वन्त।
मद बर्जित जिन पदको भक्त। विद्या पढ़न विषय अनुरक्त ॥ ५ ॥
सोभी आयो तिस ही थान। खीर कन्द के ढिग बुधबान।
अरुबसु नृपको सुत तहँ आय। पढ़ै सु विद्या चित्त लगाय ॥ ६ ॥
खीर कन्द सुत परबत जेह। और बसू दूजो गिन लेह।
तीजो नारद विप्र उदार। ये त्रिय शास्त्र पढ़ें हित धार ॥ ७ ॥
बसु नारद पढ़ भये प्रवीन। भूमृत ने नाहिं विद्या लीन।
इकदिन स्वस्ति मती दुखपाय। निज पतितें इमि गिरासुनाय ॥८॥
तुमने अपने सुतको सही। विद्या दान नरंचक दई।
खीर कन्द बोलो सुन नार। तेरो सुत मूरख अधिकार ॥ ९ ॥
पापातम कछु नाहिं भनन्त। हे प्यारी कीजे किह भन्त।
इस बिसवास उपावन काज। कीनों पाठक एक इलाज ॥ १० ॥
तीनों शिष्य बुलवाये पास। ऐसे बात कही गुण रास।
कौडी ले वानक पथ जाय। तीनों पेट भरो सुखपाय ॥ ११ ॥
फिर बराट काले गुण रास। जल्दी आयो मेरे पास।
इमि सुन तीनों चले उमाहिं। बानक पथमें न्यारे जाहिं ॥ १२ ॥

दोहा

जा वानककी हाट पर, पापी परवत जोय।
कोड़ी के लेकर चने, खाकर हर्षित होय ॥ १३ ॥

खीली आयो धाम में, जबही गुरुके पास।
बिना पुन्य नहिं पाइये, जगमें बुद्धि बिलास ॥ १४ ॥
बसु नारद दोनों जने, लीने चने जु मोल।
बिर्था और बाजार में, बेचत भये सु डोल ॥ १५ ॥
तामें नफ़ा उठायके, भोजन कर ले दाम।
गुरुपे आयो बेगही, वे दोनो गुण धाम ॥ १६ ॥

चौपाई

फिर पिट्ठी के अजा बनाय। तीनों कर दीने समझाय।
जहँ कोई देखे नहिं आन। तहँ तुम छेदो इनके कान ॥ १७ ॥
ऐसे गुरु कह भेजे तबै। आज्ञा पाय चले ये जबै।
परबत देख सुन्य अस्थान। छेदे अजा तनें जो कान ॥ १८ ॥
अरु वे दोनों बनमें जाय। करत बिचार फिरे अधिकाय।
अहो चन्द सूरज ग्रह देव। व्यन्तर पशु पंच्छी बहु भेव ॥ १९ ॥
मुनिज्ञानी देखत हैं सदा। हमतो कान न छेदें कदा ॥
इमि बिचारकर गुरु पे आय। नमन कियो बहु सीस नवाय ।२०।
अपनी अपनी बुद्धि समान। गुरु ढिग तीनों कियो बखान ॥
पाठक इह लिखके बिरतन्त। दोनों शिष जाने बुधिवन्त ॥

दोहा

नारी ते सबही चरित, बिप्र कहो तिह काल।
हे प्यारी तू देखले, अपने सुत की चाल ॥
एक दिना बसु राज सुत, कीनो कछुक बिगार।
तब गुरु मारन कारने, करमें लकड़ी धार ॥

पायता।

तब स्वस्तमती गुरु नारी। छुड़वाय दियो तिहबारी ॥
जब बसू चित्त हरषायो। कछु मांगो येव सुनायो ॥ २४ ॥

कह स्वस्तमती सुन लीजे । बर मांगों जब मोहि दीजे ।
वसु कहो सु यही करूंहूं । तेरो बच हिरदे धरूं हूं । २५ ।
इस अन्तर इक दिन जानो । अध्यापक इह बुधिवानो ।
उठके कानन को धाये । तीनो शिष अङ्ग सु आये ॥ २६ ॥
तहँ निर्मल भूमि निहारी । चारों तिष्ठे हितधारी ॥
बृहदारण शास्त्र बखाने । क्रीड़ा बहु बिधि चित ठाने ॥२७॥

दोहा

तिसही अस्थानक विषय, जुग चारन मुनि चन्द ।
तिष्ठे थे स्वाध्याय कर, तीन लोक सुख कन्द ॥ २८ ॥

पद्धड़ी छन्द

इन चारों को भणते निहार। बहु विनय सहित लघु मुनि उचार॥
हो स्वामी इह चारों पुमान । देखो किंधि वेद करें बखान ॥ २९ ॥
बोले तब दीरघ मुनि दयाल । बहु ज्ञान नैत्र धारे विशाल ॥
इन वेद जीवके माहिं जान । दो उरधगतीके पात्र मान ॥३०॥
तब खीर कन्द बुधवान सार । मुनिबच सुन हिरदे माहिंधार ॥
तीनों शिष बिदाकिये तुरंत । मुनिराज पास पहुंचो महंत ।३१।
बहु नमन ठानकर प्रश्नकीन । को स्वर्ग नर्क जावे प्रवीन ॥
तब काम जई मुनिराज एम । याने भाषे धरके सुपेम ॥

सोरठा

सुन विप्र नकुलचन्द, इक आपाको जान ले ।
दुति नारद गुण वृन्द, ऊंची गति पावे सही ॥ ३२ ॥
वसु परबत दुखकार, तेरे शिष्य अपान हैं ।
सो निश्चय उरधार, नर्क जाय बहु दुख सहैं ॥ ३४ ॥

चौपाई

इमि बच सुन यह विप्र महान । गुरुके बचननमें हित ठान ॥
पुत्र दुःखतें व्याकुल चित्त । द्वै विचार निन कियो पवित्त ।३५।

काल अनंत जाय तहंकीक। तौ भी मुनिवच नहीं अलीक॥
इमि चितवन करके तब येह। बुध आकर आयो निज गेह।३६।
इस अंतर बिश्वाबसु राय। मन बैराग विषय तिनलाय॥
अपने बसु सुतको दे राज। आपगये बनमें तप काज॥३७॥
अब इह वसु नृपराज करंत। पाले परजा हर्ष धरंत॥
एकै दिन क्रीडाके हेत। बनमें पहुंचो हरष समेत॥ ३८ ॥
तहं नभते पक्षीगण आय। भूमें पड़ते देखे राय॥
तब आश्चर्यवान है भूप। इहां कोइ कारन है जो अनूप।३६।
इमि बिचार सामायक लेह। हेत परीक्षा छोड़ो तेह॥
सो वह बान पड़ो भू आय। तब नरेश उस थानक जाय।४०।
सब बृतान्त लखिके बुधवंत। देख्यो थम्भ एक दुतिवंत॥
स्वेत वरन नभमें सोहंत। पक्षी भूमजे नाहि लखंत॥ ४१ ॥
लगकर गिरे सु भूमि मझार। यह अचरज देखो तिहबार॥
तब बसु गूढ़ खंभको लाय। ताके पाये चार बनाय॥ ४२ ॥
ता ऊपर सिंहासन थाय। सभा विषय बैठा सो आय॥
मायाधरके एक कहाय। मैं सतबादी हूं अधिकाय॥ ४३ ॥
सत्य तनें जानो परसाद। मुझ बिष्टर है अधर अबाध॥
इम ठग विद्या बहु परकाश। जन जाने तिष्ठो आकाश।४४।
जे मायाचारी ठग मूढ़। कोको कारज करे न गूढ़॥
सबही करें दया चित्त नांहि। सोतो निंद नीच गति जांहि।४५।
अब वह खीर कंद बड़भाग। सम दृष्टी जिन मतसे राग॥
तज संसार तनें जु उपाध। गुण उज्जल हूवो तब साध।४६।
स्वर्ग मोक्ष दाता तपसार। जिन वांछितकर बारम्बार॥
अंत सन्यास मरनको ठान। पायो भयो सुस्वर्ग विमान।४७।

दोहा

या अन्तर इनको तनुज, पापी परवत सोय ॥
पिता पट्ट बैठत भयो, चित अजीविका जोय ॥ ४८ ॥

काव्य

अब नारद प्रभु चरन कमलको भ्रमरस मानो ।
बुद्धिवान जसवान कियो परदेश पयानो ॥
बहुत दिनन के बीच सर्व शास्त्रनको ज्ञाता ।
आयो पर्वत पास जान गुरु सुत सुख दाता ॥ ४६ ॥

चौपाई

इक दिन परवत वेद भनंत । तामें शब्द सुएम कहंत ॥
अजैर्यष्टव्यं उचार । ताको अर्थ कह्यो दुखकार ॥ ५० ॥
अजा नाम बकरेको जान । ताकर यज्ञ कह्यो इस थान ॥
पापातम ऐसे बरनयो । तब नारदने बच इमि चयो ॥ ५१ ॥
हे भ्राता सुन चित्त लगाय । याको अर्थ जु इह बिध थाय ॥
तीन वर्षके उपजे धान । ताको होम कह्यो भगवान ॥ ५२ ॥
उपाध्यायने हमको कही । याको अर्थसु इस बिध सही ॥
अहो मूढ़ तू चित्त बिचार । तू ने क्या नहिं पढो लबार ।५३।
फिरभी पापी भू मृत कही । यज्ञ अजाको करनो सही ॥
जाकी गति खोटी दुखदाय । सांच बातको झूठ कहाय ॥ ५४ ॥
बहुत बिवाद भयो इन माहि । निज बच टेव तजे कोई नाहि ॥
तब परतिज्ञा इह बिध कीन । जो कोइ झूठो होय मलीन ॥५५॥
तिस रसना छेदे बसुराय । ऐसे कह तिष्ठे घर जाय ॥
स्वस्तिमती परबतकी माय । अपने सुततें इमि बतलाय ॥५६॥
पाप रूप कीनों व्याख्यान । खोटी मतिते चितमें ठान ॥
तेरो तात महा शुभ चित्त । जैन धर्म सेवे थो नित्त ॥ ५७ ॥

उसने थान तनौं यज्ञ कहो । ते भाखो सो कम्पियन चयो ॥
पुन्यरूप ताकी थी बुद्ध । ताको सुत तू भयो कुबुद्ध ॥ ५८ ॥

दोहा

फिर निज सुतको मोहधर, गई वसू नृप पास ।
कहत भई मुझवर अबै, दीजे हो गुणरास ॥५९॥
कहो वसूले शीघ्रही, जो तुम्हरे चित चाय ।
स्वास्तिमती कहती भई, सुन अब तू नरराय ॥ ६० ॥
मेरो सुत जिह विध कहे, सो कीजो परमान ।
तब बसुने आरे करी, गई सु अपने थान ॥६१॥
आप पाप जे करत हैं, औरन पास करात ।
जैसे अहि परतन डसे, जहर रूप हो जात ॥६२॥

छप्पय

प्रातकालके विषय गये दोऊ बाद चित्त धर ।
पापातम वसुराय थयो सिंहासन ऊपर ॥ ६३ ॥
तासों नारद कही सुनों राजा चित लाई ।
अजा शब्दको अर्थ कहो जिमि गुरु बतलाई ॥६४॥
इह पापी जानत तऊ, असत रूप कहतो भयो ।
परवतके वच सत्यहैं, यही विधी गुरुने चयो ॥६५॥

कड़खा छन्द

झूठ परचराडते टूट पायो गये फटी अवनी भयो शोर भारी ।
कराठ पर्यन्त नृप गडो भूमि मधितबै जबै नारद गिरा इमिउचारी॥
अहो अवसी सुनो आप वसुरायजी भनो गुरु पाससो कहो सारी।
वृथा नाति नीचको जात्रो मत आपही बोल वच झूठबहु पापकारी ६६
हासि कहो विप्रने सभा सबही सुन पापके उदय वसु फेर भाखी ।
[illegible] परवत गोई सांच जानो वही अपने वचनकी टेक राखी ॥

गड़े ताही समय आप अवनी विषय सबैजन देखकर भये साखी
नरक सप्तम गयो दुख बहु विध सहो दुष्टको चित्त जिमिहोत माखी ॥

दोहा

पापी जनजे जगत में, दुष्ट चित्त अधिकाय ।
झूंठ बोल इहँ दुख सहें, मरके दुरगति जाय ॥ ६८ ॥

सोरठा

प्राण जाय तत्कार, तौ असत्य नहिं भाषियो ।
सत्य जगत में सार, भव्य जीव भाशे सदा ॥ ६९ ॥

पायता

तब पुरजन मिल अधिकाई । पर्वतखर दियो चढ़ाई ।
याको अति दुष्ट निहारो । फिर दीनो देश निकारो ॥७०॥
फिर सज्जन मिल हितकारी । नारदकी भक्ति सुधारी ।
याको पूजो अधिकाई । मुखते अस्तुति बहु गाई ॥ ७१ ॥

दोहा

वह नारद अतिही चतुर, जैन धर्म परवीन ।
शकल शास्त्र जाने सुधी, जग यश तिन बहु लीन ॥७२॥

चौपाई

गिरतट नगरी तनों नरेश । होत भयो यह जेम दिनेश ।
बहुत काल भोगे सुख सार । पूजा दान बरत चित धार ॥७३॥
फिर बैराग्य भावना भाय । जिन दीक्षा लीनी बन जाय ॥
करके तप भयन सम्बोध । रत्न त्रय पाले सुध बोध ॥ ७४ ॥
भगवत चरन कमलको दास । जगत सुःखकी त्यागी आस ॥
सर्वारथ सिध गयो तुरन्त । तहां सुःख भोगे बहु भन्त ॥७५॥
श्री जिनवर के धर्म प्रसाद । भव सुख पावे क्यों न अबाद ॥
तातें जैन धर्म चित धरो । मिथ्या मतको त्यागन करो ॥७६॥

दोहा

श्रीमान जो विप्र कुल, मणि समान दीपन्त।
नारद सत्पुरुषन विषय, मंगल करो अनन्त ॥७७॥
सर्व कुवादी जीतियो, मद वर्जित बुधवान।
जिन मत अम्बुध वृद्धिकी, करे सोच दसमान ॥७८॥
ऐसे नारदको नमें, कवि बहु विधि सिर नाय ॥
मंगल कारक हूजिये, दीजे दुःख नसाय ॥ ७९ ॥
वसु नारद परवत तनी, कथा सु पूरन कीन ॥
झूंठ दोष जगमें बुरो, सो सब लखो प्रवीन ॥८०॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयअनृतदोषराजावसुनेकियो ताकी कथा समाप्तम्

चोरीदोष श्रीभूतकी कथा प्रारंभः २७

मंगलाचरण चौपाई।

सुर असुरन कर पूजित चर्न। बरदायक है दुख अघ हर्न।
ऐसो श्रीअरिहन्त महान। तिनको नमिहूं भक्ति सुठान ॥१॥
चोरी दोष तनी जो कथा। बरनूं श्रीअभूतकी यथा।
नगर सिंहपुर एक बसाय। सिंहसेन धरमातम राय ॥ २ ॥
रामदत्ता नारी तिस गेह। सब कारजमें चतुर सुतेह।
राजाको प्रोहत श्रीयभूत। मायचार विषय मजबूत ॥ ३ ॥
सतवादी कहलावे सोय। याको कपट लखे नहिं कोय।
इस अन्तर इक नगर निहार। पदमखंड नामा सुखकार ४॥
तहां सुमित्र सेठ बुधिवान। नार सुमित्रा ताघर जान।
तिन दोनोंके पुन्य संजोग। उदंधिदत्त सुत भयो मनोग ५ ॥
सो यह चलो वनजके काज। भरलीने तिन वहुत जहाज।
मारग चलत सिंहपुर आय। श्रीयभूततें मिलो सुजाय ॥ ६ ॥

पांच रतन सौंपे हरषाय। जब चाहूं तब लेऊं आय।
इम कह रतनद्वीप को चलो। द्रब्य उपावन करमन भलो ७॥

दोहा।

सो यह द्रव्य उपाय कर, आवेथो निज धाम।
पाप उदै प्रोहन फटे, बहु जन मरे ललाम॥ ८॥
एक यही बचतो भयो, आयो सागर तीर।
पुन्य बिना इस लोकमें, कुछ नहीं संपति बीर॥९॥

पद्धड़ी

अब बारिधदत बहु कष्ट पाय। आयो हरिपुरमें धन गवांय।
श्रीभूत पिरोहित पास जेह, लेऊंगो अपने रतनतेह॥ १०॥
ऐसे मनमांहीं कर विचार, तिस पास चलो चित हर्षधार।
तब सत्यघोष याकू निहार, सब जन आगे इमिवचउचार ११।
जन सुनो सुनी मैं बात आज, किसी बानकके फाटे जहाज।
सो भयो बावरो धन बिनाश, अब आवेगो मेरे ढ़ुपास॥१२॥
वह करहै मोको नमस्कार, फिर मांगे गो सो रतन सार।
ऐसे कह तिष्ठो दुष्ट भाय, इतने में बारिधदत्त आय॥ १३॥
कर नमन सुमांगे रतन पांच, देश्रीयभूत तू भनत सांच।
तब सत्यघोष सुनिके तुरन्त, सबजन आगे इहिविधि कहन्त१४॥
मैं बातकही सो भई तेह। तुम देखलेहु निज नेत्र येह।
इम कहकर गलमें हाथ डार। निज घरसेती दीनों निकार १५

दोहा

जे धन लोभी जगत में, पापी दुष्ट अज्ञान।
निन्द कर्म क्या क्या नहीं, सबही करें अयान॥१६॥

पायता

तब वारिधदत्त विचारी। यह पापी ठग है भारी।

मेरे निज रतन न दीने । याने निश्चय कर छीने ॥ १७ ॥
या विधि नगरी में सारे । ऐसे बहु बचन उचारे ।
अरु राज महल ढिग जावे । निसमाहिं पुकार करावे ॥१८॥
इम बीतगये षटमासा । कोई नहिं करे दिलासा ।
इक दिन रानी मन आई । राजा से गिरा सुनाई ॥ १९ ॥
हे देव बनिक इह जानो । गहलो किह भांति पिछानो ।
यह बचन एक उच्चारे । सो गहलापन किम धारे ॥ २० ॥
तब नृपति कहो सुनलीजे । तुमही इस न्याय करीजे ।
रानी कर तब चतुराई । प्रोहतको लियो बुलाई ॥ २१ ॥
जूवाको खेल मचायो । पूछो तुमने क्या खायो ।
तब विप्र वृतान्त सुनायो । मैं येही आज सो खायो ॥ २२ ॥

दोहा

तब रानी निज बुद्धिकर, लीनी धाय बुलाय ।
निपुनमती तिस नाम है, ताको बहु समझाय ॥२३॥
भेजी रतन सु लैनको, विप्र बधू के पास ।
सहन[illegible]गी भोजन तणी, दे बताय गुण रास ॥२४॥

चौपाई

[illegible] ता[illegible] । ताने रतन दिये नहिं तेह ।
क्षीणभाया कर [illegible] [illegible]त । जीत मुद्रिका लई तुरन्त ॥२५॥
फिर भेजी प्रौहतानी पास । तौभी रतन दिये नाहिं तास ।
फेर जनेऊ लीनो जीत । धाय हाथ भेजो कर नीत ॥ २६ ॥
विप्र नार तब मनमें धार । दीने पांचो रतन निहार ।
ले रानी राजाके पास । दिखलाये चितधर हुल्लास ॥२७॥
बुद्धवान नरपति तिह बार । लेकर रतन थाल मधि धार ।
तामें और मंगाय मिलाय । वाणिकको तब लियो बुलाय २८

दोहा

इमि नरिन्द्र कहतोभयो, सुन गहले इह बार ।
अपने रतन पिछान कर, लेओ अबै निकार ॥२९॥
तबहि सुबुद्धी सेठ सुत, अपने रतन निहार ।
बहुत मोलके छोड़कर लीनें वही निकार ॥३०॥
सत्पुरुषनको पर दरब, दीखैं जहर समान ।
सो कदाचि नहिं करत हैं, अंगीकार महान ॥ ३१ ॥

सोरठा

सिंहसेन नर राय, चित्त विषय हरषाय कैं ।
कर बाणिकपति थाह, दई सेठ पदवी बिमल ॥३२॥
राजा फिर रिसठान, पूछो अधिकारीन ते ।
रतन चोर दुज जान, ताको कया कीजे अबै ॥३३॥

चौपाई

तब मंत्री बोले सुन ईस । मल्ल मुष्ट इह खावे तीस ।
अथवा सर्बस देय अबार । कया गोबर खावे निरधार ॥३४॥
यही तीन दण्ड इस जोग । दीने नरपति देखत लोग ।
तबै मुओ पापी दुख पाय । आरत ध्यान हियेमें लाय ॥३५॥
धन लम्पट इह बिप्र अयान । मकैर दुर्गति कियो पयान ।
ऐसे जान भव्य जन जेह । हिरदै ब्रत धारो तुम एह ॥३६॥
कोड़ो कष्टनकी दातार । चोरी छोड़ देहु तत्कार ।
भगवत भाषित धर्म रसाल । ताको पालो सब श्रम टाल ३७
अब श्रीप्रभाचन्द्र मुझदेव । सो कल्याण करो बहु भेव ।
असुर सुरेन्द्र खगेन्द्र नरेश । तिनकर पूजनीक परमेश ॥३८॥
भगवत भगति तजत नहिं कदा । संसय हरन बचन इम सदा ।
तिनकर भाषे बचन महान । हिरदे धारो सुखकी खान ॥३९॥

दोहा

ब्रह्मनेमी व्रत कर भई, पूरन कथा विशाल ।
भव्य जीव बांचो सुनो, तज चोरी अघ टाल ॥ ४०॥

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयभोगीदोषमें श्रीयभूतकी कथा समाप्त ।

॥ अथ नीलीबाईकी कथा प्रारम्भ: ॥

मंगलाचरण ॥ सोरठा ।

हितकारी भगवान, तिनके चरन सरोज को ।
नमन करूं धर ध्यान, कथा शीलकी अब कहूं ॥ १ ॥
अणुव्रत चौथो येह, नीली बाईने धरो ।
दृढ़ पालो धर नेह, कष्ट भयो पर नहिं चिगी ॥ २ ॥

चौपाई

यही भरतक्षेत्र जु पवित्र । तामधि लाड देश इक मित्र ।
श्रीजिनवर को धरम उदार । फैल रहो तिस देश मझार ॥३॥
तहँ भृगु कच्छ नगर इक खरो । शुभ वस्तुन करके शुभभरो ।
तामें राज करे वसुपाल । परजापाले सब भ्रम टाल ॥४॥
श्रीजिनदत्त नाम तिस सेठ । कोई बणिक तिस आन नमेट ।
श्रीजिनचन्द्र चरनको दास । जिन दत्ता सेठानी तास ॥ ५ ॥
पण्डित दान करनमें लीन । ग्रह कारज में अति परवीन ।
तिन दोनोंके पुत्री भई । नीली बाई संज्ञा दई ॥ ६ ॥
शीलवान गुणवन्त अपार । रूप अधिक निज तनमें धार ।
बसे वनिक इक ताही ठौर । नष्ट बुद्धि मिथ्याती और ॥ ७ ॥
नाम समुद्रदत्त है तेह । सागर दत्ता नारी गेह ।
सागर दत्त भयो सुत आन । प्रिय दत्त तिसमित्र सुजान ॥८॥
इस अन्तर नीली हरषाय । अलंकार मण्डित अधिकाय ।
जिन मन्दिर में गई तुरन्त । पूजे श्रीजिनवर अरहन्त ॥ ९ ॥

कायोत्सर्ग धरे बड़ भाग । निरमलध्यान विजय चितपाग ।
वह सागरदत्त ताहि निहार । बिहवल चित्तभयो तिह बार १०॥
ऐसे कहतभयो निज बैन । क्या यह नागदत्ता सुखदैन ।
वा इह तनुजा सुरकी होय । अथवा खग पुत्री है कोय ॥११॥
भली काय सो भाग धरन्त । याके रूप तनो नहिं अन्त ।
तब प्रियेदत्त मित्र इम कही । तुम क्या याको जानत नहीं १२
श्रीजिनदत्त सेठ गुणगेह । तासु सुता इह सुन्दरदेह ।
मित्रतने इह सुनके बैन । सकल अंग में व्यापो मैन ॥ १३ ॥
मोह मिलेगो किह विधि येह । चिन्ता भूत लगो तिह देह ।
ताकर तन दुर्बल अधिकाय । होतभयो कछु नाहिं सुहाय १४

दोहा

हरि लक्ष्मीके बसि भयो, गंगा बसि महादेव ।
ब्रह्मा लखिकै उरबसी, भयो कामबस येव ॥ १५ ॥
कौन कौन इस दर्पने, बस कीने नहिं राय ।
सब कोई जीतत भयो, याकी कौन चलाय ॥१६॥
अपने सुतको दुखित लख, कहे वारिधदत आय ।
अहो पुत्र जिन दत्तजी, जैनी है अधिकाय ॥ १७ ॥
श्रावक बिन अपनी सुता, काहूको नहिं देय ।
इमि कह दीनो तात सुत, कियो कपट सो येह ॥ १८ ॥

पद्धडी

ह्वै दोनो जिन मत मांहि लीन । ऊपरतें अंतरता मलीन ॥
तब जिन दत्त इनते हेत ठान । श्रावक किरिमामें निपुन जान१९
अपनी पुत्री ब्याही तुरंत । अंबुज समानसो चख धरंत ॥
यह लेकर आये आपगेह । फिर बौध धरम सूंकर सनेह । २० ।
यह बात युक्तहै जग मंझार । पापीबुध धरम विषय लधार ॥
जैसे घोटकके उदर मांहि । भोजन जु खीर ठहरात नाहि ।२१।

दोहा

ऐसो सुन जिनदत्तजी, कीनो दुख अधिकार ।
बांधन कर के मैं ठगो, फिर मनयेम विचार ॥ २२ ॥

चौपाई

मेरी पुत्री नीली सार । मानो पड़ी सो कूप मझार ॥
अथवा काल ग्रसी है सोय । दुरजन संग दुखमें अवलोय ।२३।
अब नीली उन धाम मझार । होत भई पतिप्राण अधार ॥
जुदे गेहमें रहे सो नित्त । जिनवर धरम धरे निज चित्त ।२४।
नित जिनवरकी पूजा करे । पात्र दान देकर अघ हरे ॥
बरत शील उपवास करंत । धर्मी जनसे नेह धरंत ॥ २५ ॥
इमि तिष्ठै निज पतिके धाम । नितप्रति जिनवर भजे ललाम ॥
ऐसे सुसर देखके सबै । मन में येम बिचारी तबै ॥ २६ ॥
यह नीली सुन बंधक बैन । दर्शन करत यहै मत जैन ॥
तब इन कही सुता सुनलेह । बोधनको तू भोजन देह ॥२७॥
तिस पीछे भोजनके हेत । आये बौध बहुत जिम प्रेत ॥
तब नीलीने लिये बिठाय । निज दासीको येम कहाय ॥२८॥
लाओ इनके पैरातनी । जोड़ी तुच्छ कतरके घनी ॥
वह तब लाई आज्ञा पाय । मीठे भोजन माहि रलाय ॥२९॥
भोजन करवायो तिहबार । तबपे खाय गये तस्कार ॥
कर अहार वे चले तुरंत । मन मांही बहु हर्ष धरंत ॥ ३० ॥

दोहा

निज पनही देखी नही, मन तब भये उदास ।
नीली से पूंछत भये, वे बंधक अघ रास ॥ ३१ ॥
तब नीली बाई कही, तुम हो ज्ञान विधान ।
अपने चित्त विचार लो, पनही जिस अस्थान ॥ ३२ ॥

वे बोले हम को नहीं, हैगो इतनो ज्ञान ।
कहत भई तुम उदर में, देखो बमन सुठान ॥ ३३ ॥

चौपाई

कीनी बमन जु काहू जने । देखे टूक पगरखी तने ॥
मान भङ्ग बौंधनको देख । ससुर आयकर क्रोध विशेष ।३४।
सागर दत्तकी भगनी जेह । महापाप चित धारत तेह ॥
नीली ऊपरकर बहु रोस । और पुरुषको लायो दोष । ३५ ।
साध जननको दोष लगाय।पापी जन चित भय न धराय॥
सारे प्रकट करी इह भाय । इह कुशीलनी है अधिकाय ।३६।
ऐसो दोष सुनों जिन कान। इह गुण ज्वाला कियो प्रवान॥
जब इन दोष नसैगो सही । करूं अहार अन्यथा नही ।३७।
इमि बिचारकर जिन गृहजाय । प्रभु पद कंजनमें हरषाय॥
दो प्रकार धर कर सन्यास । खड़ी मेरुवत जो गुण रास ।३८।
अहो बात इह सत्य निहार । जे सत्पुरुष जगत में सार ॥
तिनपै पड़े आपदा आय । सुख दुख विषै हजारो भाय ।३९।
नर सुरेश पूजित भगवान । तिनही को वे धारत ध्यान ॥
याके शील तने परसाद । नगर देवता जुत अहलाद । ४० ।
आई रैन विषै इस पास । नीली बाई ते बच भास ॥
सती शिरोमणि सुन बड़भाग। निज प्राणनको कर मत त्याग ४१
अपने चितमें धर हुल्लास । मैं अबही जाऊं नृप पास ॥
वा मुखया पर जानन सबै । तिनको सुपनो देहूं अबै । ४२ ।

दोहा

गोपुर सब इस नगर के, कीलूंगी इह बार ।
और बचन ऐसें कहूं, सुनो सबै चित्त धार ॥ ४३ ॥

अडिल

महासतीकोबायोपद जबही लगे। तबही खुले कपाट सबै जन दुख

भगे। यही बात तुम सुनो तबै वां जाईयो। अपनो बायों पद अंगुष्ठ लगाईयो ॥ ४४ ॥

इमि कह कर वह सुरी गई तत छिन सही। सबको सुपनो दे कपाट कीलत भई ॥ होत प्रभात लखे कीले गोपुर सबै नृप आदिक ने सुपनों याद कियो तबै ॥ ४५ ॥

सवैया इकतीसा

तब नर नायक बिचार मन माहिं ठान लीनी सब नर नारी नगर बुलायके। गोपुर तो बारबार तिनको छुवाय पद, खुले न कपाट तब रहे बिलखायके ॥ तुच्छ पुन्नी जन पास होय न महान काज एही बात सत्त सब जाने चितलायके। पीछे नीली को बुलाय शील कर शोभे काय पद के लगत गये पाट खुलवाय के ॥ ४६ ॥

चौपाई

जैसे बैद सलाई ठान। नेत्र मैल खोवे अधिकान ॥
त्यों नीली बाई सुखदाय। पगकर लिये कपाट खुलाय ॥४७॥
याको शील भयो परकास। नरपति आदिक जन लख तास ॥
हर्षित होय वस्त्र बहु आन। पूजन भये अधिक थुति ठान ।४८।
ऐसे मुखते वचन कहात। जैवन्ती हूजो तू मात।
जिन चरनाम्बुज जगमें सार। भ्रमरी सम तू सेवन हार ॥४९॥
तुमरो शील महातम जोय। किस करके वरनन तिस होय ॥
ऐसे कहवे पुरके लोग। श्री जिन धर्म गहो जु मनोग ॥५०॥

छप्पय

श्री जिनवर जग चन्द्र सदा जय वन्त जगत में।
देवइन्द्र नागेन्द्र वन्द नित रहैं भगत में ॥
तिनकी गिरा महान करे सब जग उपकारी।

तिसमें बरनो शील श्रेष्ठ पालो हितकारी ॥
सो कैसो यह बरत है, सुखको मूल सुहावनो।
याते कीरति जग बढ़े, भूल न इसे गंवावनो ॥ ५१ ॥

सोरठा

ऐसो श्री भगवान, दीजे सुर शिव लच्छमी ।
कीजे सब कल्याण, पूरन कथा प्रबन्ध में ॥ ५२ ॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय शील प्रभावनामैं नीलीबाई की शील गुण कथा समाप्तम् ।

अथ कडार पिंगकी कुशीलदोषकथा २८

मंगलाचरण ॥ छप्पय ॥

जगत मांहि जे हैं पवित्र अरिहन्त जिनेश्वर ।
बहुरि भारती माय खिरी जो प्रभु आनन कर ॥
तीजे गुरु निर ग्रन्थ इन्होंको सीस नवाऊं ।
ब्रह्मचर्य में दोष कियो तिस कथा सुनाऊं ॥
जिस नाम कडार जु पिंग है, तिनने यह व्रतखण्ड कियो ।
ताकर इसही लोक में, निन्दनीक होतो भयो ॥ १ ॥

पायता

नगरी कम्पिला जानों । नरसिंह नृपति बुधवानो ।
सो धर्म कर्म चतुराई । तायुत महाराज कराई ॥ २ ॥
तिस सुमति सु मंत्री सोहे । बुध धरे विप्र जे जोहे ।
तिसके धन श्री है नारी । प्रानों सेती अति प्यारी ॥ ३ ॥
तिन दोनों के भयो आई । इक पुत्र महा दुखदाई ।
कडार पिंग तिस नामा । सो है अघही को धामा ॥ ४ ॥

दोहरा ।

ताही नगरी के विषय, सुधी सेठ धर्मज्ञ ।
नाम कुंबेर जु दत्त है, करे दान बहु यज्ञ ॥५॥

तिसके पूरब पुन्यतें, पंडित रूप निधान।
प्रियग सुन्दरी नामबर, नारी भई सु आन ॥६॥

चौपाई

मन्त्री सुत पापी बुध बिना। सेठ त्रिया देखी इक दिना ॥
गुणाकर मंडित सुन्दर काय। लखि विहबल हूवो अधिकाय ॥७॥
जाकर तिष्ठो अपने धाम। छिन छिन ताको पीडे काम ॥
तब इस माता आ इह पास। पूछो सुत क्यों भयो उदास ।८।
तब याने लज्जा तज दीन। मातासे बच कहे मलीन ॥
सेठ बधू जो मिलि है आय। तो मेरो जीवन है माय ॥ ९ ॥
काम अंधको है धिक्कार। लज्जा भयकर रहित विचार ॥
काज अकाज गिने नहिं जेह। शुभ अरु अशुभ लखे नहिं तेह १०
एह बच सुन मंत्रीकी तिया। निजपतिते सबही कह दिया ॥
तब मंत्री सुनके तिय बैन। जानो पुत्र सतायो मैन ॥ ११ ॥
इमि विचार करके पापिष्ठ। कपट सहित बुध धारी नष्ट ॥
राजा नरसिंहके जा पास। करत भयो इह बिध अरदास ।१२।
अहो नाथ मणि द्वीप मंझार। खग किंजल्प रहे अधिकार ॥
सो तुमनेभी सुन नरेश। पक्षी धरे प्रभाव विशेष ॥ १३ ॥
महा व्याधि दुर भिक्ष न सात। रोगमरी अरु भय सब जात ॥
सो मंगायलो देव तुरन्त। उन आये सुख है बहु भन्त ॥१४॥

दोहा

इस कारज में अति निपुन, सेठ महा बुधिवान ॥
भेजो कुबेर सुदत्तको, वह लावे पहिचान ॥ १५ ॥
सो राजा मूरख अधिक, मंत्री बच हिय धार ॥
भेजो उसही सेठको, खग लेने तत्कार ॥ १६ ॥

चौपाई

तब श्रेष्ठी निर्मल धीमान। निज रानीते भाषी आन ॥

हम जावें खग लेने काज। राजा हुकम दियो ए आज ।१७।
तब तिय बोली बचन रसाल। अहो ठगाये तुम गुण माल ॥
मंत्री सुत यह कियो समाज। मेरे शील खण्डने काज ॥१८॥
तातें तुम मत जावो स्वाम। यहां ही तिष्ठो अपने धाम ॥
ऐसे नारी बचन उचार। सुनके सेठ हिये निज धार ॥१९॥
भले महूरत मांहि जहाज। बिदा किये खग लाने काज ॥
छिपकर निज गृह आप सुआय। तिष्ठत भयो महा सुख पाय।२०।
तब मंत्रीको तनुज अयान। पापी कामातुर अधिकान ॥
आयो सेठानीके गेह। मन मांहीं बहु धार सनेह ॥ २१ ॥
तब प्रियङ्गु सुन्दरी नार। चित्त मांहि बहु बिधि बुधधार ॥
भिष्टाधाम बिषय सो जाय। गुण बरजित परजंक बिछाय ॥२२॥
स्वेत बस्त्र ताऊपर डार। कोइन जाने ताकी सार ॥
ता ऊपर याको बैठाय। भिष्टा बिषय पड़ो सो जाय ॥ २३ ॥
जैसे नार कि नरक मझार। पड़त बेदना सहे अपार ॥
त्यों कडार पिंग दुख लीन। होत भयो इह महा मलीन ॥२४॥

सोरठा

कारागार मझार, राखो तिस षट मास लग।
इतने प्रोहन सार, फिरकर आये नगरमें ॥२५॥
तब नाना परकार, पक्षी अरु परलेय के।
मन्त्री सुत तन धार, कालो मुख तिसको कियो ॥२६॥
हाथ पांव बंधवाय, काष्ठ पिंजरे में धरो।
सब जन येम कहाय, खग ल्यायो यह सेठजी ॥२७॥

चौपाई

नरपति आगे सेठ जु आय। लेय कडार पिंग दिखलाय ॥
यह पक्षी ल्यायो महाराज। अद्भुत रतन द्वीपतें आज ॥ २८॥

इसको नार सु है कंजल्य । ऐसे खग दीखत हैं अल्प ॥
इमि हांसी करके बहुभाय । नृपसों सब वृत्तान्त सुनाय ॥२९॥
तब नरसिंह नाम भूपाल । क्रोध धरो हिरदे विकराल ॥
मंत्री सुतको गधे चढ़ाय । फेर दण्ड दीनों बहु भाय ॥३०॥
तब मंत्री सुनकर दुर ध्यान । पावत भयो शुभ्र को थान ॥
जे परनारी सेवें मूढ़ । ते निश्चय दुख पावें गूढ़ ॥३१॥
याते जे बुधजन हैं सार । त्यागन करो पराई नार ॥
जे भविजन जिन वर भावन्त । पालो शील सदा गुणवन्त ॥३२॥
ते पद पद पर पूजित होय । पाये संशय नाहीं कोय ॥
जे मन वचन कायको लाय । पाले शील सदा सुखदाय ॥३३॥
सुरशिव सुख पावें ते सही । ऐसे जिन वानी में कही ॥
अति पवित्र यह शील महान । देवइन्द्र याकी थुत ठान ॥३४॥

दोहा

इस विधि सुख दुख देखके, कीजे चित्त विचार ।
जामें सुख यश विस्तरे, सोई करनो सार ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय ब्रह्मचर्य दोषमें कड़ार
पिङ्गकी कथा समाप्तम् ॥ २९ ॥

अथ देवरतरक्ताशीलदोषीकीकथा ३०

मंगलाचरण ॥ दोहा ॥

तीन जगत अर्चेत चरन, केवल नेत्र धरन्त ।
ऐसे श्री अरिहन्त को, नमकर कथा भनन्त ॥१॥

चौपाई ।

नगर विनीताको भूपाल । नाम देवरत रूप विशाल ॥
ताके रक्ता नारी जान । सो सौभाग्य रूपकी खान ॥ २ ॥
यह नरिंद्र लम्पट अतिरक्त । सदा काल नारी आशक्त ॥

शत्रु आयपुर घेर जु लीन । नारी रति चिन्ता नहिं कीन ॥३॥
धर्म अर्थ वर्जित जे लोग । न्याय रहित भोगत हैं भोग ॥
ते दुखही के भाजन होय । यामें संशय नाहीं कोय ॥ ४ ॥
तब याके जो हैं परधान । तिन विचारकर इह विधि ठान ॥
याको सुत सुन्दर जयसैन । ताको राज दियो सुख दैन ॥ ५ ॥
काढ़ो नारी युक्त नरेश । सो चलियो तजके निज देश ॥
चलत चलत काननमें आय । तियको क्षुधा लगी अधिकाय ॥६॥
तबै देवरत दुखधर चित्त । जानत भयो पड़ी जु बिपत्त ॥
तब काहूको लेकर मांस । देकर पूर दई तिस आस ॥ ७ ॥
फिर नारीको लागी प्यास । जल नहिं दीखत तहँ पास ॥
तब मूरख नरपति तत्काल । भुजा तनों ओणित जु निकाल ।८।
महा औषधी तामधि डाल । पानी रूप कियो तिह काल ॥
निज नारीको दियो पिलाय । मोह ठगो क्या क्या न कराय ॥९॥

दोहा

ता पीछे जमुना निकट, तरु तल नारी त्याग ।
आप गयो काहू नगर, भोजन लेने काज ॥१०॥

पद्धड़ी

तिस पीछे रक्तानार सोय । इक बाड़ी सींचन हार जोय ॥
सो हुतो पांगुलो अति विरूप । अनुराग करे वह मधुररूप ।११।
तिसते रक्ता इम बच बखान । हे पंग मोह इच्छो सुजान ॥
तब वह बोल्यो अतिही डरात । तुम्ह सुभट शिरोमणि प्राणनाथ१२
जब रक्ता पापन इम विचार । वाकोतो अबही देहुं मार ॥
तू किंचित भय मनमें न ठान । मोहि अंगीकारकरो महान ।१३।
जे दुराचार नारी धरंत । क्या क्या पातिक नाहीं करंत ॥
इतनेमें भोजन ले नरेश । आयो चित नेह धरे विशेष ॥ १४ ॥

दोहा

तब रक्ता चित्त कुटिल अति, दुराचार की खान ।
मायाधर निज चित्त में, रुदन कियो अधिकान ॥ १५ ॥
तब राजा बोलत भयो, क्यों रोवत बर नार ।
बोली रजू सिला भई, मैं पापन इह बार ॥ १६ ॥

चौपाई

सालगिरह दिन तुमरी आज । अब मोसूं किम बने सुकाज ॥
पुन्य बिना प्राणी है जेह । शोक उदधिमें डूबत तेह । १७ ।
ऐसे वच सुन विषयाशक्त । कहत भयो सुनि नारी रक्त ॥
एहो शोकको कारज कौन । तुम होते इह बनही भौन ।१८।
फिर बोली इह पापन नार । किंचितको करहूं इह बार ॥
ऐसे कह पुष्पनकी माल । घोट गला डालो तत्काल । १९ ।
जमनाके तट लाय तुरंत । डार दियो तामधि निज कंत ॥
फेर दुष्ट मन पंगुले पास । खोटो कर्म कियो अघरास ॥ २० ॥

दोहा

या अन्तर नृप देवरत, कोई करम पसाय ।
सरिता में वह तो थको, बाहर निकसो आय ॥

चौपाई

नगरी नाम मंगला जोय । तरु उद्यान तहां रहो सोय ॥
श्रीवर्द्धन नृप नगरी बीच । पुत्र रहित पाई तिन मीच । २२ ।
ताके मंत्री बुद्ध निधान । सब मिलके इन कियो प्रमान ॥
पट्ट बंध नामा गज राज । जिसको लावे मस्तक आज ।२३।
सोई राज करे इस पुरी । कुंभ देय छोड़ो तब करी ॥
जहां देवरत सूतो गाय । तहँ करिंद यह पहुंचो आय ॥ २४ ॥
याको करवायो स्नान । पीठ चढ़ाय लियो बुधवान ॥

नगर विषय लायो तत्काल । उत्सवयुत कीनों नरपाल ।२५।
ताके पूरब पुन्य उद्योत । तिसको आपर संपति होत ॥
तातें श्री जिन भाषित पुन्न । सेवो भवि चिसशे मत छिन्न ।२६।
पुन्य नाम किसको है मीत । श्री जिनचंद्र चरनमें प्रीत ॥
पात्र दान व्रत ओषधि ठान । पुन्य नाम याहीको जान ।२७।
अरु नरधीश देवरत सोय । राज करे मन हर्षित होय ॥
ऐसो चितमें धारो सदा । नारी मुख देखो नहि कदा ॥ २८ ॥
जो दुरजनके पास ठगाय । सो सज्जनतें भी न पत्याय ॥
जैसे दागो पयते कोय । छाछ फूंकफर पीवे सोय ॥ २९ ॥
अब यह नरपति दान करंत । सबही जनको दे अत्यंत ॥
ऐसो राज करे हित ठान ॥३०॥ पगा पंगुलेको देय न दान ।
इस अंतर अब रक्तानार । खारी माथि पंगलोको धार ॥
अपने मस्तक लियो चढ़ाय । सब जन आगे येम कहाय ।३१।

दोहा

मेरे तात अरु मात ने, दीनी या संग व्याहि ।
सो सेवा याकी करूं, ऐसे गूढ़ कहाहि ॥ ३२ ॥
नगर ग्राम आदिक विषय, भिक्षा मांगे जोय ।
सती कहावे आपको, धरे कुटिल मन सोय ॥ ३३ ॥

सोरठा

मांगत मांगत नार, आई नगरी मङ्गला ।
सब जन अचरज धार, इन दोनों को देख के ॥३४ ॥

छंद चाल

जिस नारी चारित पसाये । ब्रह्मादिक बहुत ठगाये ।
तो मूरख जन अधिकाई । ठगते कहो कौन सिखाई ॥ ३५ ॥
दोऊ गान करें बहु भाये । नृप द्वार विषै सो आये ॥

तब द्वारपाल हरखाई । राजा से अरज सुनाई ॥ ३६ ॥
हो स्वामी सुन इह बारी । इक पंगु पुरुष अरु नारी ॥
बहु मीठे गान करन्ते । सब जन के चित्त हरन्ते ॥ ३७ ॥
सो सिंह पौल पे आये । ऐसे शुभ बचन सुनाये ॥
नृप सुन के इस की बानी । नहि देखो एम बखानी । ३८ ।
सब जन हठ कीनो भारी । देखो ही नृप इह बारी ॥
तब आडो पट करवायो । उन दोनों को बुलवायो ॥ ३९ ॥
निज नारी की मैं बानी । पहिचानी राय सु ज्ञानी ॥
तब कहत भयो मैं जानी । यह सती बड़ी अधिकानी । ४० ।

दोहा

यह कहकर बहु क्रोधधर, नृपने दई निकार ।
आप सुबुद्धि तासु में, चित बैराग सुधार ॥ ४१ ॥
अपने सुत जैसेनको, कीनों तहां बुलाय ।
या नगरीको तासुको, राजदियो हरषाय ॥ ४२ ॥

कवित्त

शीघ्र करी पूजा जिनवरकी भलीभक्तिते चित हरषाय । फिर सूरज मुनिवर ढिग जाकर दीक्षा लीनी मनवच काय ॥ जिन-वर भाषित तप बहु कीनों निज आतममें चित्त लगाय । दे उपदेश भव्य गण तारे अन्त सन्यास धरो सुखदाय ॥४३॥

दोहा

कर सुलेखणा मरणको, पहुँचे स्वर्ग सुजाय ।
अधिक ऋद्धि अणमादिलह, पाई सुन्दर काय ४४॥

काव्य

निन्दनीक अरु दुष्ट चित्त दुखदायन नारी ।
ताको चरित अपार वेचरत लख तिहबारी ॥

इन्द्र धनुपवत देह, भोग लख दीक्षा धारी ।
वे मुनि सतमह में करो मंगल सुखकारी ॥२५॥
रक्तानारी की अवै पूरन कथा जुएह ।
लखकर भविजन मतकरो तियसेती अति नेह २६

इति श्रीआराधनासारकथाकोषविषय शीलदोषमें देवरतरक्ताकी
कथा समाप्तम्

अथ गोपावतीकी कथा प्रारम्भः ३१

मंगलाचरण ॥ अडिल्ल ॥

जगत पूज अरिहन्त सुखदाता सही ।
तिनको करूं प्रणाम सीस नाके मही ॥
सत्पुरुषन वैराग हेत वरनों कथा ।
गोपवती को चरित कहूं जिनवर यथा ॥ १ ॥

चौपाई

ग्राम पलाश विषै जिस धाम । ताको सिंहबलहै शुभ भाम ।
गोपवती ताके दुठ भाम । धारे कपट जुआठों जाम ॥ २ ॥
एकै दिन हरबल हरषाय । निज नारीते छिपकर जाय ।
पदम निखेट ग्राम में जाय । सिंहसेन तहँ एक रहाय ॥३॥
तिसकी कन्या रूप निधान । नाम सुभद्रा ताको जान ।
विध विवाहकी सबही ठान । व्याही हरबलने तिह थान ॥४॥
गोपवती सुन इह विरतन्त । क्रोध अनित तातन व्यापन्त ।
गई सुभद्रा गेह तुरन्त । माता ढिग देखी सोवन्त ॥ ५ ॥
दुष्ट चित्त इह तिस सिर काट । अपने घरकी लीनी बाट ।
हुवो सवेरो जब पव फाट । नारी सिर बिन देखी खाट ॥६॥
तबै सिंहबल दुखित गात । निज महमें आयो परभात ।
गोपवती मनमें हरखात । आव भगत कीनी बहु भांत ॥७॥

हरबलको नहिं रुचो अहार।
देतभई भोजन तब सार। हरबलको नहिं रुचो अहार।
जाके चित्तमें दुःख अपार। [illegible] ताको रुचो न भोजन बार ॥८॥
तब इह पापन उठ तत्काल। नार सुभद्र [illegible] ताको ले भाल।
थाल विषै दीनों तिन डाल। बोली अबतो भई रसाल ॥९॥
तब हरबल लख नारी सीस। डरो चित्तमें बिस्वा बीस।
यह तो राक्षसनी सी दीश। इम कहि भागो इह भट ईश १०
गोपवती नारी अति नीच। लागी पाछे दशन सो भींच।
भालो मारो पिय कटि बीच। तिस करताने पाई मीच ॥११॥
जे हैं चतुर पुरुष जगमाहिं। नारी चरित जुचित्त लखाहिं।
कहैं नहीं बिश्वास कराहिं। कामनते वे भिन्न रहाहिं ॥ १२ ॥

सोरठा

अब श्रीजिनवर चन्द्र, जैवन्ते बरतो सदा।
पूजे नर सुरवृन्द, तिनके चरन सरोजको ॥१३॥
मदन करी महमन्त, ताबस करनेको हरी।
भव दुख नाश करन्त, स्वर्ग मोक्ष दायक सदा १४
मुक्ति तिया भरतार, सांति करै सब जगत में।
मैं भाऊं इहबार, शान्त अर्थ हूजे प्रभू ॥ १५ ॥
सुनो अर्थ चितलाय, गोपवतीको चरित यह।
जो है सुखकी चाय, तिस विश्वास न कीजिये १६

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयगोपवती चरित कथा समाप्तम् ३१।

॥ अथ वीरवतीनारीकी कथा प्रारंभः ॥

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा ॥

मोक्ष सुख देनहार तीन जगत मांहिं सार वेद षट गुणाधार अतिही पवित्र है। ऐसे अरिहन्त देव सुर नर करैं सेव जन उपकार करनेको महामित्र है ॥ तिनको नवाय भाल कहूं अब अगटाल वीरवती नारी तनी कथा जो बिचित्र है। सुन सत्पुरुष

ताहि होय बैराग भाव करै निज शुद्धकाय देखके चरित्र है १।

दोहा

राज ग्रही नगरी विषय, सम्पति युत धन मित्र।
सेठानी है धारनी, धारे रूप विचित्र ॥ २ ॥
तिस सेठानी सेठ के, पुत्र भयो इक आय।
दत्तनाम ताको धरो, परियन जन सुखदाय ॥ ३ ॥
तिस अन्तर सम्पति सहित, नगर भूम यह और।
आनन्द नामा सेठ इक, बसे सुताही ठौर ॥ ४ ॥
मित्रवती तिस नार है, पति को वल्लभ जान।
वीरमती पुत्री भई, कुटिल चित्त दुख खान ॥ ५ ॥

चाल मेघकुमार की

इस अंतर अब दत्त ने जी, तिस ही नगर सुजाय । बीरवती परनत भयो जी, ब्याह तनी विधि पाय ॥ सयाने कर्म लिखो सो होय ॥ ६ ॥

जो अच्चर विधिना लिखे जी, ताहि न मेटे कोय । जाको जो सम्बन्ध हैजी, सोई प्रापत होय ॥ सयाने कर्मलिखो सो होय ।

ताही नगरी में बसे जी, तस्कर कला प्रवीन । नाम प्रचंड अंगार है जी, सब बिसनन में लीन ॥ सयाने नारी चरित अपार । ८ ।

बीरवती इह पापनीजी, तासोंभई असक्त। कुलकी कान गँवाय के जी, भोगकरे ह्वै रक्त ॥ सयाने नारी चरित अपार । ९ ।

एक दिना सुत सेठ को जी, बीरवती भरतार । रतनद्वीप जातो भयो जी, करने को व्यापार । सयाने उद्यमते सब होय ।

फिर कसाय उलटो फिरो जी, आवे थो निज गेह । पथ चलते ससुराल में जी, आये तिय के नेह ॥ सयाने काम महा दुखदाय । ११ ।

देतभई भोजन तब सार । हरबलको नहिं रुचो अहार ।
जाके चितमें दुःख अपार । ताको रुचो न भोजन बार ॥८॥
तब इह पापन उठ तत्काल । नार सुभद्राको ले भाल ।
थाल विषै दीनों तिन डाल । बोली अबतो भई रसाल ॥९॥
तब हरबल लख नारी सीस । डरो चित्तमें बिस्वा बीस ।
यह तो राचसनी सी दीश । इम कहि भागो इह भट ईश १०
गोपवती नारी अति नीच । लागी पाछे दशन सो भींच ।
भालो मारो पिय कटि बीच । तिस करताने पाई मीच ॥११॥
जे हैं चतुर पुरुष जगमाहिं । नारी चरित जुचित्त लखाहिं ।
कहैं नहीं विश्वास कराहिं । कामनते वे भिन्न रहाहिं ॥ १२ ॥

सोरठा

अब श्रीजिनवर चन्द्र, जैवन्ते बरतो सदा ।
पूजे नर सुरवृन्द, तिनके चरन सरोजको ॥१३॥
मदन करी महमन्त, ताबस करनेको हरी ।
भव दुख नाश करन्त, स्वर्ग मोक्ष दायक सदा १४
मुक्ति तिया भरतार, सांति करै सब जगत में ।
मैं भाऊं इहबार, शान्त अर्थ हूजे प्रभू ॥ १५ ॥
सुनो अर्थ चितलाय, गोपवतीको चरित यह ।
जो है सुखकी चाय, तिस विस्वास न कीजिये १६

इति श्रीआराधनासारकथाकोष विषयगोपवती चरित कथा समाप्तम् ३१ ।

॥ अथ वीरवतीनारीकी कथा प्रारंभः ॥

मंगलाचरण ॥ सवैया इकतीसा ॥

मोक्ष सुख दैनहार तीन जगत मांहिं सार वेद पट गुणाधार अतिही पवित्र है । ऐसे अरिहन्त देव सुर नर करें सेव जन उपकार करनेको महामित्र है ॥ तिनको नवाय भाल कहूं अब भ्रमटाल वीरवती नारी तनी कथा जो विचित्र है । सुन सत्पुरुष

सो इस पाप उदय भयो आय । तब पैड़ी पे गई डिगाय ॥
मरते तस्करने तिहवार । अधर गहे इस दशन मझार । २२ ।
होठ रह्यो तस्कर मुख मांहि । पड़ी भूमपे यह दुख पाहि ॥
फेर उठी यह साहस धार । पट मुख ढक चाली तत्कार । २३ ।

दोहा

अपने घरमें आय के, कीनों बहुत पुकार ।
अधर हमारो काटियो, इन पापी भरतार ॥ २४ ॥
जे नारी पर पुरुष रत, तेनिज कुल नाशन्त ।
दुखदाता कारज जिते क्या नहिं करे तुरन्त ॥२५॥

पद्धड़ी

तब ता घरके जनसर्व आय। राजा पै करी पुकार जाय ॥
नृप सुनके चित भयो रोसवन्त । बुलवायो दत्त तहां तुरन्त । २८ ।
मारनको हुकम दियो नरेश । इन काम बुरो कीनों विशेश ॥
तब चोर करी अतिही पुकार। जो अटवीतें आयोथो लार ।२६।
जब राजा पूछी सर्व बात । तस्करने चरित कियो बिख्यात ॥
यह सुनकर नृप आश्चर्य पाय। ताही छिनदत्त दियो छुड़ाय । ३० ।
उस नारीको बहु दण्ड दीन । पुर बाहर काढ़ दई मलीन ।
अरु दत्त जु पुन्य महान थाय। रच्छा कीनी तिन चोर आय ।३१।
इस लोक विषय जे पुन्यवान । तिनकी रच्छा सब करत आन ॥
जे भव्य जीवहैं जग मझार । अपने हियमें देखो बिचार । ३२ ।
इह नारी चरित अपार जेह । अत्यन्त भयानक कष्ट देह ॥
इमि लखिकर विषै तजो तुरंत । जो अपनो चित चाहो महन्त ।३३

सवैया इकतीसा

तेई मुनिराज धन कियो जिन वस मन भाषो जिनराज
सोई शील व्रत धारो है । मेघराय घटा प्रचण्ड तास नाशने

को सिंह ज्ञान ध्यान माहि रत सर्व अघ टारो है ॥ भवते विरक्त चित्त भव्य मन कंचन को करत विकाश रूप मार तंड प्यारो है । सोइ मुनिराज जग अंबुध में है जहाज करो कल्याण मम अब अधिकारो है ॥ ३४ ॥

दोहा

वीरवती नारी तनों, यह चरित्र अधिकार ।
याको सुन तिय नेह तज, जो चाहो सुख सार ॥३५॥

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय वीरवती के चरित्र की कथा समाप्तम् नम्बर ॥ ३२ ॥

अथ रायसुदत्तकीकथा प्रारम्भः नं० ३३

मंगलाचरण ॥ काव्य ॥

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र भमर चरनाम्बुज ध्यावैं ।
ऐसे श्री भगवान तिन्हैं हम सीस नवावैं ॥
राय सुदत्तकी कथा कहूँ अब चित्त लगाई ।
जिस सुनते सुख होय मोह नासे दुखदाई ॥१॥
नगर अयोध्या विषै सुदत राजा है भारी ।
ताके गृहके मध्य पांच सत सोहैं नारी ॥
तामें दो पटनार सती नामा एक जो है ।
महादेवी है द्वितिय सदा नृपको मन मोहे ॥२॥
भोग लीन भूपाल द्वारपालक बुलवायो ।
अपने वचन प्रकाश तासुको इम समझायो ।
जो कोई कारज नगर विषै होवे अति भारी ।
अथवा को मुनिराज इहां आवें अनगारी ॥३॥
तो मुझ कीजो खबर अन्यथा इहां मत आना ।
ऐसे कहकर हर्ष महल में कियो पयाना ॥

भोगे भोग अपार सदा अच्चन सुखकारी ।
सब सामग्री सार तासके धाम मझारी ॥४॥
एक दिना नृप पुन्य जोग इस मन्दिर माहीं ।
आये युग मुनिराय मास उपवास धराहीं ॥
दमदत नाम पवित्र धर्म रुच दूजो जानो ।
आये भोजन काज पौलियो लखि हरषानो ॥५॥

शीघ्र गयो नृप ढिग दरबान । सती नार तिष्ट तिह थान ॥
तिलक कटे थी भाल मझार । तबै बोलियो बचन उचार ॥६॥
हे राजन मो बच सुन लेह । देव इन्द्रकर पूजित जेह ।
ऐसे श्रीमुनिवर जुग नन्द । तुम मन्दिर आये सुखकन्द ॥७॥
द्वारपाल के ए सुन बैन । भूपति चित अति पायो चैन ॥
कहत भयो नारी ते एह । हे प्यारी मम बच सुन लेह । ८ ।
जब तक तिलक न सूखे भाल। तब तक मैं आऊं तत्काल ॥
श्री मुनिवरको भोजन देय। आऊं बेग नार सुन लेय ॥ ९ ॥
ऐसे कहकर गयो तुरन्त । युग मुनिवर थापे हरषन्त ।
नवधाभक्ति करी अधिकार । सातों गुणदाता के धार ॥१०॥
मुनिको उत्तम दीनो अन्न । ताकर नरपति पायो पुन्न ।
जे व्रत पूजा दान कराहिं । ते उत्तम श्रावक जगमाहिं ॥११॥
इनकर हीन जगत जन जेइ । फल वर्जित सम तरुहै सेह ।
तातैं मन बच कारि बहु भाय । दानदेहु निज शक्ति बसाय १२
भगवत पूजन नित प्रति करो । व्रत करके निज पातक हरो ।
याहीते सुख सम्पति होय । यामें संशय नाहीं कोय ॥ १३ ॥
तिसी समय नरपतिकी भाम । पट देवी जो सती तिस नाम।
ताने रोसधरो अधिकाय । मुनि निन्दा बहु भांति कराय १४॥
तबही पाप उदय भयो पुष्ट । हुवो उदम्बर तनमें कुष्ट ।
कोढ़ो कष्ट तनो दातार । व्यापो दुख वपुमें अधिकार ॥१५॥

सोरठा

एक जन्म भै दाय, हालाहल खानो भलो ।
मुनि निंदा जो कराय, भव भव में ते दुख लहैं ॥१६॥

छप्पय

जे मुनि दीन दयाल वरत शीलादिक मरिडत ।
दरसावन शुभ पन्थ तने ए दीय अखरिडत ॥
गुरुही बन्धू जान गुरू भवि दधि के तारी ।
इनकी निन्दा करे जगत में पापाचारी ॥
ते वहु विध के दुख लहैं, जगत विषै नैनों दिखे ।
तातें बुध जन गुरु सदा, आराधो छिन छिन विखे १७॥

दोहा

इस अन्तर नृप मोहवस, आयो तियके पास ।
देखे सब तन कुष्टयुत, अति बिरूप अघरास ॥ १८ ॥

चन्द्रयास

तव नृप मन एम विचारी । संसार भोग दुखकारी ।
ततछिन कानन में जाई । दीक्षा लीनी सुखदाई ॥ १९ ॥
अरु वह पापिन दुख लीना । संसार भ्रमण बहुकीना ।
निश्चयकर मनमें आनो । इहपाप पुन्य फल जानो ॥ २० ॥
संसार चरित्र विचित्रं । ताको देखो तुम मित्रं ।
भगवतकर भाषी वानी । जो स्वर्ग मोक्ष सुखदानी ॥ २१ ॥
ताको हिरदे में धारो । सुख हेत न छिनक विसारो ।
इह पूरन कथा भई है । ब्रह्म नेमीदत्त कही है ॥ २२ ॥

इति श्रीआराधनासारकथा.कोष विषयसुदर्शननृपकी कथा समाप्तम् ।

अथ संसारीजीव दृष्टान्तकथा नं० ३४

मंगलाचरण । अडिल्ल ।

गंभीरा बुध नारनको वरसेतहे । ऐसो श्रीसर्वज्ञदेव सुखहेत

है। तिनको नमि संक्षेप थकी भाषूं कथा। जग जीवन को जो चरित्र दुखमें यथा ॥ १ ॥

चौपाई

कोई पुरुष अटवी में जाय। तहां सिंह देखो दुखदाय।
तासों डरकर भगो तुरन्त। अन्धकूप इक लखो महन्त ॥२॥
तामें लता पकड़ लटकाय। तहां कंठीरव पहुंचो आय।
कूप निकट इक बिटप निहार। ताकी सिंह हलाई डार ॥३॥
हां सरघाको हुतो मुहाल। या तन दुखित कियो तत्काल।
मधुकी बूंद तहां ते पड़ी। इस आननमें तिसही घड़ी ॥ ४ ॥
लता पकड़ राखी इन करे। काटत स्याम स्वेत उंदरे।
नीचे चार सरप मुख फार। तिष्ठे याकी ओर निहार ॥ ५ ॥
तिस अवसर में एक खगिन्द। आकर बचन कहे सुख वृन्द।
हो मानुष मुझ दुःख छुड़ाय। लेहूं निज बिमान बैठाय ॥६॥
तिस बच सुन यह महा अपान। कहतभयो लोभी निज बान।
एक बूंद मधुकी सुखदाय। मुझ मुखमें पड़नेदे भाय ॥ ७ ॥
इतने याही ठौर मँझार। खड़ेरहो विद्याधर सार।
तब खग बच सुन कीने गौन। अब इसकारन हारो कौन ८।
जे विषयनके पास ठगाय। ते हित अनहित नाहिं लखाय।
जैसे कूप विषै जन जान। मधुकी बूंद चाख सुखमान ॥९॥
खग काढ़ैथो इस दुख टार। याने निज हित नाहिं निहार।
तैसेही जन विषयाशक्त। अक्षन सुखमें रहें जुशक्त ॥ १० ॥
तिनको गुरू देवें उपदेश। तोभी चितमे धरे नलेश।
अंधकूप संसार निहार। काल रूपके हरबल धार ॥ ११ ॥
मारवी है परिवर के जीव। चारों गत ये सर्प सदीव। ॥५॥
श्रीगुरु विद्याधर समजान। काढें दुखतें कहि निज = ॥
ाय। १६।

तो पण दुरगति जाको होय। शुभ मारग में लगे न सोय।
याते गुरुबच धारो चित्त। जातें शुभ गत पावो मित्त॥ १३॥

दोहा

तातें इस संसार में, महा कष्ट दातार।
जहर अन्न दुरजन जिसो विषय सुःख जुनिहार १४
ऐसे उरमें जानकर, भगवत भाषित धर्म।
कोड़ो सुख दातार जो, नासें सबही कर्म॥१५॥
ताको निश्चल भावधर, आराधो उर माँहिं।
अपनो चाहो जो भलो, याको विसरो नाहिं॥१६॥
संसारी सुख दुख तनो, दीनो यह दृष्टान्त।
सुनके भविजन चित धरो, करो सुनिज कल्यान।१७।

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय संसारी जीव दृष्टान्त वर्णन कथा समाप्तम्॥ ३५॥

अथ चारुदत्तसेठकी कथा प्रारम्भः ३५

मंगलाचरण॥ सोरठा॥

देवनकर पूजन्त, प्रभुके चरन सरोज।
कविनमि कथा भनन्त, चारुदत बर सेठकी॥१॥

पद्धडी

चम्पापुर नगरी अति रसाल। तहँ सूर सेन नृप है विशाल।
ताके इक सेठ जु भान नाम। तागेह सुभद्रा नाम भाम। २।
सो पुत्र हेत पूजे कुदेव। बहु भाँति करे ताकी जु सेव।
तो भी सुत नाहि भयो सेठभौन। कुश्चित् सुरते लहि सिद्धकौन।३।
[illegible] दिन सुख थान जिनेश धाम। बंदनको पहुंची सेठ बाम।
[illegible] चारन मुनि अति दयाल। बंदे सेठानी नाय भाल।४।
संसारा [illegible] इन दुःख लीन। हो स्वामी तुम जगमें प्रवीन।

मोको तप श्री होवैंक नाह । प्रभु भाषो जो संसय पलाय । ५ ।
इसके वच सुनके ज्ञान चत्त । याके मनकी जानी प्रत्यत्त ॥
तब कह्यो सुता सुनले अवार । मिथ्या मतकी तू सेवटार । ६ ।
तेरे सुत होवेगो महान । विदुसन सुख दाता ज्ञानवान ॥
इह निश्चयकर निज चित्त माहिं । यामें शंसय रंचक जु नाहिं ।७।

दोहा

श्री मुनिवरके बचन सुन, नमन कियो सिर नाय ।
यह सेठानी हर्षयुत, तबही निज गृह आय ॥८॥
ता पीछे भगवत कथित, धर्म गह्यो धर राग ।
केते यक दिनके विषय, पुत्र भयो बड़ भाग ॥९॥
गुण उज्वल धीमान अति, चारुदत्त तिस नाम ।
उत्सव कीनो सेठजी, नगर विषय अभिराम ॥१०॥

चौपाई ।

गुण युत वृद्ध भयो इह बाल । जग मांही है पुन्य रसाल ॥
या करके क्या क्या नहिं होय । दिन दिन मंगल ताघर जोय ।११।
सर्वारथ नामा इस भाम । मित्रवती पुत्री तिस धाम ॥
याकू चारुदत्त बुधवान । ब्याहत भयो तात हट जान ॥१२॥
तो पणभी यह आतम शुद्ध । तिय सेवन में धारे वुद्ध ॥
तब इस मात सुभद्रा जेह । पुत्र मोह बश कीनो येह ॥१३॥
जे जन वेश्यामें थे लीन । तिनके संग पुत्र को कीन ॥
तब ये खोटे संग पसाय । भ्रष्ट भयो सब सुध विसराय ॥१४॥
जे धीमान करे नहिं भूल । खोटी संग पाप को मूल ॥
चारुदत्त गणिका के धाम । द्वादश वर्ष बिताये ताम ।१५।
षोड़ष सहस दीनार मंगाय । देव सन्त सेनाको खुवाय ॥
इक दिन तियके भूषण लाय । गणिकाके ढिग मन हरषाय । १६ ।

दोहा

गणकाकी माता तबै, लख आभूषण येह ।
पुत्री से कहती भई, अवमम वच सुन लेह ॥१७॥
चारुदत्त धन रहित अब, इसते तज तू प्रीत ।
लक्ष्मी जुतते नेह कर, जो हम कुलकी रीत ॥१८॥

चौपाई

ऐसे सुन गणका तिह बार । यासों छोड़ दियो तब प्यार ।
लोक विषय यह है परतच्छ । गणिका निर्धनकों नहिं इच्छ ।१९॥
नगर नायकाको तज धाम । आयो निज गृह जहांथी भाम ॥
ताके आभूषण कछु लेह । मातुल पास गयो कर नेह । २० ।
ताजुत चलो बनजके हेत । देश उलुरबल मांहि सचेत ॥
जहां मृसरावर्त सुनाम । नगर बसतहै अति अभिराम ॥२१॥
तहां कपास खरीदी जाय । चलत भये बोरे भरवाय ॥
तामू लिप्त नगरी को जात । पथमें अगन लगी दुख दात ।२२।
ताकर भस्म भई जु कपास । जब यह चितमें भयो उदास ॥
पुन्य बिना उद्यम नहिं सिद्ध । क्योंकर पावे प्रानी रिद्ध ॥२३॥
चारुदत्त धर चित उद्वेग । मातुल पुछन गयो यह बेग ॥
जहां समुद्रदत्त इक सेठ । बैठो प्रोहन ताके हेठ ॥ २४ ॥
ता सं । पवन द्वीपमें जाय । कष्ठथकी बहु द्रब्य उपाय ॥
आवेथो निज गेह मझार । पाप उदय तिस भयो अपार ॥२५॥
वारिध में प्रोहन फटगई । भई सोई बिधना निर्मई ॥
ऐसे सप्त बार फट पोत । पुन्य बिना किम प्रापत होत ॥२६॥
आप क्चो कछु पुन्य बसाय । हुती जु इसकी पूरन आय ॥
सुरु वच सम इक लकड़ी खण्ड । पाकर वारिध तिरो अखंड ॥
राज महीके पथको चलो । तहँ इक धूरत याको मिलो ।

बिश्नु मित्र परिब्राजक दुष्ट। याको लखि बोलो बच मिष्ट ॥२८॥
मम बच सुन तू पुत्र अवार। अबही चलियो मेरी लार ॥
अटवीमें परबल है कूप। ताको जान रसायन रूप ॥ २९ ॥
सो तोकू मैं देहूं अबै। जाकर पारिद नासे सबै ॥
ताके बच सुन याने कही। बेग तात दिखलाओ सही ॥ ३० ॥
धन लोभी प्राणी जग माहिं। दुरजन पास ठगायो जाहिं ॥
विष्णु मित्र दंडी तिह बार। याको लेय गयो निज लार ॥३१॥
भू अंत यह वह कूप दिखाय। इक तूंबो ईस करमें दाय ॥
छींके में बैठाय उतार। रस्सी पकड़ गयो जहां बार ॥ ३२ ॥
तहां एकथो बहु दुख लीन। ताने याकूं भने सुं कीन ॥
चारुदत्त पूछी तू कौन। क्यों यहां पड़ो कहां तुझ भौन ॥३३॥

दोहा

कूप विषयको मनुष्य तब, बोले बच तिह ठाम।
उज्जैनी नगरी रहूं, धनदत्त वाणिक नाम ॥ ३४ ॥
सो हम संगल द्वीपको, गये करन व्योहार ॥
आवत मो प्रोहण फटो, मैं बच आयो पार ॥३५॥
इस परिब्राजक दुष्टने, एही लोभ दिखाय। ऊपर गमन कर ॥
तूंको देकर कूपमें, सिती वे युद्ध कर। परासि [illegible] ॥
तब मैं तूंबो रस भरो, ल [illegible] [illegible]त [illegible]शों अह
दूजी बर मोहि काढ़ते, काट [illegible] [illegible] बीच ॥३७॥
सो मैं अन्धे कूप में, पड़ो महा दुख लीन
रस पीवत काया गली, होहि प्राण अबछीन ॥३८॥

चारु०

काव्य

षोड़ष स सुनकर चारुदत्त इम गिरा सुनाई।
इक दिन्म्या रस तूंबा इसे अबै देहों नहिं भाई ॥

तब वाने इमि कही अबै जो रस नहिं देगो ।
फेंकूंगो पाखान पड़ो यहां दुःख सहेगो ॥ ३९ ॥
ऐसे सुनकर चारु दत्त कीनी चतुराई ।
तूंबो रसको भरो तास को दियो खिंडाई ॥
सो उन खेंचो बेग फेर रस्सी लटकाई ।
चारु दत्त पाखान तास में दिये बंधाई ॥ ४० ॥

दोहा

आप कूप में जतन ते, तिष्ठो चिंता वान ।
परिव्राजक रस्सा तबे, काढ़ो जुत पाखान ॥ ४१ ॥
जात भयो निज धाम को, ले रस बहु सुखदाय ।
कूप विषय के पुरख ते, चारु दत्त बतलाय ॥ ४२ ॥

पद्धड़ी

हो भ्रात अबै मोको बताय । कोई भी जीवनको है उपाय ॥
जो मोहि बतावे तू अबार । तो मैं तोहि देहूं धर्म सार । ४३ ।
इमि कहकर शुभ नवकार मंत्र । सुर शिवदायक दीनो तुरंत ॥
सन्यास तनी विधको बताय । ताने गह लीनी चित लगाय ।४४।
तब चारुदत्ततें इम कहंत । तुम पुरुष विचक्षण बुद्धिवंत ।
यां रस पी[illegible]दत्त इक सेठ । व[illegible]अबतो गई आवेगी प्रभात ।४५।
ताकी तु[illegible]न द्वीपमें जाय । कष्टकर बाहर निकसो सुजान ॥
ऐसी सुनक[illegible] गेह मझार [illegible] उज्जल चितधारी पवित्त ।४६।
सो गोह पूंछ [illegible] गहाय । बाहर निकसो छिलगई काय ॥
अटवीमें [illegible] दुःख लीन । इच्छा पूर्वक फिर गमनकीन ।४७।

चौपाई

याके तात तनो जो भाय । रुद्रदत्त तहं मिलो सो आय ।
[illegible] भयो मुन पुत्र अबार । तुम चालो अब हमरी लार ।४८।

रतन द्वीप सोहे विख्यात । तहां चलें हम तुम मिल सात ॥
इम कहि धन लोभी अधिकाय। बकरेकी तब पीठ चढ़ाय ।४९।
भू भृत मारग कीनो गौन । भाल लिखो सो मेटे कौन ॥
पहुंचे यह परबतके भाल । बोलो रुद्रदत्त विकराल ॥ ५० ॥
अहो पुत्र तू अब सुन लेह । दोनो अजकी हनिये देह ॥
तिनकी खाल विषय इहिबार। भीतर पैंठे लेय कटार ॥ ५१ ॥
रतन द्वीपते पक्षी आय । पल भक्षी भेरंड इहां आय ॥
सो हमको ले जावे सही । रतन द्वीपकी पटके मही । ५२ ।
ऐसे पापरूप वच कहे । तो पाशी चारुदत्त नहिं गहे ॥
संत जननमें भीड़ जु पड़े । तो पण दुराचार तें डरे । ५३ ।
रुद्रदत्त इह दुष्ट अयान । युग बकरे के नासे प्रान ।
जे अति दुष्ट निर्दयी चित्त । क्या क्या काज करे नहिं नित्त ।५४।
मरतो अज तिन देखो तबै । चारुदत्त इह कीनो जबै ॥
ताको मंत्र दियो नवकार । मरन समाधि करायो सार । ५५
धरमी जनकी है यह रीत । पर उपकार करे यह नीत ॥ ७८
...नों पैठें भां थड़ी । वे बेरुण्ड आय तिस घडी ।
...षय धर चले तुरंत । अंबुध ऊपर गमन कर ॥ ७९ ॥
...रुण्ड पहुंचे आय । इन सेती वे युद्ध करा परसिद्ध ।

दोहा

...त्त की भांथड़ी, तजी भिरुण्ड तुरन्त ...शों अघ कीच ८०
... सो बारिध में गिरमरो, खोटी ...
पापी शुभ गति नहिं लहे, इह, है खुशाल धीमान ।
जातें शुभ कारज करो ...को करी, तिष्टो ताही थान ॥८१॥
चारुद... मुनिसुत जुगम, आये बन्दन हेत ।
...त्तकी सब कथा, तिनते कह जगसेत ॥८२॥

...का मोच उतराय ॥३ ... बाने ...

लगो बिदारन सोय, चारुदत्त निकसो तबै ।
भागो खग इस जोय, चित्त में डर बहु धारि के ॥ ६१ ॥

दोहा

पुन्यवान जन जगत में, लहे सुःख अधिकाय ।
दुख दाता दुरजन जु हैं, हितकारी हो जाय । ६२ ।

पायता

तिस भू भृत सीस खरे हैं । आतापन जोग धरे हैं ।
ऐसे मुनि दीन दयालं । लख चारुदत्त तिह हालं ॥ ६३ ॥
तिनके चरनो ढिग आयो । बहु विधि ते सीस नवायो ॥
मुनि पूरन जो सु कीने । बच कहे महा हित भीने । ६४ ।
हे चारुदत्त गुण मण्डित । तेरे हैं कुशल अखंडित ।
तिन बच सुन हर्ष सुधारो । फिर चारुदत्त उच्चारो ॥ ६५ ॥
हे मुनि में दास तुम्हारो । मोकूं किस ठौर निहारो ।
तब कहत भये मुनि ज्ञानी । तुम सुनो चतुर मम बानी ॥६६
मि अमित खगेश्वर नामा । विजियारध पै मम धामा ।
सन्यार दिन चित हर्ष उपायो । चम्पा नगरी ढिग आयो ॥६७॥
तब चारुद कदली कानन । तिस लखकर फूलो आनन ।
यां रस पीक्र दत्त सिरी थी । ताजुत वां केल करीथी ॥ ६८ ॥
ताकी तुम वन है खग आयो । मोतिय लखि चित्त लुभायो ।
ऐसी सुनकरज गेह भ्णी । मोहि कील दियो दुखरासी ॥ ६९ ॥
सो गोह पूंछ गहाय नी । [illegible] निकस छिलगई काय ॥
अटवीमें प न्या दुःख लीन । इच्छा पूर्वक फिर गमनकीन ।४७।

चौपाई

याके तात तनो जो भाय । रुद्रदत्त तहं मिलो सो आय ।
कहत भयो सुन पुत्र अबार । तुम चालो अब हमरी लार ।४८।

पीस लगा मम तन विषय, तो छोडूं तत्काल।
सो तुम सबही विधि करी, हे सुन्दर गुणमाल ॥ ७२॥

चौपाई

तबही शल्य निकस मम गई। सब शरीरमें साता भई।
जैसे गुरु की गिरा महान। सुनते असत तनी है हान ॥७३॥
फिर मैं अष्टापद गिर जाय। धूमसिंहते जुद्ध कराय।
अपनी तिय लायो छुड़वाय। फिर तुझपै आयो हरषाय ॥७४॥
मैं तुझ थुतकर कही जु मित्त। बर मांगो जो चाहो चित्त।
तुमने कहि कछु मांगूं नाहिं। सुखी भयो तुमदर्शन पाहि ७५
सत्पुरुषनकी है यह बान। कर उपकार न मांगे दान।
तिस पीछे मैं गयो तुरंत। अपने धाम विषै हरषन्त ॥ ७६ ॥
दक्षण श्रेणी में शुभ ठाम। शिवमंदिर नगरी अभिराम।
तामें राज कियो मैं बीर। बहुत दिनन तक साहस धीर ७७
फिर मेरे उपजी यह चित्त। है सबही संसार अनित्त।
तब निज सुत लीने बुलवाय। नाम सिंह जस ग्रीव वराय७८
दोनोंको देकर सब राज। मैं आयो बनमें तप काज।
जो संसार उतारो पार। ऐसी जिनवर दीक्षा धार ॥ ७९ ॥
तप बलपाई चारन ऋधि। गगन गामिनी जो परसिद्ध।
पब तिष्ठूं इस परबत बीच। ध्यान धार नाशों अघ कीच ८०

दोहा

इह वृतान्त सुन सेठ सुत, है खुशाल धीमान।
बहु थुति मुनिवर की करी, तिष्टो ताही थान ॥८१॥
ताही छिन मुनिसुत जुगम, आये वन्दम हेत।
चारुदत्तकी सब कथा, तिनते कह जगसेत ॥८२॥

काव्य

अरु ताहीछिन मांहिं एक चरसुर तहँ आयो ।
चारुदत्तके चरन कमलको शीश नवायो ॥
सेठ पुत्र तब कही सुनो चरसुर गुनधारी ।
नमनकियो मोहि आय कहो यह कौन बिचारी ८३
विद्यमान गुरु पास होत तुम कौनहि लायक ।
तब चतुरोत्तम देव कहे सुनिये मुझ बायक ॥
मोको बकरो जान हुतो परबत पै स्वामी ।
रुद्रदत्तने प्राण हने मैं दुख तहँ पामी ॥ ८४ ॥
तुम दीनों नवकार मंत्र सन्यास करायो ।
ता प्रभाव कर प्रथम स्वर्ग में सुरपद पायो ॥
इस कारनते आन चरन मैं बन्दे थारे ।
शुभ मारग दरशाय दियो तुम गुरू हमारे ॥ ८५ ॥
ऐसे कहकर त्रिदश धरम अनुराग धार चित ।
वस्त्राभूषन लाय चारदत को पूजो नित ॥
फेर नमनकर स्वर्ग गयो वह तिसही बारी ।
सुर असुरन करि पूज होय जे पर उपकारी ॥ ८६ ॥

दोहा

तिसपीछे वे मुनि तनुज, गुरुको सीस नवाय ।
बनिक पुत्रको संगले. चम्पा नगरी आय ॥ ८७ ॥
रतनादिक बहु विधि दिये चारुदत्तको सार ।
नमस्कार करके तबै, गये सुनिज आगार ॥ ८८ ॥

चौपाई

जे प्रानी हैं पुन्य निधान । तिनको दुर्लभ कुछ नहिं जान ।
सबही सुल्लभ सुखदाय । तातें धरमकरो अधिकाय ॥ ८९ ॥

चार प्रकार दान नित करो । श्री जिनपूजनमें चित धरो ।
वरत शील कल्याण निमित्त । बुद्धिवान मनधारे नित्त ॥९०॥
भान सेठ शुभ जाको तात । भली सुभद्रा ताकी मात ।
तिनके सुतको आवत ज्ञान । भये खुशी पुरजन अधिकान ९१
चारुदत्त निज पुन्य बसाय । भोगे भोग महा सुखदाय ।
श्रीजिन भाषितधर्म अराधि । कियो विचार अब तजोउपाधि ९२
सुन्दर नामा सुत बुध धार । ताको निज पद दे तिहबार ।
आप ताकी दीक्षा तत्काल । कर सन्यास मरण गुणमाल ९३॥
शल्य रहित है मन वच काय । स्वर्गलोकमें बहुरि थपाय ।
नाना विधिके तहँ शुभ भोग । भोगतभये पंचेन्द्री जोग ॥९४॥
मेरु सुदर्शन आदिक धाम । तहँ यात्रा यह करि ललाम ।
अरु तीर्थंकर देव महान । सर्मो शरनजुत ज्ञान निधान ।९५।
तिनकी बानी सुधा समान । ताको यह सुर करे सुपान ।
इत्यादिक है धर्म सुरक्त । सुखतें तिष्ठे जिनवर भक्त ॥ ९६ ॥

सवैया इकतीसा

भगवत धरम सार संतजन हियें धार ताको करो बार बार हितकारी जान कें । देव इन्द्रचन्द्र नागेन्द्र खगधीश नर सेवे इसहीको सब भक्ति हिये ठानके ॥ महा जो पवित्र येह स्वर्ग मोक्ष सुखदेह याहीसों करो सनेह सर्म गेह मानके । सोई धर्म नित प्रति मंगलकरो सदीव ब्रह्मनेमीदत्त कही कथा आन भानके ।

दोहा

चारुदत्त वर सेठकी, कही कथा इह सार ।
भव्य जीव बांचो सुनो, करो सु पर उपकार ॥ ९९ ॥

इतिश्री आराधनासार कथाकोष विषय चारुदत्तसेठकी कथा समाप्तम् ।

अथ पारासर तपस्वीकी कथा प्रा० ३६

मंगलाचरण सोरठा ।

भगवत को सिरनाय, कहूं कथा लौकीक की ।
सुमन सुनो चितलाय, पारासर तापस तनी ॥ १ ॥

चौपाई

गजपुर नगर विषै तिस बास । गंगज भट धींवर अघरास ।
डोर जाल जु गंगा आन । सफरी पकड़ि हने तिन प्रान । २ ।
इक दिन मच्छी कूख मझार । कन्या निकसी रूप अपार ॥
तिस बपुमें दुरगंध जु आत । सत्यवती तिस नाम कहात ।
मिथ्या शास्त्र विषै जो कही । सो सब झूंठ जान यह सही ॥
इक दिन धींवर घरके हेत । चलो सुता तज नाव समेत । ४ ।
तहं तापसि पारासर आय । मारग देख दुखी तिस काय ॥
नदी पार जाने के काज । कन्या से बोलो तज लाज ॥ ५ ॥
हे सुंदरि मोहि सरिता तीर । कीजे बेग न लागे ढीर ।
तब वाने याकू बैठाय । नाव चलाई देर न लाय ॥ ६ ॥
तब कन्याको देखो अंग । पापी के तन जगो अनंग ॥
कहत भयो सुन्दर सुनि सार । मोकूं कीजे अंगीकार ॥ ७ ॥
सत्यवती बोली मत मन्द । नीच जात मैं तन दुरगन्ध ॥
मुझ स्पर्श कीजे नहि नाथ । तुमहो तापस जग विख्यात ।८।
नित्य करो गंगा असनान । तर्पन आदिक सकल विधान ॥
याते मुझ मन डर अधिकाय । पीप लगे सो कहो न जाय ।९।
तब पापी पारासर नाम । अपनी विद्या ते तिस ठाम ॥
ताके तनकी हर दुर्गन्ध । फल सादृश वपु करी सुगन्ध ।१०।
फिर नारि बोली कर जोर । जन देखत हैं चारों ओर ।
काम अंध तब धूंओ कीन । वेदी रचकर व्याहसो लीन ।११।

काम केल कीनी तासंग । सुखी भयो बहु सेय अनंग ॥
ताही छिन इक पुत्र सुभयो । व्यास नाम ताको निरमयो ।१२।
मूछ जनेऊ जटा समेत । भयो बादकी लिये सुकेत ॥
करी ताततें चरचा घनी । ताको जीत बुद्ध तिस हनी । १३ ।
अन्य मती इम वर्णन करें । जिन मत वाले चेष्टा धरें ॥
ज्ञान नेत्र जे सम्यक वान । तिनके किम आवै सरधान ॥१४॥
जैसे मद पीकर नर कोय । बिना लाज बोलत है सोय ॥
तैसे कहें कुवादी बैन । पोषें असत सदा दिन रैन ॥ १५ ॥
ताको सुनकर बिदुषन जेह । चित मत लाओ तजो सनेह ॥
करो सदा गुणिजनको संग । भगवत मतको गहो अभंग ।१६।
जिन भाषित तिन सुनो पुरान। बुद्ध पवित्र करो अधिकान ॥
इह पारासर तापसि तनी । कथा कही जिन अनमत भनी ।१७।

इति श्री आराधनासार कथाकोष विषय पारासर तापसिकी लौकिक कथा समाप्तम् ॥

अथ शातक मुनितें रुद्रके उत्पन्न होनेकी

कथा प्रारम्भः नं० ३७

मंगलाचरण ॥ अडिल्ल ॥

केवल ज्ञान बिशाल नैत्र धारक सही ।
तिनको करूं प्रणाम सीस नाऊं मही ॥
रुद्र सत्व की तनी कथा सुखकार जी ।
बरनत हूं चित लाय सूत्र अनुसार जी ॥१॥

पद्धड़ी ।

रमणीक देश गन्धार नाम । तहँ नगर महेश्वर पुन्य धाम ॥
ताको सत्यंधर है नरेश । तिस नारि सतवती नाम वेश ॥ २ ॥
तिन दोनोंके संयोग पाय । सात्विक नामा सुत भयो आय ॥